

बि दे ह बिदेह *Videha* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०१ म अंक ०१ मार्च २०१२



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,
VIDEHA

माथिलि संस्कृतम् ISSN 2229-547X

I SSN 2229-547X

VI DEHA

बिदेह १०१ म अंक ०१ मार्च २०१२ (वर्ष ५ मास ५१



अंक १०१)

बि दे ह बिदेह *Videha*

बिदेह <http://www.videha.co.in> बिदेह प्रथम

मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st*

Maithili Fortnightly ejournal नर

अंक देखरौक लेव पुग सभके बिदेह कए

देख । Always refresh the pages for

viewing new issue of VI DEHA. Read

in your own script

Roman(Eng)Gujarati Bangla Oriya Gur

mukhi Telugu Tamil Kannada Malayalam

Hindi

ई अंकमे अछि:-



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,
547X VIDEHA

मानवविज्ञान संस्कृतम् ISSN 2229-

१. संपादकीय संदेश

२. गद्य



२.१. अमित मिश्र, कथा-मोह



२.२. उमप्रकाश सा- कथा-
गरीब आर्थिक राधा



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,

मासिक बिदेह ISSN 2229-547X

VIDEHA



२.३. नरीन रुमाव "आशि"-रैष्टीक
जय



२.४. डमेश मण्डव- बिदेह नाँ
उत्तर- 2012



२.५. डा. बमानन्द या 'बमण'- अन्नदा

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०१ म अंक ०१ मार्च



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,
547X VIDEHA

मानवीय संस्कृतम् ISSN 2229-



२.७. योगानन्द सा. ग्रामजीवनक सत्यक
संरालक :: अफगिनी



२.१. शिरुमार सा 'टैवर'- मैथिली कथा
साहित्यक विकासमे बाजकमक योगदान

३. पद्य

बि एन ए विदेह *Videha* विदेह विदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* विदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* विदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal*



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,
VIDEHA

मासिक संस्कृतम्, ISSN 2229-547X



३.१.१ काशिनी काशायनी करी
सा



३.२.१ उमप्रकाश सा-करी गजव
गीत-करिता

बिदेह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine बिदेह* प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०१ म अंक ०१ मार्च



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,
547X VIDEHA

मानवविज्ञान संस्कृतम् ISSN 2229-



३.३.१.

बाजुदेव मण्डल २.



अमित मिश्र-



गजल -करिता ३.

जगदानंद या मनू करिता

सभसँ आग्र आग्र छी



३.४.१.

सदीप कुमार साहू- भक्तजोगनी/



रसंत पंचमीर.

डा. अरुण कुमार सिंह

बिदेह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०१ म अंक ०१ मार्च २०१२



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,
VIDEHA

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X



३. बामरिनास साह ४.
उमेश पासवान



३.३.१. जगदीश प्रसाद मण्डल, चंदन कुमार



सा ३. नन्द रिनास बाय

बि दे ह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पाल्मिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पाल्मिक ई पत्रिका बिदेह १०१ म अंक ०१ मार्च



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,
547X VIDEHA

मानुषिंह सँकलान् ISSN 2229-



३.७.१.

नाबायण ना २.



निशीन्त ना



३.१९.

प्रीति प्रिया ना २.



परन



रुमाव साह ३.

डा. शशिधर रुमाव



३.१.१. बमेश मण्डल मोन कमार ना



‘बमेश’

किशन कारीगर



कपिलेश्वर

बाउत



४. मिथिला कला-संगीत बाजनाथ मिश्र (चित्रमय



मिथिला) . डमेश मण्डल (मिथिलाक रनस्पति/
मिथिलाक जीर-जल/ मिथिलाक जिनगी)

—



५. गद्य-पद्य भावना: मंगलेश डरवान- हिन्दीसँ



मैथिली खनराद रिनीत उपेन



३. रावना द्यते— डा. शशिधर कुमार “रिदेह”—
कानि दे हमरो खेनौना (रावगीत)

—
१. भाषापक बचना-लेखन – [मानक मैथिली] [रिदेहक
मैथिली-अंग्रेजी आ अंग्रेजी मैथिली क्लेब
(अष्टबनेष्टप पछि रैव सर्च-डिक्शनरी) एम.एस.
एस.क्यू.एल. सर्वर आधारित –Based on ms-sql
server Maithili-English and
English-Maithili Dictionary.]

रिदेह ई-पत्रिकाक सब्छा प्रवान अंक (ब्रैल,
तिरहुता आ देवनागरी मे) पी.डी.एफ. डाउनलोडक
लेव नीचाँक लिंकपव उपलब्ध अछि । All the old
issues of Videha e journal (in
Braille, Tirhuta and Devanagari



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

VIDEHA

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

versions) are available for pdf download at the following link.

बिदेह बिदेह-पत्रिका सभल प्रबान अंक ब्रैल, तिरहुता
आ देरनागरी कपमे Videha ejournal's
all old issues in Braille Tirhuta
and Devanagari versions

बिदेह बिदेह-पत्रिका पहिल ३० अंक

बिदेह बिदेह-पत्रिका ३०म स आगाँ अंक



बिदेह आब.एस.एस.हीड ।



"बिदेह" बिदेह-पत्रिका बिदेह-पत्रिका प्राप्त कर ।



अपन मित्रके बिदेहक बिषयमे सूचित कर ।



↑ बिदेह आब.एस.एस.हीड एनीमेटेबल अपन
साथे/ ब्रैलपत्र नगाडु ।



ब्रैल "लेखाड" पत्र "एड गाडजे" मे "हीड"
सेलेक्ट कर "हीड यू.आब.एन." मे

बिदेह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine बिदेह* प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०१ म अंक ०१ मार्च



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)
547X VIDEHA

मानवसिंह सार्वभौम ISSN 2229-

<http://www.videha.co.in/index.xml> ठाँगप

केनासँ सेहो बिदेह कीड प्राप्त कए सकैत छी ।

गूगल बीडब्लेस पठराँ नैन

<http://reader.google.com> पब जा कऽ Add

a Subscription रैठन किरक कक आ खाली

स्थानमे <http://www.videha.co.in/index.xml>

पेसुठ कक आ Add रैठन दराँड ।



[Join official Videha facebook group.](#)



[Join Videha google groups](#)



बिदेह रेडियो: मैथिली कथा-कविता आदिक
पहिल पोडकास्ट साँगुठ

<http://videha123radio.wordpress.com/>



[Videha Radio](#)



मैथिली देरनागरी रा मिथिलाक्षरमे नहि देखि/ लिखि
पारि बहल छी, (cannot see/write
Maithili in Devanagari /
Mthilakshara follow links below or
contact at ggajendra@videha.com) उ
एहि हेतु नीचाँक लिंक सभ पर जाउ । संगहि
रिदेहक सुँभ मैथिली भाषापार/ बचना लेखनक नर-
प्रबान् अंक पढ़ू ।
<http://devanaagarii.net/>

<http://kaulonline.com/uninagari/> (एतए
रौन्नामे आँनलाइन देरनागरी ठाँप कक, रौन्नासँ कापी
कक आ रड डाक्यूमेन्टमे पेस्ट कए रड फाइलकेँ
सेर कक । विशेष जानकारीक लेल
ggajendra@videha.com पर सम्पर्क
कक ।)(Use Firefox 4.0 (from
WWW.MOZILLA.COM)/ Opera/ Safari /
Internet Explorer 8.0/ Flock 2.0/
Google Chrome for best view of
'Videha' Maithili e-journal at
<http://www.videha.co.in/> .)

बिदेह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine बिदेह* प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *बिदेह* १०१ म अंक ०१ मार्च



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१), **मानवीय संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA**

Go to the link below for download of old issues of VIDEHA Maithili e magazine in .pdf format and Maithili Audio/ Video/ Book/ paintings/ photo files. बिदेहक प्रबन्ध अंक आ ऑडियो/ रीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ फोटो सङ्ग्रह सब (उच्चारण, रीड स्वयं सब आ दूरस्थित मंत्र सहित) डाउनलोड करवाक हेतु नीचाँक लिंक पब जाऊ ।

VIDEHA ARCHIVE बिदेह आर्काइव



भारतीय डाक विभाग द्वारा जारी करि, नाष्टककार आ धर्मशास्त्री विद्यापतिक स्थापना । भारत आ नेपालक माझमे पसबन मिथिलाक धवती प्राचीन काविसँ महान प्रकृष ओ महिला लोकनिक कर्मभूमि बहल अछि । मिथिलाक महान प्रकृष ओ महिला लोकनिक चित्र मिथिला बने मे देखु ।



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

माधुसूदन चन्द्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA



गौरी-शैलक पातरणि कारक मुर्ति, एहिमे
मिथिलासुबमे (१२०० र्ष पुरक) अभिनोथ थकित
थकित । मिथिलाक भावत आ नेपालक माईमे पसबन
एहि तबक थकित प्राचीन आ नर स्थापन, चित्र,
अभिनोथ आ मुर्तिकारक हेतु देखु मिथिलाक खोज

मिथिला, मैथिल आ मैथिलीसँ सम्बन्धित सूचना, सम्पर्क,
अनुसन्धान सर्गति बिदेहक सर्च-गंजन आ नूतन सर्गि आ
मिथिला, मैथिल आ मैथिलीसँ सम्बन्धित रेसर्चागठ सभक
समग्र संकलनक लेल देखु बिदेह सूचना सर्पक
अनुसन्धान

बिदेह जानबुझक डिस्कसन फोवमपब जाडु ।

“मैथिल आब मिथिला” (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय
जानबुझ) पब जाडु ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

547X VIDEHA

मानक ISSN 2229-

ई रैव मुन प्रबन्ध (२०१२) [साहित्य अकादेमी, दिल्ली]क लेल अहाँक नजरिमे कोन मुन मैथिली पोथी उपहास छल ?

Thank you for voting !

श्री बाजुदेव मन्त्रक “अन्नबा” (कविता-संग्रह)

13.82 %

श्री रैचन ठाकुरक “रैलीक अपमान आ छीनबदेरी” (दुष्टा नाटक) 9.82 %

श्रीमती आशि मिश्रक “उचाठ” (उपन्यास) 6.18 %

श्रीमती पद्मा नाक “अन्नभूति” (कथा संग्रह) 5.82 %

श्री उदय नारायण सिंह “नटकेता”क “नो एन्ट्री:मा प्रवेश (नाटक) 5.82 %

श्री सुभाष चन्द्र यादवक “रैलेत रिगडित” (कथा-संग्रह) 5.82 %

श्रीमती रीणा कर्ण- भारनाक अष्टिपञ्चर (कविता संग्रह) 5.82 %



श्रीमती शैलिकान्ता रमक “किन्तु-किन्तु जीरन
(आमेकथा) 7.64%

श्रीमती रिता बानीक “भाग रौ आ रौचन्दा” (दूठा
नाटक) 6.55%

श्री महाप्रकाश-सर्ग समय के (करिता संग्रह)
5.82%

श्री तारानन्द रियोगी- प्रलय बहन्दा (करिता-संग्रह)
5.82%

श्री महेंद्र मणियाक “दुतहा घैर” (नाटक)
6.91%

श्रीमती नीता नाक “देशी-कान” (कथा-संग्रह)
6.55%

श्री सिधायाम ना “सबस”क थोड़ै आगि थोड़ै पानि
(गजल संग्रह) 7.27%

Other : 0.36%



ई रेव रौत साहित्य प्रवक्ता(२०१२) [साहित्य अकादेमी, दिल्लीक लेल अहाँक नजबिमे कोन मूल मैथिली पोथी उपहाज अछि ?

श्री जगदीश प्रसाद मन्दन जीक “तरेगन”(रौत-प्रेवक कथा संग्रह) 54.17%

श्री जीरकांत - थिथिबक रिखवि 25%

श्री मूवलीधर साक “पितृपितृ गाछ 18.75%

Other : 2.08%

ई रेव हारा प्रवक्ता(२०१२)[साहित्य अकादेमी, दिल्लीक लेल अहाँक नजबिमे कोन कोन लेखक उपहाज छथि ?

Thank you for voting !



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

माथिलि बिदेह **ISSN 2229-547X**

VIDEHA

श्रीमती ज्ञाति स्मृत चोपवीक “अर्चिस” (करिता
संग्रह) 27.38 %

श्री रिनीत उपेवक “हम श्रुतेत छी” (करिता संग्रह)
7.14 %

श्रीमती कामिनीक “समयसँ सम्राद करैत”, (करिता
संग्रह) 5.95 %

श्री प्ररीण काशुपक “रिषदन्ती रवमान कावक बति”
(करिता संग्रह) 5.95 %

श्री आशीष अनचिन्हावक “अनचिन्हाव आखब”(गजल
संग्रह) 20.24 %

श्री अकाल सौवभक “एतरेँ छी नहि” (करिता
संग्रह) 5.95 %

श्री दिनीप रुमाव ना “वृन्क जगने बहरै” (करिता
संग्रह) 7.14 %

श्री आदि यायारवक “भोखब पैसिनसँ लिखन” (कथा
संग्रह) 5.95 %



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

547X VIDEHA

मानकीय संख्या ISSN 2229-

श्री उमेश मल्लिक “निश्चयी” (कविता संग्रह)

11.9%

Other : 2.38%

ई रेब अनुवाद प्रस्कार (२०१३) [साहित्य अकादेमी,
दिल्लीक लेन अहाँक नजबिमे के उपहार छथि ?

Thank you for voting !

श्री नरेश कुमार रिकर “ययाति” (मवाँठी उपन्यास श्री
रिष्णु सखाराम खल्लिकर) 35.71%

श्री महेंद्र नावायण राम “कार्मेनीन” (कौकली उपन्यास
श्री दामोदर मारजो) 12.86 %

श्री देवेन्द्र मा “अनुभर”(रौंछा उपन्यास श्री दिवान्द्र
पारित) 14.29 %



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मासिक चन्द्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

श्रीमती मेनका मल्लिक "देशी आ अग्र करिता सभ"
(नेपालीक अनुवाद मूल- बेमिका थापा) 11.43%

श्री छत्रु कुमार कथप आ श्रीमती शशिबारा- मैथिली
गीतगौरिन्द (जयदेव संस्कृत) 11.43%

श्री बामनाबायण सिंह "मनाहिन" (श्री तकसी शिरशेकव
पिन्नीक मनयाली उपन्यास) 12.86%

Other : 1.43%

हेतु प्रवक्तव्य-समग्र योगदान २०१२-१३ : समानांतर
साहित्य अकादेमी, दिल्ली

Thank you for voting !

श्री बाजनन्दन तारा दास 56.86%

श्री डा. अमरेंद्र 17.65%

श्री चन्द्रभानु सिंह 23.53%



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,
547X **VIDEHA**

मानवविज्ञान संस्कृतम् ISSN 2229-

Other : 1.96%

१. सम्पादकीय



(सम्पादकीय १०१ म अंक शिर कृपाव न्या
'ष्टिन्नु', सहायक सम्पादक, बिदेह)

मैथिली आर्य परिवार समूहक पहिल भाषा थिक
जेकवापव जातिरादि कर्मक लागत अछि । ई भाषाकेँ
ब्राह्मणरादी प्रवृत्तिसेँ नाँपि देसक विरोध आरम्भक
भइ गेल । जखन बानुजी री.पी.एस.सी.सँ एकटा राहब
केहन तँ मात्र किछु चानन-छोपधारी धरि एकटा विरोध
सीमित रहि गेल छल । आ प्रश्न विचारणीय अछि जे
रिक्त पासवान रिक्तगम, महेंद्र नावायण बाम, प्रा.
वरिन्द्र चौधरी आ डा. मोतीलाल यादव सन किछु
विद्वत्केँ छोटि आन जातिक लोकक मध्य मैथिलीक



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

VIDEHA

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

प्रति दर्द किएक नै भेल छल । कोना हेरौ
कवितए ? जखन साहित्य अकादेमी सनाहकाव रौडिक
अध्यक्ष पतिने डा. वामदेव या तकर रौद हुनक
सम्बन्ध चन्द्रनाथ मिश्र 'अम्बक' पश्चात वामदेव याक
सम्बन्ध रिद्वानाथ या रिदित, तखन खान जातिके के
कहए ब्रह्मणोमे विरोधाभास सभर डिक ।

मान महबजक मिमर्जा खेतए होली । साहित्य
अकादेमी देशिक जनताक उपर लागल कब (ष्टैक्स)सँ
चलेत छल । भातसँ सन्ना भावी, मिथिला मे ब्रह्मणक
आरादी मात्र पाच-सँ-छठ प्रतिशत आ संपूर्ण
मैथिलीपब हुनके अधिकार अछिमे किछ पागपावी ई
साहित्यिक मंचके पजियौने छथि । मैथिली गाम मे
बहिनिहार आम लोकक भाषा थिक । जखन मिथिला
राज्यक रौत होगत छल तँ रैगुसबाय के कहए हम
सभ रौका धरि चलि जागत छी मूदा जौ अधिकारक
गप तँ समसतीपब आ मधेपब आदिक ब्रह्मणो सभ
भदिसक मानल जागत छथि, ओना भदिसक ब्रह्मणो मे
सँ किछ साहित्यकार जेना स्वरेन्द्र या 'स्वमन',
मार्कण्डेय प्रसादी, कीर्ति नारायण मिश्र सन किछ लोक
सम्मानित कएल गेल छथि किएक तँ ओ सभ दबडंगा
आ पठनाक रौच नूतनेत उतबरेबिया संस्कारिक लोकक



बिदुषक बहनाह ।

ई बैबक साहित्य अकादेमी प्रबस्काव तँ निर्नज्जताक
पवाकाम्ठाकेँ पाव क२ देलक । रतमान मैथिलीक
सरश्रेष्ठ गद्यकाव जगदीश प्रसाद मंडलक नाँ
निर्णयिक मंडल धरि नै पहुँचल । उदय नावायण सिंह
'नचिकेत' आ सुभाष चन्द्र यादवपब भावी पढ़ि
गेलाह चन्द्रनाथ मिश्र अमरक चेला उदयचन्द्र या
बिनोद, कहिया धरि एना चलैत बहत ?

गतती पद्धातिक साहित्यकाव अथरा दडिनाहा ब्रौह्मण
साहित्यकारो सरहक छन्हि । अपने पाग पहिब गु
रिसवि जाग छथि जे जग समाजक ओ प्रतिनिधित्व
करैत छथिन ओ कहियो हुनका माह नै कबतनि ।
पाग मात्र ब्रौह्मण आ कर्ण-कायस्थ पबिरावक सकल
मंगलकार्यमे पहिबल जागत अछि । आन जातिक
मध्य एकब कोनो प्रयोजन रा पबपवा नै । तखन
मिथिलाक सबैठा साहित्यिक समारोहमे पाग पहिबेबाक
प्रथाकेँ की मानल जाए ? चाहुँकाव ब्रौह्मण साहित्यकाव
ई प्रथा द्वारा की प्रमाणित कबरै छथि जे
मैथिली मात्र ब्रौह्मणोष्ठा केव भाषा थिक ? गतती
किछुए लोक करैत अछि आ दोष सम्पूर्ण समाजपब



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,
VIDEHA

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

मठन जागत अछि । झाँझपोमे स्त्र. गोपातजी न्या
गोपेशी, स्त्र. कारीकान्त न्या 'बूच', स्त्र. चतुवानन
मिश्री, श्री सत्य नावायण न्या, डा. बूझिनाथ मिश्री, डा.
रिद्धापति न्या आ स्त्र. प्रा. वामधुपान चौधरी 'बाकेशी'
सन बचनाकावक सर्ग न्याय नै भेल किअक तँ ओ सभ
ई चर्चाकाव मचक सदस्य नै छलथि रा छथि । तँए
समन्तरयादी झाँझ साहित्यकावकेँ ई गिबगिष्टिया लोक
सभसँ मैथिलीक बम्का कबए पड़तनि । हम साहित्यमे
आबम्काक समर्थन नै करैत छी अदा सरैक प्रति
सम्यक भार बखरैक चाही । रिगत 10 समारोहसँ
सगब बाति दीप जवयमे मैथिलीक साम्यरादी प्रांजन
साहित्यकाव जगदीश प्रसाद मंडन भाग न२ बहन
छथि अदा गोधुनि रैनामे प्राबम्भ होमएरैना ई
कथागोष्ठीमे हुनका कथा-पाठक आग धबि बातिक 1
रैजेसँ पहिने अरसब नै देल जागत अछि ।

करि बाजदेर मंडनकेँ अनुरादक कोनो एसागनमेष्ट नै
भेष्टननि । हम रिश्र्मासक सर्ग कहैत छी जे बाजदेर
मंडन आ दुर्गानंद मंडन खुशीलान न्यासँ श्रेष्ठ अनुरादक
छथि । डा. बरीन्द्र चौधरी मोहन भावद्वारसँ श्रेष्ठ
आलेख लिखैत छथि । रैचन ठाकुर आ डा. उदय ना.
सिंह नचिकेत महेन्द्र मरगियासँ नीक नाष्टककाव



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)
547X VIDEHA

मानवविज्ञान संस्कृतम् ISSN 2229-

छथि । डा. शैलानिका रमा उषाकिवण खानसँ श्रेष्ठ
महिना बचनाकाब छथि ।

आनंद कमार नार्के जे सम्मान देन गेल तेकर हम
समर्थन करैत छी । पर्वत जौं ओ आनंद पासवान रा
आनंद मंडल बहितिथि तखन ए सँभर छल ?

जौं आधुनिक पीढ़ीक लोक ई क-रैरसंथाक विरोध
नै करैत तँ सँभर अछि जे हमर सर्गीय पिता
कालीकांत मा 'बूच'क करिनाक ए पाँति सब प्रतीत
भै जाए- “दिरस निकष्ट ओ आरि बहल अछि तेही
मैथिली सँभसँ कात... । ”

ओना ई ज्ञानपरादी सोचरैना किछु संस्थाक सम्यक
कार्यक सवाहना कवरै सेहो आरंभिक । जेना मिथिला
सांस्कृतिक परिषद जमशेदपुरक वार्षिक कलेक्टिवमे
विद्युत्पतिक सर्ग-सर्ग लोकदेर सतहेसक फोछे देखि
नीक लागल । ई लेल प्रा. अशोक अरिचन आ प्रा.
बरीन्द्र चौधरीक सर्ग-सर्ग श्री एस.एन. ठाकुर आ
सम्पूर्ण परिषद् धन्यवादक पात्र छथि । ई प्रकारक
समन्वयपरादी सोचकेँ शीतल: नमन ।

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका बिदेह १०१ म अंक ०१ मार्च २०१२



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,
VIDEHA

माथिलि सङ्ग्रह, ISSN 2229-547X



(सम्पादकीय १०१ म अंक शिर कमार बा
'स्टैन्ड', सहायक सम्पादक, बिदेह)



गजेन्द्र ठाकुर

ggajendra@videha.com

http://www.maithililekhsangh.com/2010/07/blog-post_3709.html

२. गद्य

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०१ म अंक ०१ मार्च



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,
547X VIDEHA

मानक संख्या ISSN 2229-



२.१. अमित मिश्र कथा-मोड़



२.२. ओमप्रकाश ना- कथा-
गहिरा आँखि रत्ना



२.३. नरीन रुमाव "आशि"-रेणुका
जय



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,
VIDEHA

मासिक संस्कृत, ISSN 2229-547X



२.४. डमेशे मण्डव- बिदेह नाथ
उत्तर- 2012



२.३. डा. बमानन्द या 'बमण'- अन्नराद



२.३. योगानन्द या, ग्रामजीवनक सत्यक
संस्कृत :: अक्षरिणी



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,
547X VIDEHA

मानवविज्ञान संस्कृतम् ISSN 2229-



२.१. शिरक्याब सा 'ष्टव' - मैथिली कथा साहित्यिक विकासमे बाजकमक योगदान



अमित मिश्र , गाम-कवियन, जिला -
समस्तीपुर

कथा -- * मोड *

मिथिलाक लोक जहिना दही-छूड । माछ ,मथान आ
पान कए प्रेमी होग छथि ओहिना गप्प-सडक्का कए
सेहो रडका प्रेमी होग छथि । जँ दू-चाबि ठा
संगी एकठाम जूठेना आ गप्प नै भेल ,एहन भऽ नै
सकेँ सै । देशे-रिदेशे , घब-दूआबि , क ब-
कूँमेती , रियाह-द्विवागमन , फिल्म-बाजनीति रूतुतो
बास शिर्षक छै ,गप्प कबरौक नेल । गाम-घब मे
ताशिक चाबि-चाबि ठा चौकरी एक्क ठाम भेटैत आ
उहो ठाम गप्पक स्वर्ग भेटै छै । खुदवा मे
गप्प तऽ हष्ट-रजाव , ट्रेन-रस , गाडी-रिबडी



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मासिक चरित्र ISSN 2229-547X

VIDEHA

, रौध-रैन आदि जगह भेटैरै करै छै झुदा थोक मे
गप्पक सरोरै रैन छै , चाहक दोकान पव ।

हमब गामक चौक पव एकठै चाहक दोकान छै ,
सुरेन्द्र कए चाहक दोकान । साँस कऽ गामक सर
रौध-रौझा ओही दोकान पव जूठै छथि आ चाहक
चुस्की संग हूठै छै गप्पक हठका । हमब एकठै
हबीक मे कक्का छथि , मधु कक्का , जेहन नाम तेहने
काम , झूठ सँ सदिखन मधु चुरै छैन । मधु कक्का
कए गप्प रौध नीक होग छै , हिनकर गप्प सुनरौक
नेन साँस कऽ चाहक दोकान पव भीड जूठै रैन छै
। चाह संग रिक्कुठ , समोसा , रिझी , जीलेरी
सेहो रौध रिक्का छै , गएह काबल छै जे सुरेन्द्र
मधु कक्का कए छि मे चाह , रिक्कुठ आ कहियो-
कहियो जीलेरी , समोसा दऽ छै । आ एकब रौदना
मे कक्का नर-नर गप्प सुनरौ छथिन । गप्प आ मधु
कक्का कए महिमा अपवर्पाव छै जेतक रौखान कवरै
ततेक कम झुदा एहि ठाम कोनो गप्प नहि एकठै
घटना रौता बहन छी ।

एक रौब हम अपन किछ दौसु
संगे ओहि दोकान पव नाश्ता कवरौक नेन गेलौ



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)
547X VIDEHA

मानवविज्ञान संस्कृतम् ISSN 2229-

। दोकान पब पएरो बाथे कए जगह नै छले ,
किछ गेष्टी तानू रौच पब रैसन छनथिन आ जिनका
जगह नहि भेटैतनि से ठाव छनथिन , सरहक रौच
मे डुँचगब कसी पब मधु कक्का रैसन छनथिन । हम
कक्का कए देखलौ तऽ जा कऽ गोब लागनियनि ।
हमरा देख कक्का राजराह , रौखा , दबलंगा सँ गाम
कहिया एतहो । "

"कक्का कान्हि साँस मे एलौ " हम सामने मे ठाव
होगत कहनयनि ।

हमरा दिशि कनेक कार देखला कए राँद कहनथिन ,
रौखा , रियाह भऽ गेलऽ की ? ,"

हम अकचका गेलौ जे कक्का एहन प्रश्न किएक पुछि
बहर छथि । हम झडी निचा केने राजरौ , "कक्का
,एथन तऽ पठि बहर छी , कन्नी नोकरी भेटैत तहन
ने नीक दहेज ,नीक कनियाँ आ नीक ठाम रियाह
हएत , ओना अहाँ एहन प्रश्न किय पुछनिये । "

" तोबा नहि मोछ छऽ नहि दाटी छऽ आ नहि टंक
छऽ , तऽ हम की बुनिये , हो , जेकरा रियाह



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मासिक चक्रान्ता ISSN 2229-547X

VIDEHA

भेन बह छै तकरे ने ए सरँ नहि बह छै ।
कक्का रँड १ शान्ती सँ राजनाह ।

हमब समय मे ए तर्क थारि नहि बहल छल ।
आथिब मोछ सँ रियाहक कोन सरँध , कोन प्रयोजन
। राजे हमब झडी माछि मे बैस बहल छलै झदा
हमझँ शिहरी छेड़ १ छलौ छुप कोना बहरँ , तै
हिम्रत कऽ कहलौ , " कक्का , थुँ गजरेँ रात करै
छी आरँ रियाह सँ मोछक कोन सरँध आ छिक ने
बाथरँ तऽ नरका फैसन छै । "

" देखक , देखक भाग सरँ छेड़ १ कोना राजे
छै । " कक्का भाड दिशे देखेत जेब सँ राजनाह ,
" रौ , रियाह भेना कए राद मर्द , मर्द ने बह छै
ओ मोगी भऽ जाग छै आ जमाना जानै छै जे
मोगी कए मोछ , दाढी आ छिक नहि होग छै ,
तोना तऽ सदियह ई मे से किछ नहि छै , जँ
एथना तौ थपना कए मर्द कह छै तऽ जकब तोहब
रियाह भऽ गेल छै । "



लोक सँ हमब आ कक्का कए रातनिप अने छलैए
आ झुकी मारै छलैए । आग कक्का कए नजेब पब
हम छैठ गेल छलौ । मोने मोने हम झुप कए
के गबियारै छलौ जखन ई देकान पब आयरक नेल
सोचने छलौ । सँ चाहक छुकी आ हमब रैज्जती
सँ झुड-फ्रेस कऽ बहर छलैए ।

हम थिसिया कऽ कहलिये , "कक्का बाम भगरान कए
देखु , छुछ भगरान कए देखु , किनको मोछ नहि
छै तऽ की ओ मर्द नहि छलाह । "

" रौखा , ओ भगरान छलथिन तू तऽ मनुक्ख छै ,
जेना बाम जी 14 वर्ष रैन मे बहरथिन आ छुछ
जी गीता कए उपदेशे देलथिन , एहन एक्का ठा
काज तू कऽ सकै छै ? जू भगरानक देखसी करै
छै तऽ भगरान जेकाँ कर्म कऽ कए देखा , तहन
हि भऽ जेरै मोछ बाथे सँ । "

कक्का कए तर्कक सामने हम कमजोब भऽ गेल
छलौ , हमबा किछु बुरेरे नहि करै छलैए , झुदा हमझ
नर जमाना कए नर रिचावधारा , आ नर समाज मे
जियै राता प्राणी छी तऽ फेब एतेक जन्दी हारि
कोना मानि नेरै । हम फेब कने सोचि कऽ कहलौ



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

“आग कए जमाना मे झूठ रा रिद्वान सर पाग छै
छै, मोछ नहि, आ जूँ मोछ बाखर तऽ कोनो
नामी कपनी नोकरी नहि देते आ जूँ नोकरी नहि
भेष्टत तऽ ठाका नहि भेष्टत आ जूँ ठाका नहि
बहत तऽ भुखन मबर, एहि कावणे कक्का मोछ
बाखनाग जकरी नहि छै ।” फेब कनेक कात ठमकी
कक्का कए मुँह पव आरैत भार पठराक कोशिनि
केनौ आ फेब सँ हम अप्पन तर्क देनौ, “आग
फिम मे रडका-रडका हिरा सर रिन मोछ कए
अभिनय करै छै ओव एक्क दिन मे लाखक-लाख ठाका
कमा लै छै, जूँ मेछ बाथिते तऽ हमरा हिसारे ओ
सडक पव बहिते । एकठा रात ओव मोछ राता
छोड़ । कए कोनो आधुनिक गडकी पसंद नहि करै छै
,आर केड झूठे हेते जे मोछ बाथि कऽ अप्पन
पएव पव कलवि मावते ।”

हम मोने-मोने सोछे छनौ जे ई रातक कोनो
काँठ कक्का गग नहि छेत किएक तऽ महगा
कए जमाना मे ठाका सर कए चाही । झूठा कक्का
तऽ कक्का छुवाह ओ कोनो हावि जेतह । ओ चष्ट दऽ
अप्पन रात कहनि, “हम मानियौ जूँ ठाका
सरहक प्रथम जकबत छै झूठा फिम मे काज करै
राता मर्द नहि होग छै,अरे ओ तऽ अपना संगे



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मानकीकृत संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

रौंड़ीगाडि कए होजि तऽ कऽ घुमे छै , तीड मे नहि
आरऽ छै छै , नाडका नडकी कए कप धऽ मुँह
माँपि कऽ रँहवाग छै , ओकवा करेजे नहि छै
खुलेखाम धुमे कए , जे सदिखन डब मे जिये छै ,
आरऽ तूँ ही कह जे ओ मर्द छै की मोगी । सर
नरहारक ओकव अन्नकवण करै छै आ मोछ कँठारै छै
। नाज कव रौ रौखा , नाज कव । "

कक्का कए रात सनि हम हेब सँ निकतव भऽ गेलौ
। हमवा तऽग आरऽ कोनो एहन ठोस तर्क नहि छल
जे सँ हम निमोछिया कए जीता सकितौ । हमवा
छुप देख कक्का राजनाह , रौखा , शिम्ब-प्रवाण मे
अनेको भुषि-झनी निथने छथिन जे माय-रौप कए
मबना कए राँदे मोछ कँठारैक चाही । मोछ तऽ
मर्दक पहचान छै । पहिलक जमाना मे मोछे सँ
बुमहा जाग छल जे के रँनगव आ के कमजोव छै
। मोछक भेवागँठी होग छल , छोटका मोछ
, छिँतव कँठ मोछ , पतवका मोछ आ सर सँ नीक
मोछ होग छल कान धरि राँना मोछ । पाकर
, काबी , नान , कँघी माबन , गोन-गोन गुँठिया मोछ
, रौद मे चमेक कऽ झँक तेज रँद रँद छल
। आरऽ तऽ ग सर सपना भऽ गेलौ । आरऽ तऽ
सर किछ छोट भऽ बहन छै , छोट मनुष्य , छोट गाडी
, छोट रँतन , छोट नाम जेना माँम डेड झा , छोट
कपड़ १ , छोट टिक , आ सहाचर मोछ । जेना



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मासिक चरित्र ISSN 2229-547X

VIDEHA

हैसनक कावण सरै किछु छोटै भऽ बहल छै हमबा
बुझना जाग ये झुनखक डुँचाग रँकवी जेकाँ भऽ
जाएत । रौंखा हम सरै मिथिलाक छी , मिथिलाक नाँउ
,संस्कार ,संस्कृती ,गज्जत कए माष्टि मे नहि मिला
। रिद्यापति ,उदयनाचार्य ,मंडन सन रिद्वानक धवती सँ
मोछ कपि धरोहब हैसनक सागब मे नहि भसा ।
मोछ बाथ ,ष्टिक बाथ , जनेहुँ पतिव आ शीन सँ कह
हम मिथिलाक छी , हम मैथिल छी । "

हम नाजे झुडी निचा केने
कहरिये," कक्का कान पकड़े छी , आग सँ हम मोछ
नहि काँठरँ आ अपन संगीयो सरै सँ कहरँ मोछ नहि
काँठरौक जेन ,अपन संस्कृती रँचाएरौक जेन । "

सरै तानी सँ हमब रातक समर्थन केनक । चारुक
दोकान पब सँ भीड छुटैऽ नागल । ।

ई कनापब अपन मंतर

ggaj_endra@videha.com पब पठाउ ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,
547X VIDEHA

मानवीय संस्कृतम् ISSN 2229-



उमप्रकाश ना

कथा

गह्वर आँखि राधा

आग-कान्हि शिहरी मधुरआक भोवका कष्टीन सर ठाम
एकू बह ए । चाहे ओ छोट शिहरी हूँ रा महानगर ।
ऊँ घर मे खुन जागराना रँचा आँछि तँ भोरे-भोव
डूँ आ रँचा केँ तैयारी मे लागि जाऊ । एक नजबि
घडी दिस बह छै जे कही नै भेँ जे जाग । रँस
सुप पव अरगे भिड आ जे अपने सँ खुन
पहुँचारेँ छथि, हुनकर सबक भिड खुन गेँ पव ।
कम रँसी सब शिहरीक हार एहने बह ए । भागनपुव
सेहो एहि सर सँ फराक नै छै । भोव मे सात
रँजे सँ नह कह साठे आँठ रँजे तक सौँसे ट्रैफिक
जाम आ भिड भाड बह छै । सँजोग सँ हमहुँ एहि
भिड भाडक एकठि हिस्सा बह छी । छोटकी रँसी केँ



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

माथिलि बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

सुन पछेरोक हमरे दुष्टी बह ए । अनाम वगा क२
भोरे भोव छह रजे उठि जाग छी । जौ छह सँ
आगु स्वतन बहनौ, तँ श्रीमतीजीक स्वाभितानि शुक
भ२ जाग छै जे हे देखियो आग सुन
छोडेनथिन्ह । जखन सात पव घडीक कष्ट आरि
जाग ए तखन हरैड हरैड रैष्टीक डैन पकडने सुन
दिस भागै छी आ जँ समय पव गेष्टक भीतव दुका
देनियो, तँ बुझागत अछि जे दुनिया जीत नैनौ ।
ए तँ भेन निवक कार्यक्रम । आरि किछु रिशेष ।
सुनक अनाका मे निव भोरे रहूत बास अतिभारकक
जुष्टान हेरौक कावणै गपक छोट छोट ठेरी ठेन
रैनन बह ए । सबक अपन अपन ग्रुप छै आ ए
ग्रुप सबक जुष्टान हेरौ नैन ठेरी चाह आ पानक
दोकान सब सेहो । अस्तु, तँ हमरो एकटा ग्रुप रैन
गेन अछि, जाहि मे रूनाक राना ठाकुरजी, कान्नेजक
प्राफेसर दासजी, पोस्ट अफिस राना शर्मिजी, कपडा
दोकान राना मोहन सेठ, सरै राना मेहतजी आ
आरो किछु गोष्टे शोमिन छथि । हम सरै निव रैचा
केँ सुन छोटकाक रौद ओतुक्का घनश्यामक चाह दोकान
पव जुष्टे छी आ चाहक सर्ग भवि पोथ गपक सेहो
बसास्रदान करै छी । निजी समस्या सँ व२ क२ देशक
बाजनीति, अमेरिकक दादागीरी, सचिनक सेनचूरी,
आर्थिक समस्या, टुष्टन रोड, रिजनीक कमी, मँहगीक
मावि, कम दबमाहा आदि रहूते रिषय सरै पव निव
अंतहीन रहस होगत बह ए । कहियो कान जँ रैसी



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मानुषिह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

नेष्टे भ२ जाग ए तँ घबनीक तामस सँ भवत होन
हमर सभक सभा भंग क२ दैत ए । कथनो क२
मोरौंगर होन पब तामसो होग ए जे केहन सुनब
रहस चले छुन आ रहसक असमय मूँ भ२ जाग ए
एकठ्ठा होन कार पब । खैब ग भेल हमर भोवका
निर कार्य । आरँ हम मूर कथा दिस रँटे छी ।

घनश्यामक चाह दोकान पब एकठ्ठा छोट रँचा काज
करै छुन । नाम छुले रिनोद आ हमबा सरँ नेर ओ
छुन छोट । घनश्याम कह छुले रिनोदरा । ग रिनोद,
रिनोदरा रा छोट जे कहिये दस रँवक रहत ।
एक दिन रहसक रिषय रस्तु छुन चागटे नेरँव । हम
सरँ अपन चिन्ता प्रकट करै छुले । ठाकुरजी रँजनाह
जे यो ई दोकान मे जतय छह पीरै छी सेहो
एकठ्ठा रँन मजदूर काज करै ए । एकाएक हमबा
सभक धेखान छोट पब चलि गेल । एतेक दिन सँ
ग गप नजबि मे क्रिया ले आरँ छुन, येह सोच२
नगले । ठाकुरजी घनश्याम केँ कहनिन्ह जे रँड ग
गतती काज केने छी अहाँ । प्रिसि पकडत आ
मोकदमा सेहो रहत । घनश्याम रँजनाह जे अहाँ
जुनि चिन्ता कक । हमर पुवा सेटिंग अछि । नेरँव
आफिसक रँडा रँरु हमर ग्राहक छथि आ कोतरानीक



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मासिक चरित्र ISSN 2229-547X

VIDEHA

दरोगा सेहो एतय आरै छथि । आग तक तँ किछ
नै कहनाह आ आगू देखत जेते । हम रँजनों-
“से तँ ठीक ए, झुदा ग कछ जे एते छोट रँचा सँ
काज करेनाह अहाँ के नीक लगै ए । ” घनश्याम-
“जखन एकब राँपे केँ नीक लगै छै तखन हमबा की
जाग ए । तीन सय ठाँका महीनरावी दय छिये । ”

हम धेखान सँ रिनोद केँ देखलौं । ओकब आँखि रँहु
गहीब छलै । कोनो सुखायत सपना जकाँ ओकब आँखि
मे काँची सुखा क२ सँठन छलै । हमब हृदय कक्का
सँ भवि गेल । हमबा बहन नै गेल । हम ओकबा
लग रँजेनिये आ पुछनिये- “रँहुआ कोन गाम घब
छै । ” रिनोद रँजन- “हम जगतपुरा केँ
छिये । ” हम- “राँरु की नाम ए । ” रिनोद-
“हमरो राँरु नाम जीरँहु दस छै । ” हम- “पटे
नै छी अहाँ ? किया काज करै छी ? । ” रिनोद-
“हमरो राँरु कहनको जे काम नै कबली, त घरो
मे चूली नै जवथी । ई सँ हम काम पकडी
लेनिये । ” हम- “हम अहाँक राँरु सँ भेंट कब२ छी
छी । ” रिनोद तारत हमबा सँ नीक जकाँ गप कब२
लागत छल आ झुझी दैत कहनक- “हमरो राँरु आज



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मानवीय बिदेह बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

अगथो। थोडा देव ककी जा, भैठ होग
जेथो। "

हम ओते रिगमि गेलौ। कनी कार मे कनियाँ फोन
केरथि- "आग आफिस ने जेरौक ए। " हम- "रैस
आधा घण्टा मे आरै छी। " कनियाँ- "अ महफिर आ
चौकडी अहाँ केँ रैबरौदे क२ क२ छोटत। जे
हुवाग ए सैह कर। " हम देखलौ जे मन्दरीक सर
सदस्यक मोरौगत धनधनगत छत। थैव कनी कारक
रौद एकठा दीन हीन राजि दोकान पव आयन।
रिनोद कहक- "हमरो रौरू आरौ गेलौ। जे गप
कवना छै, कवी नए। " हम ओहि राजि सँ पुछलौ-
"अही जीरैछ दाम थिकौ। " ओ रौजन- "जी
मानिक। केहनौ थोजी बहलौ छनिये हमबा। "
हम- "अहाँ अपन छोट रौचा सँ मजदूरी कियक कवरै
छिये? ओकर पटे निथैक उमवि छै। आओव
सबकारी कानून सेहो रैन गेल अछि जे अहाँ रौचा सँ
मजदूरी ने कवा सकै छी। " जीरैछ- "अरे मानिक
सबकारो की कवते? हाँसी नष्टकाय देते? घरौ
बहते त भूखने मवी जेते। " हम- "कतेक रौन
रौचा अछि अहाँक? " जीरैछ- "पाँच गो रैछा ओरो
दू गो रैछा छै। " हम- "ककरो पठरै छिये की



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

नै ? " जिरैछ रिहसैत कहक- "पहिले खाना पीना
पूरा होते तबै नी पठाग होते । " हम- "एते
जनसंख्या कियक रैतेने छी ? " जिरैछ- "आरै होग
गेलै त की कबजौं । हमे भी रैछा मे मजदूरीये
केनियौं मानिक । हमरा ओर के भाग मे यही
निखनो छौं । " हम- "देखु जे भेल से भेल ।
रैछा के मजदूरी छोडाऊ आ खुन मे भती कर ।
सबकाव दुपहरियाक खेनाग सेहो दे छै । नै त
हम लेख रित्तग मे खरैबि कइ देर । कनी एक
रैब रिनोदक आँखि सपना दिस देखियौ । ओकर
की दोख छै ? कमे खरस्था मे केहन नागै छै ।
अहाँक दया नामक रस्तु नै ए की ? अहाँक रैछा
थीक । सबकावक ठेवी योजना छै । अहाँ नोन न
सकै छी । अपन कारोबार कइ सकै छी । नरगा मे
रोजगावक गावपी छै । अदिवा आरास मे मकान न
सकैत छी । " पता नै हम की सर कहत छनि
गेलौं । हमरा छुप भेलाक बाद जिरैछ राजन-
"मानिक अपने सर ठीके कहिये । लेकिन सर
जगहो पब कर्मिनो थोजै छै । हमे कहाँ से
देबौं कर्मिन । ठेवी अनकागरी ओरो छिपी पतरी
होग छौं । एतना निखा पती ओरो दोडा दोडी
हमरा से नै सपवथौं । " हम- "ठीक छै, एखन त
हम जाग छी, ऊदा अहाँ के जे कहनौं से कवर आ
कोनो दिक्कत हएत त हमरा सँ भेँठ कवर । हम
अहाँक छिपी रैना देर आ जतय कहइ पडत कहि



देरै । " फेब हम घब चलि गेलौं । सभा रिसर्जित
भइ गेल छल ।

दोसब दिन जखन स्कुल गेलौं, तँ फेब सँ घनश्यामक
दोकान पब चाहक जुठान भेल । आग रिनोद
दोकान पब नै छल । हम गरि सँ राजेलौं-
"देखियै रिनोदक झुंझि भइ गेल । आरि ओकर
गहब आँखि सपना फेब सँ हबिआ जाएत । "
घनश्याम कहलक- "नै सब, रिनोदरौक राप अहाँ सर
सँ डबि गेल आ हमबा ओतय सँ हठा लेलक । कह
छल जे कही साहरँ सर पकडरौ नै देख, तेँ एकबा
कोनो दोसब ठाम बथरौ दैत छियै । " हम अरक
बहि गेलौं । रिनोदक गहब आँखि सपना हमबा
नजबिक सामने ठाठ भेल हमबा पब हँसि कह कह
छल- "सर सपना पूरा होख लेल थोड़े थोड़ा छै ।
किछ सपनाक अकार मूँ भइ जाग छै । हमरो
अकार मूँ भइ गेल अछि । अहाँ रार्थ हमबा
जीयरौक प्रयास कह बहल छी । " हम हताश भइ
गेलौं । ओहि दिन सँ रिनोद केँ रूत तालियै,
झुंझा पूरा भागलपुब मे ओ कतौ नै भेटल । रूँचा
सरहक रूँडा दिनक छुट्टी मे एकठा भाडाक गाडी सँ
गाम जाग छलौं । रूँछ मे नाबायपुब मे चाह पीरौ



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मासिक बिदेह **ISSN 2229-547X**

VIDEHA

नेन गाडी बोकनौ, तँ देखे छी जे रिनोद ओहि
चाहक दोकान पब काज करैत छल । हम ओकरा
दिस रँठनौ की ओ जेब सँ कानन नागर । दोकानक
मानिक हमबा कहलक- “रँठा केँ किया डबरै
छिये ? ” हम- “ने डबरै ने छिये । हम ओकरा
जानै छिये । ” दोकानक मानिक- “से तँ हम
देखिये बहन छी । छपचाप चाह पीरुँ आ अपन गाम
दिस जाऊ । ” तारत कनियाँ सेहो आरि गेली आ
कहँ नागरी- “अहाँ केँ रँताह हेरा मे आरि कोनो
कसबि ने बहि गेल । चरु तँ छपचाप । ” हम
देखनौ जे रिनोद कतौ नुका गेल छल अपन गरीब
आँखिक सपना समेटने आ हम छप भँ गाडी मे
रैसि गेलौ ।

ई कनापब अपन मतलब

ggaj_endra@videha.com पब पठाऊ ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)
547X VIDEHA

मानवविज्ञान संस्कृतम् ISSN 2229-



नरीन कृमाव

“आशा”

रैथीक जन्म

रैथीक जन्म पब कतेक लोग हसैत थिनिथिनिहैत छथि तथ कतेक लोग नोब रैहैत छथि । कहियो ए सोचन ज रैथी रूढ़ि पाक नाथी रैनि सकैत अछि तथ रैथी कियक नहि । मानन जागत अछि जे आजुक समय मे रैथी आ रैथी एक समान अछि, पबच किछ रजा नैत एहि रिषय पब मतभेद छनि, आथिब किय ? रैथी नस्लीक रुप मानन जाए छथि तथ हेल नस्लीक अनादब कियक । 21री शताब्दी, जतय रैथी रैथी स आगु निकलन जाएत छथि, एहो समय मे झुग हल, बिराहक रौद दहेज नैत प्रताडित कबनाए



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

आथिब कियार ? जे परिवार भ्रूण हवा करैत छथि
आ जे दहेज लेन प्रताडित करैत छथि से कहियो
सोचलैत की ओ जकरा प्रताडित करैत छथि ओ
कोनो घबक रैछी छथि । आथिब ओ अंतर्ब कहियो
धरि तक मिष्ट । कहियो ओ सोचलैत जे अगब ओ
समाज मे रैछीक जन्मदब कम भय जायत तय ओ
समाज कोना के रिकसित होयत । एखन देखल जाए
सकैत छैक जे हब स्केत्र मे रैछी अपन पबचम
नहवा बहन छथि, चाहे ओ मिरिन, अजिनियारिग या
अन्य स्केत्र हूँ, हेब रैछी कय सदियन अपमान
किया कएल जाएत छथि । रैछी चाहे ओ कियार ने
एकछा मा हो, प्रतौह हो या रैछी, ओ सदियन अपना
डुपब होय रना अवाचार के सहित छथि, आथिब ओ
कहियो तक ?

एकछा ओब अपन समाज मे रिकसपी रानु समझा
छथि दहेज, जेकरा काबणे कतेक रैछी प्रताडित
कैएल जाए छथि आ कतेको तख माबि देल जाए
छथि । आजुक समय मे हरेक नडकी पठन लिखन
आ काज करैत होय छैक पब तहियो ओकर रिराह
रिना दहेजक नहि होएत छैक । जे रजा रैछी के
अभिषाप या रैछीक दर्जा ने दैएत छथि, कि
कहियो ओ सोचलैत जे ओ दहेज प्रथा, भ्रूण हवाक
रिरोध करि । कि समाज अपन सोच नहि रैदरत ।
हम ओ सर रौतक रिरोध आ घोब निदा करैत छी,



547X VIDEHA

मानवीमिह संस्कृतम्, ISSN 2229-

ଏ ବଚନାମବ ଶ୍ରବଣ ଯନ୍ତ୍ର

ggaj_endr a@vi deha.com পৰ পঠাউ ।



উমেশে মণ্ডব

ବିଦେହ ନାଥ ଓଡ଼ିଆ- 2012 ::

মধুৰ্ৱনী জিৱান্তস্থাত চনৌবাৰ্গজক জে.এম.এস. কোটিং
পৰিসৰমে ৱিগত ২৪-২৯ জনৱৰী ২০১২কৈ সৰস্মৱতী
পুজাক খৱসৰপৰ দু-দিৱসীয ৱিৱেহ নাষ্টা উত্সৱক
খাযোজন ৱিৱেহ গ্ৰ-পত্ৰিকাক নাষ্টা-বৰ্গমচ-ফিল্মক



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

VIDEHA

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

संपादक रैचन ठाकुर जीक संयोजकत्वमे कएल गेल । श्री रैचनठाकुर निथित 'रिसवासघात', श्री गजेन्द्र ठाकुर निथित 'उत्काल' आ श्री जगदीश प्रसाद मण्डल निथित 'रिवांगना' नाटकक मंचन श्री रैचन ठाकुरक निदेशनमे भेल । नाटक बंगमंच-हिन्दमंच पब्लिशर्स, शिक्षक प्रदर्शन, कार्य गोष्ठी, एकल अतिविज्ञ नाटक अभिनय, गीत-संगीत, हास्य कला, नृत्य-कला, मूर्ति-कला, शिल्प-रसकला, काव्य-कला, किसानी-आत्मनिर्भर संस्थाति एवं चित्र-कला क्षेत्रमे 2012क 'बिदेह सम्मान' सेहो प्रदान कएल गेल । ई खसबपब रिशिष्ट अतिथि बहथि साहित्यकार जगदीश प्रसाद मण्डल, करि जनकशिशोब लाल दास, बंगमंचपबक रवीय उपसमाहर्ता सह प्रभारी एस.डी.ओ. चेतनाबाण बाय, डी.सी.एन.आर. कुमार मिथिलेश प्रसाद सिंह, पूर्ण जिला पाषर्द रैलबाम साह, डा. उषा महामेठ, कुमार बामेश्वर लालदास, बामरुम्ह सिंह, जैज किशोब साह आ खरकाशि प्राप्त शिक्षक हबिनाबाण बाम । हजारो दर्शक-श्रोताक आ लारै दुब-दुबसँ आएल साहित्य-संगीत प्रेमी सरहक उपस्थिति सेहो छल । मंचक संचालन बामसेरक ठाकुर, दुर्गादि मंडल आ दयानंद कुमार केलनि ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,
547X VIDEHA

मानकीकृत संस्कृतम् ISSN 2229-

बिदेह मैथिली पोथी प्रदर्शनी मंचक दहिना भाग
नगाउन गेल बहए जे आकर्षक बहन ।

दिनांक 28/01/2012 अर्थात् उत्सवक पहिल दिन दृष्टा
नाटक क्रमशः रिसरासघात आऽ उत्कल्लुखक प्रदर्शन
भेल । जतए पहिल नाटक हान्नेमे एन.एच. निमणामे
भेल घाँसनासँ उपजन षड्वक प्रभारकेँ उघाव
केलक ओतहि दोसर नाटक जादू रासत्रिकतारादी
उत्कल्लुख जगमे ऐतिहासिक षड्वककेँ उघावत करैत
खाँखाँच दर्शकदीर्घामे दाँते गुंगरी कल्लक स्थिति
रनौतक ।

थकः जेना थकः रिष्णु... मंगलाचरणसँ उद्घाटन सत्र
प्राबल्य भेल । रिपिरत दीप प्रज्वलित कऽ अरकाशि
प्राप्त शिक्षक रुमाव वामेश्वर दात दाम उद्घाटन
केलनि । वंगमंचाय अध्यक्ष डा. उषा महामेठ एरं श्री
जैज किशोर साहक अभिभारकतरेमे कार्यक्रमकेँ आगाँ
रैत गेल । एकठाँ सुन्दर स्रागत गीतसँ सुश्री
शिल्पी रुमावी ओ आशि रुमावी स्रागत केलनि ।



नाटक मंचनसँ पूर्ण काली माताक साँकी प्रस्तुत कएल
गेल जेधामे काली केव प्रदर्शन केनीह सुश्री आवती
कुमारी हाथक सहयोग केने बहनि सुश्री उजमा
निहकत । ई खरसबपव गीत गाओल गेल छल- जय
जय भैरवि....., जेकर गायक कलाकाब बहथि कृष्ण
कुमार यादव ओ कमल किशोर 'पंकज' । एकव
अतिविकृत जल स्रच्छता अतियानपव आधारित
गीत 'जल स्रच्छता रँठरैत चलू....' एरँ जल-जलिन,
'जल जल पढ़ए कहनियौ गे जलिन.....; कृष्ण
'सबस्रती पुजामे नर उर्मग आनल रसन्त.....; बागिनी
कुमारी, रिता कुमारी, नरिता कुमारी आ सुधीबा कुमारी
द्वारा प्रस्तुत कएल गेल ।

रिसरासघात नाटकक प्रमुख पात्र- बाबू किशन, रीक,
एस.पी, कलकठब, उमाशिकब, गंगाराम, लक्ष्मी, ओम
प्रकाश, रिनल, बाजा आ हविकिन्निब जेकर अतियनय
केने छलह हमेशा: दुर्गादि ठाकुर, श्रिण कुमार
महतो, सुनील कुमार महतो, नरीन कुमार मण्डल,
अमित बज्ज, सरि नावायण महतो, नरीन कुमार,
अतियनर कुमार सागव, मो. ठासिक, बमेशी कुमार
यादव, आ जीतेन्द्र कुमार पासवान ।



उत्कृष्ट नाटकक प्रकृत पात्र- गंगेश, रत्नभा,
देवतता, आचार्य सिंह, भगता आ गंगाधर । अभिनय
केने बहथि क्रमशः अंजली प्रियदर्शिनी, प्रीति कुमारी,
सुनेखा कुमारी, श्वेता कुमारी, पूजा कुमारी आ
शिल्पी कुमारी ।

अंतमे हास्य कलाकार श्री दुर्गादि ठाकुर द्वारा अद्भुत
समाचारक प्रस्तुति क२ वातिक 11 रोजे कार्यक्रम शेष
भेल ।

एहिना दोसर दिन माने 29/ 01/ 2012क कार्यक्रम
शुभावम्भ भेल 'बिदेह सम्मान समारोह'सँ ई सत्रक
उद्घाटन उपसमाहर्ता सह प्रभारी एस.डी.ओ. चेत
नारायण बाय, डी.सी.एन.आर. कुमार मिथिलेश प्रसाद
सिंह, साहित्यकार जगदीश प्रसाद मंडल, करि जनक
किशोर नारा दाम, डा. उषा महासेठ एर अरकाशि
प्राप्त शिक्षक हबिनाबाय नारा सम्मिलित कपसँ दीप
प्रज्वलित क' ।



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मुर्तिकला, शिल्प-रसकला,
कार्य-कला, किसानी-आत्मनिर्भर सभ्यता और चित्रकला
क्षेत्रमें 2012क बिदेह सम्मानसँ सम्मानित प्रतिभागी
सरलक सूची ई तबहें छटि-

अभिनय-

अश्ली शिल्पी कुमारी, उमेर- 17 पिता श्री लक्ष्मण
साह

श्री शोभा कान्त महतो, उमेर- 15 पिता- श्री
बामखरता महतो,

नाट्य-अभिनय-

अश्ली प्रियंका कुमारी, उमेर- 16, पिता- श्री रैद्यनाथ
साह

श्री दुर्गादि ठाकुर, उमेर- 23, पिता- स्. भवत
ठाकुर

नृत्य-

अश्ली अनेखा कुमारी, उमेर- 16, पिता- श्री हरेनाथ
साह



२०१२ (बर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,
547X VIDEHA

मानकीकृत बर्षिक, ISSN 2229-

श्री अमीत बज्र, उमेर- 18, पिता- नागेश्वर
कामत

चित्रकला-

श्री पनकनान मन्दन, उमेर- 35, पिता- स्त्र. सुन्दर
मन्दन, गाम डुजना

श्री बमेशी कुमार भावती, उमेर- 23, पिता- श्री
मोती मण्डन

संगीत (हावमोनियम)-

श्री पबमानन्द ठाकुर, उमेर- 30, पिता- श्री नथूनी
ठाकुर

संगीत (ग्लेवरक)-

श्री ब्रून बाउत, उमेर- 45, पिता- स्त्र. चिन्म
बाउत

संगीत (बसन्तोरक)-

श्री रंजित बाय, उमेर- 55, पिता- स्त्र. सबजुग
बाय



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

माधुसूदन चन्द्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

शिपी-रसुकरा-

श्री जगदीश मल्लिक, उमेर 50 गाम- चनौबागज

मुर्ति- कवा-

श्री यदुनंदन पंडित, उमेर- 45, पिता- अश्विनी
पंडित

काष्ठा-कवा-

श्री नमेली झुथिया, पिता स्र. मुंगानान झुथिया, उमेर
55, गाम- डुजना

किसानी-आमेनिर्भव संस्कृति-

श्री नटुमी दास, उमेर- 50, पिता स्र. श्री कणी दास,
गाम रैवमा

उपरोक्त प्रतिभागी सबके प्रस्तीपत्र, प्रतीक चिन्ह
थ 1 मातासँ सम्मानित कएल गेलनि । उपहार स्वरूप
नगभग हजार-हजार रुपैयाक नर मैथिली पोथी
सेहो प्रदान कएल गेल । ई तबहँ बिदेह द्वारा ए
एकठा नर डेग, जेकरा मैथिली साहित्यमे पहिल
डेग सेहो कहलामे कोनो हर्ज नै, उठाओल गेल ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)
547X VIDEHA

मानकीय संकेतः ISSN 2229-

दोसब सत्र करि सम्मेलन आ पबिचचर्कि छल । ईमे
भाग लेलनि बाम सेरक ठाकुर, दुर्गा नन्द मण्डल,
नन्द रित्तास बाय, कपिलेश्वर बाउत, लक्ष्मी दास,
बामरित्तास साहू, प्रा. उपेन्द्र नाबायण अन्नपम, जगदीश
प्रसाद मंडल, जनक किशोर ताल दास, बाम प्रवेश
सिंह, शिम्भू सोबल, अजय कुमार दास, रत्नबाम साहू,
बाम सेरक ठाकुर, अखिलेश कुमार मण्डल, शिरकुमार
मिश्र आ मो. गुर हसन आदि करिमे अखिलेश कुमार
मंडल आ लक्ष्मी दास छोट्टा सब अपन-अपन
सुरनिधित नूतन करिनाक पाठ लेलनि ।

ई तबहें दोसब सत्रक समापनक पछाति तेसब सत्र
जे बंगमच-सत्र ओ बिदेह नाछ उतसरक अंतिम सत्र
आयोजित लेल । अंतिम सत्रक रिशिष्ट अतिथिगण
बहथि- कामेश्वर कामति, नीलकांत दास, शिर काबक,
मो. असन्नदीन, नन्द किशोर गुरपूता, कपिलेश्वर
बाउत । बंगमचिय अख्यस्तता ओ मच संचालन लेलनि
दुर्गा नन्द मंडल ।

....ग्रामीण जीवनकेँ रंजारोन्मुख हएँ... । सस्ता
श्रम-शक्ति भेटैलासँ पूँजीपति रक्षा द्वारा शोषण... ।
श्रमक लुटैसँ ग्रामीण लोक जानबरोसँ रंभव जिनगी
जीवै लेल मजबूर... । कपेयाक तालचमे नीच-सँ-



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मासिक चक्रान्ता ISSN 2229-547X

VIDEHA

नीच काज कबरौक लेल लोक केना तैयार होए
अतयादि रिषय-रसुतपव आधारित रिवांगना एकाकीक
प्रसुततिक पढाति बिदेह नाँ उतसरक समापनक
घोषणा कएल गेल ।

उपरोक्त समाचारक कोष्ठे र रिडियो निम्न लिंक
सुनपव उपनर्ध अछि ।

<http://maithili-drama.blogspot.com>

<http://esamad.blogspot.com>

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-video>

ई कनापव अपन यतिर

ggajendra@videha.com पव पठाउ ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)
547X VIDEHA

मानवविज्ञान संस्कृतम् ISSN 2229-



डा. बमानन्द झा 'बमण'

अनुवाद

1

21 फरवरी - अन्तर्वर्षीय मातृभाषा दिवस । एही दिन पूरै पाकिस्तानमे तादत गेल उर्दूक विरोधमे रंगनाभाषी रिशत प्रदर्शन कएने छल । पाकिस्तानी पुलिस गोली चलाएल । दु रंगनाभाषी नरहारकक प्राण तक्रार चल गेलनि । तेसब नरहारकक देहान्त 22 फरवरी, 1952 के भेल । ओहि तीनु रंगनाभाषीक स्मृतिमे ताकोलीन पूरै पाकिस्तान आ आर रंगनादेशे 21 फरवरीबके प्रतिवर्ष मातृभाषा दिवस मनए लागल । हुनका लोकनिक मायासँ तेहन ने धरबा उठल जे अतिहास साक्षी छल, रंगनादेशे रनि गेल । देशीक राजनीतिक स्वतन्त्रताक लेल रंगनादेशेक राजनीतिक



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

अतिहासमे अपन प्राणक आहूति देनिहाव अनगिनित
स्वाधीनताकामी छथि, किन्तु अपन भाषाक नामपब प्राणक
आहूति देरौक रिश्मे आ पहिने घटना छलैक ।
स्वतन्त्रता सेनानीक स्मृतिमे दिल्लीमे आडिया गेष्ट
आहूति, आ पठनामे शहीद स्मारक । झुदा ठाकामे
शहीदमीनाब आहूति, जतय प्रतिरक्ष 21 फरवरीके
मातृभाषाक अस्मितक बर्काक लेल प्राणक आहूति
देनिहाव

ओहि तीन नरहारीक लेल लोक श्रद्धांजलि अर्पित करैत
आहूति । भाषाक सर्वस्वक लेल शिपथ लेल छथि ।
रंगनादेशिक सबकाबक आरेदनपब, रिश्मे कतेको
देशिक समर्थनसँ, जाहिमे भारत प्रमुख छल, 1999
मे युनेस्को 21 फरवरीके अन्तराष्ट्रीय मातृभाषा
दिस घोषित कएलक । आर समस्त रिश्मे 2000 सँ
21 फरवरीके अन्तराष्ट्रीय मातृभाषा दिस मनए
बहल आहूति । एहन महत्वपूर्ण तिथिके मैथिलीक
विकासक लेल कार्यक्रमक शुभावसु निश्चिते अहल
महत्वपूर्ण आहूति । नेशनल अन्तराष्ट्रीय मिशन, मैसूर
मिथिला भाषाक विकास एरँ सर्वस्वक लेल कतेक
सतर्क आहूति, तकर आ उदाहरण थिक । नेशनल
अन्तराष्ट्रीय मिशनक अधिकारीलोकनि अन्तराष्ट्रीय पात्र छथि ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मानुषिह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

हमबालोकनि अपन मातृभाषाक लेल निथेत बहराक
अतिविज्ञ जनजागवण अभियान नहि चलौतहूँ ।
आन्दोलन नहि कएतहूँ । आन्दोलनक लेल जे संघनित
भाषाचेतना अपेक्षित छैक, तकब सब दिनसँ अन्तर्
बहल । ऐतिहासिक, राजनीतिक रा सामाजिक कारणासँ

दुभाषिआ भए गेलहूँ, जाहि गतिसँ पढेनी लागल
अछि, जाहि तन्मयतासँ रँजाव आ सचाव माध्यमक चक
पब नछैत जागत छी, आ जेना हबिखरी दिस लपकि
बहल छी, ओहिसँ जे गटागत अछि रा गढ़ एत, स्पष्ट
संकेत अछि, अगिला पीढ़ी एक भाषिआ भएके
बहत । भाषा रैज्ञानिकक निष्कर्ष अछि, दोसब पीढ़ी
दु भाषिआ होगत अछि आ तेसब पीढ़ी एक
भाषिया । परिणाम होगछ, भाषाक विवृति । 1

दोसब भाषा रैज्ञानिक जे.ए. विश्वमैनक सेहो
शोधनिष्कर्ष एहने अछि, 'जाहि मातृभाषाक आनुवंशिक
संक्रमण नहि होगछ, से भाषा स्थिर नहि अछि । 2

एहन सामाजिक स्थितिमे अपन मातृभाषाक बर्काक लेल
संरक्षानिक कर्र-कुल्लत भेटैत गेल अछि । एहिसँ
मैथिली प्रयोगक प्रश्नमे विकासक संग रैबिधा
आएत अछि । पहिने करिता कथा लिखि, पठि रा
राचि गदगद होगत छलहूँ । अपना अपनीके 'मूल'
बहत छलहूँ । ओना ए प्रवृत्ति गेल नहि अछि ।



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मासिक बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

मैथिलीक सभ छवभाव, यशे अपयशे एही रक्षा पव
छननि । झुदा, सँरैधानिक मान्यताक उपबान्तु अन्य
स्केत्र आ शिस्त्रक रिक्तजनके " गौबरक रौध
भेननि छि । अपन मातृभाषाके " समृद्ध कवरक
गछा जगननि छि । मौनिक आ अनुराद दुनु
स्केत्रामे सक्रिय भेनाह छि । एहिसे आनो आनो
शिस्त्रक बचना मैथिलीमे आरैए नागर छि ।
साहित्यतब रिषयक पोथी मैथिलीमे छपय नागर
छि । मैथिलीक रिस्तार एरँ सर्वस्वक हेतु ए श्रुत
नस्त्रक थिक । मैथिलीमे लेखनक दृष्टिसँ समाजमे दु
कोष्टिक शिक्षित मैथिल छथि -

1. मैथिलीक दृष्टिसँ शिक्षित मैथिल एरँ,
2. मैथिलीक दृष्टिसँ अशिक्षित मैथिल ।

1. When a language surrenders
itself to foreign idiom and when
all its speakers become bilingual,
the penalty is death."

-T.F.O' Rahilly- Irish dialects past
and present: With chapters on
Scottish and Manx. Dublin Institute
of Advanced



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,

547X VIDEHA

मानवविज्ञान संस्कृतम् ISSN 2229-

Studies.)

2. Without intergenerational mother
tongue transmission – no language
maintenance is possible. That which
is not

transmitted can not be maintained)

मैथिलीक दृष्टिसँ शिक्षित मैथिल ओ भेलाह जे
रिपिरीत मैथिली पठने छथि, मैथिलीमे लिखेत
बहराक अछास छनि एर

पाविराबिक सम्भाषणक भाषा मैथिली छनि । मैथिलीक
दृष्टिसँ अशिक्षित मैथिलक कोठिमे ओ अरैत छथि जे
मातृभाषा मैथिली बहितह हुनक अध्यापन रा लेखनक
माध्यम हिन्दी रा अङ्ग्रेजी बहैत अछि, पाविराबिक रा
सामाजिक सम्भाषणक भाषा मैथिली नहि बहै गेल छनि
रा अल्प रूपमे छनि । किन्तु साहित्य सर्जना रा अन्य
रिषयक बचनसँ अपन मातृभाषाक सर्जनिक प्रेरण
आकांक्षा छनि । ओ आकांक्षा अरुण स्वागत योग्य
अछि । झुदा, ओ ओ मानराक लेल तैयार नहि बहैत
छथि जे मैथिली सेहो सीखराक रतु थिकैक, मात्रा



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

माथिलिह बरबन्दा, ISSN 2229-547X

VIDEHA

राजर्षि अरैत बहर, साहित्य सर्जनाक लेल पर्याप्त नहि
होगत छैक । मातृभाषा थिक, ते 'जे' निखरै,
जहिना निखरै, सबैठा ठीके होएत, शुद्ध होएत । एहि
ब्रह्म पावनाक कावण मैथिली लेखनमे अरारस्था रैठि
गेल अछि । एक ठो समाचार पठने छुनहुँ, रिलेन्तक
अधिकांश अन्डर ग्रेजुएट अङ्ग्रेज, शुद्ध अङ्ग्रेजी नहि
निथि परैत छिथि । ए मैथिली भाषा पब सेहो लागू
होगत अछि । अन्यथा बमानाथ न्या नहि निथने
बहितिथि - 'हम ए नहि मानैत छी जे जूँ मैथिली
हमब मातृभाष थिक, हम मैथिली अहोवाचा रैजैत छी
ते 'जे' निखरै, जेना निखरै सएह मैथिली होएत ।
जे कहैत छथि, जे जहिना रैजैत छी तहिना निखरै,
तँ मैथिलीक स्वरूप अनन्त भए जाएत ।' एहि प्रसंग
भाषावैज्ञानिक डा. बामनराव यादव मैथिली लेखनमे
आएन अस्तुरास्तुताक कावणक अन्वये 'ए' कए,
भाषावैज्ञानिक तथ्याक आपावपव ओकर परीक्षण कए
एहि निष्कर्षपव छथि जे 'हिन्दी' भाषाक माध्यमे 'ए'
शिक्षा ग्रहण कएनिहार एरि हिन्दी भाषाक लेखिक
परिपक्वता अल्पक प्रभावित होमएवाला मैथिलीक
लेखक लोकनि हिन्दी जकाँ मैथिली सेहो निथए चाहैत
छथि एरि मैथिलीक प्रत्येक शब्द, कृषि एरि वचनांग
आदिके over differentiate कबए चाहैत
छथि । ओ मानैत छथि जे एहि प्रभावक कावणे 'ए'
मैथिलीक ऐतिहासिकताक रक्षा नहि होगत अछि, ओ



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मानकीय संकेतः ISSN 2229-

547X VIDEHA

मैथिलीक निजब्रुक परिचायक नहि रनि, मैथिलीके
रूप कए दैत अछि । एहि देखोसिक

परिणामजनित किछ उदाहरण प्रस्तुत कए बहरन छी -

1. अहाँ सँ के रहस कबत ?
2. पूजा कबथु आ कनियो के आर्य कहथुन । -
मधुकान्त मा, आन्तिवथी, पृ.सं.14/66
3. आग हेब सँ नावायण जी क ते डेवा खानी
कबरौक नोष्टिस जावी भ गेलनि । -भूमि रंशिष्ठ, माष्टि
पबक लोक,स्वाष्टि जतवा, पृ. सं.10
4. एकष्टा के रंजाड त दोसब पाव । - भूमि
रंशिष्ठ,

पहिल राक्यमे 'के' सरनाम अछि एर दोसब, तेसब
एर चाबिम राक्यमे 'के' कावक छिन्न थिक । ऊदा,
मैथिलीक लेखक महोदय सभठाम 'के'क प्रयोग कए
देखनि अछि । साहिब अकादेमीसँ प्रवक्तृत मैथिलीक
एक लेखकक प्रकाशित नर पौथीपब चर्चक क्रममे
एहि विषयक हमब रिचाब अनि ओ तमसा गेलन्ह आ
कहनि 'अर्थात् हमबा मैथिली नहि लिखए अरैत
अछि ।' मिथिला भाषाक अपन निजी विशेषता,



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

मानवनामिक स्वपन्निक प्रसंग डा. बामराता ब. यादवक
अभिमत अछि जे मानवनामिक स्व पन्निक लेल अर्थार्थ
एहन स्व पन्निक लेल जे कोनहु नामिक रजनक
सामीपक अभावहूमे स्वतः स्वनिमित्त भए मानवनामिक
कपे उचित होएत अछि एर जकरा
spontaneous nasalization कहल जाएत
अछि, मैथिली रतनीमे अद्वयार्थक कपे 'चन्द्ररिन्दु
द्वारा, जेना सँ, तँ, हँ, अहाँ प्रतिरिन्नित होएत अएन
अछि एर सएह उचित अछि । अनुस्वार द्वारा यथा सँ,
तँ, हँ, अहाँ ओ प्रतिनिधित्व नहि होएत अछि । अहाँ,
कतेको राजि चन्द्ररिन्दु क कोन कथा, अनुस्वारहूके
छोडि सँ एर तँ निथेत छथि । जेना उदाहरण 4
(‘एकठ्ठा के रँजाड तँ दोसब पाव’) मे अछि ।
मैथिलीक गम्भीर अन्वयता पं. गोरिनन्द न्या स्पष्टतः
निथने छथि जे मैथिलीक अपन स्वन-स्वरस्थानमे
अनुस्वारक कतहु स्थान नहि अछि, किन्तु हिन्दीक प्रभावसँ
एकर प्रयोग जोब पब अछि, जखन कि रँगनामे
अनुस्वारि अनुस्वार नहि चलेछ । निश्चित रूपसँ ए
रँगनाभाषीक अपन भाषाक निजताक बम्काक प्रति
सचेत एर साकार बहुरीक परिचायक थिक ।
अङ्ग्रेजी शब्द Marriageक संगे कतय जर अ
कतय पञ्जी लागए, से सोथेत जाएत छी, किन्तु,
मैथिली अपन मातृभाषा थिक, रक्तवर्णक नियमक
पालनक कोन चिन्ता, जे निथरै, शुद्ध होएत । के



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

547X VIDEHA

मानकीय संकेतः ISSN 2229-

काष्ठत ? ए मानसिकता पवाकाग्रापव अछि । ए ध्यान
देरौक थिक थिक जे पैघ लेखकक भाषा सेहो
पैघ होगत छैक, अन्यथा अभिप्रेतक अभिराजना
नष्टपष्ठा जएतेक । राजनीतिक उपनिवेशीराद समाप्त
भए गेल । झुदा, उपनिवेशीराद नरकप धाव कए
लेलक अछि । ओ अपन अकादाकष झुह रौरि
अनलौबमेशन छैकनौलेजीक बथपव सरौव भए, द्रुत
गतिसें आरि बहल अछि । ओ सभष्ठा गीबि जएरौक
लेल आतुव अछि । मैथिलीपव दु तबहा मारि पडि
बहल छैक । ओहि प्रहारसें मैथिलीके "स्वम्भित
बथरौक अछि । तখনहि, मैथिलीक अपन निजता
बहतेक, नहि तँ एकठाव

भए जअत । एहि लेल आरथक अछि जे मैथिलीक
स्वन् विशेषताके " ओकव पुनि पवम्भवाके " लेखनमे
स्वम्भित बाखल जाए । डारामारताव यादरक पवामर्ष
अवल्ल उपयोगी अछि जे मैथिलीक आमेवम्भार्थ ए
पवमारथक जे ओ हिन्दीसें भिल्ल देखि पडए । हम
लम्भापति सिंहक उज्जिके " दोहवरैत एहि प्रसंग
अपन रजुराके " रिवाम दैत छी । ओ लिखल अछि

-

जेना रँजै छी, तहिना लिखी, जे सरसाधाव रूमि
जाए, सएह लिखी रा जे किछु शुद्ध-अशुद्ध अपन मन
मानि जाए, तकरे सरसि स्वन्दव कार मानि लिपिरँछ



कए ली, तथा र्याकवणादि ग्रन्थ पठरौक डरे “अपन-
अपन पाविराविक रा त्रामीण स्व-प्रक्रियाक अनुव्रजन
करैत अपनहि गह साहित्यिक मैथिलीक स्तुव निषावित
कए ली, आदि दूबाग्रह आग-कालि मैथिली संसारमे
संशामक रोग जकाँ पसरि बहल अछि । ककर कथा
मानउ, के ककर पथ-प्रदर्शक रैनथि ।

3

हमर रिचावक तेसर बिन्दु भए सकैत छल, अनुवाद
सिद्धान्तक प्रसंग किछु राजरै । मूदा, अनुवादक तीन
स्थिति -

1. सिद्धान्त ; (Theory),
2. अनुष्ठान ; (Practice), एरै.
3. मूल्यांकन ; (Evaluation)केँ ध्यानमे बाधि
रहूत नीक जकाँ कार्यक्रम निषावित अछि तथा अनुष्ठान
कार्यमे निष्ठात रिद्वान सरै अग्रिम सवासभमे रिभिन्न
रिषयपर अपन-अपन रिद्वितापूर्ण र्याख्यानक लेल
आमन्त्रित छथि । ओहि शिद्धान्तीय रिषय पर हम
किछु कहरौक साहस नहि कए सकैत छी । तथापि, ए
कहरै जे अनुवाद, आरै एक भाषासँ दोसर भाषामे
मात्रा उल्था करै नहि बहि गेल, एकरा शिद्धान्तीयता



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

547X VIDEHA

मानकीकृत संस्कृतम् ISSN 2229-

प्राप्तु भए गेल छैक एरँ अनुरादशोम्त्राक अध्यायन-
अध्यापन अनुराद रिज्ञानक ; (Transl at ol ogy)
रूपमे होखै नागर अछि । पहिने अनुराद द्विकर्णी
(Bi nary) मानल जागत छल, किन्तु आरँ रँदुआयामी
; (Mul ti di mensi onal) भए गेल अछि ।
पहिने एक शोम्त्रा यी छल आ किन्तु आरँ अनुराद
रिज्ञानक रँदुशोम्त्रा यीतक ;
(Int er di sci pli na ri ty of
Transl at ol ogy)परिप्रेक्ष्यमे अनुराद कार्य होगत
अछि । पहिने स्रोत भाषा (Source Language)
एरँ लक्ष्य भाषाक ; (Tar get Language) जनतरँ
आरंभिक दृष्टिक, रूढा आरँ अनुरादकक लेल भाषाक
संगति संग, स्रोत संस्कृति (Source Cul t ure)एरँ
लक्ष्य संस्कृतिक ; (Tar get Cul t ure)जनतरँ
सेहो आरंभिक मानल जागत अछि । पहिने एक
विषय, जेना समाजशोम्त्र होगत छल, किन्तु आरँ
अनुरादक एरँ पाठक/स्रोतक रीचक संश्लेषक लेल
Soci ol ogy of Transl at i on पब रिचाव
होगत अछि । नानैज ऐकम्ष्टक अनुरादसँ अनुराद
शोम्त्रामे आओरो रिस्तार आरँ गेल अछि । आरँ
अनुरादकार्यक स्वरूप, विषय एरँ उद्देश्यक आधारपब
निर्धारित होगत अछि । अनुरादकक लेल सरँथा
आरंभिक अछि जे हुनका स्रोतसंस्कृति एरँ लक्ष्यसंस्कृतिक
जनतरँहि नहि हो, अपितु विषयक Comman



Background Knowledge सेहो बहरौक
चाहिखनि । अनुराद रिज्ञानक स्फेतामे री. हाँवकार्क
प्रतिफल (Reversibility) पब आधारित
नरीनतम सिद्धान्त(1989) अछि ठौरा.डतदेसजपरद क
सिद्धान्त । एहिमे सातक अनुरूप चाबि ठाँ कोटि अछि
—

1. गणितीय सात ; (mathematical text),
एहिमे सरसँ रैसी प्रतिफल सभुर अछि,
2. तकनीकी सात ; (technical text),
3. साधित सात ; (constrained text) तथा,
4. सामान्य एरँ साहित्यिक सात ; (general and literary text) ।

नेशनल अनुराद मिशनक जे नस्का डेक, अनुरादकक
नेन Comman Background Knowledge
आरथक अछि । सगहि, नस्काभाषामे राजरे ठाँक
अज्ञास पर्याप्त नहि अछि, मैथिलीमे लिखेत बहरौक
अज्ञासक सग, मैथिलीक भाषागत विशेषताक ज्ञान
सेहो चाहिखनि, तखनि Sociology of
Translation स्थापित भए सकत आ अनुराद
हास्तास्पद हेएराँसँ रीचि सकैछ । विषयक जनतरक



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,
547X VIDEHA

मानकीकृत संस्कृतम् ISSN 2229-

अन्तरमे अन्तराद केहन भए जाओछ, तकब उदाहरण प्रस्तुत छि ।

बिजर्न रैंक द्वारा सूचीरैंक रस्तुक आयातक लेन
Blanket Permit देन जागत छलैक आ
आयातकक लेन आरथक नहि छलैक जे प्रत्येक थपक
समय ओ अनुमति प्राप्त कबथि । एहि काजसँ अनभिज्ञ
अन्तरादक Blanket Permit क अन्तराद करैत
परमिष्ट कए देलनि । ओहिना छपिके “आएत रिभिन्न
प्रकार रैंडक हिसार जाहि बजिस्ट्रमे बाखन जागत
छि, तकबा नाम थिक Skelton Register मूदा
काजसँ अनभिज्ञ राजि अन्तराद कए देलनि कंकान
बजिस्ट्र ।

ओहिना स्रोत संस्कृति (Source Culture) एर
लक्ष्य संस्कृति ; (Target Culture) सँ अनजान
अन्तरादक की कए सकैत छथि, तकब उदाहरण प्रस्तुत
छि -

‘The young daughter kissed her
father and bade adieu.’

एकब अन्तराद जँ मैथिलीमे कए देलैक ‘जुथान रैष्टी
बापके चूमि लेलक तँ अनर्थे ने भए जाएत ।



এ কনাপব খপন মতর
ggaj_endr_aevi_deha.com পব পঠাউ ।



যোগানন্দ বা,
করिनप्रव, नहेबियासबाय, दबभंगा (बिहार)



ग्रामजीवनक सत्यक संरालक :: अफागिनी

श्री जगदीश प्रसाद मण्डल रूखायामी बचनकावक
रूपमे मैथिली जगतमे प्रसिद्ध छथि । कथा-कविता-
नाटक-उपन्यासादि विधाकेँ छ अफन सर्जनक्षेत्रनीसँ
सजुरैत बहनाह छथि । हिनक समस्त बचना हिनका
मिथिला-मैथिलक लोकजीवनक प्रत्यक्षदर्शी ओ
रूखायामक रूपमे प्रस्तुत करैत बहनि छथि ।
लोकजीवनक यथार्थकेँ यथारत चित्रित कए माननीय
संवेदनाकेँ उद्गूह कवरै हिनक बचना संरालक प्रधान
विशिष्टता बहनि छथि । प्रतिभा, रूपापत्ति ओ
अभ्यास ई तीनु कावकसँ समन्वित हिनक बचनारणीमे
मिथिला-मैथिलक समस्या ओ तकर समाधानक दिशा
भेटैत छथि । रतिमान जीवनमे होगत नित्य नूतन
परिवर्तनक खण्ड चित्रकेँ यथारत प्रस्तुत कवरै हिनक
कथाक विषय-रस बहनि छथि जकरा छ सहज
वीतिर्ये प्रस्तुत करैत बहन छथि ।

73



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)
547X VIDEHA

मानकीकृत संस्कृतम् ISSN 2229-

कथापावाक आदर्शनिर्दूत यथार्थवादी दृष्टिकोण स्पष्ट
कर्पे प्रस्फुटित देखि पड़ैछ । मिथिलाक
लोकजीवनक उत्थानक प्रति समुदनात्मक
अभिरुचिक कोशिक कावणे मण्डनजीक कथा सब
हिनका आधुनिक कथाकाव लोकनिक अग्रिम पंक्तिमे
ठाढ़ कइ देलकनि अछि ।

ई संग्रहक पहिल कथा थिक दोहरी माबि । ई कथामे
प्रकृष पात्र ग्वारक मनोरेखानिक रिश्ता भेल
अछि । अरकाशि प्राप्त प्रोफेसर ग्वार कतेक रससँ
डांगरीठाँज ओ रूठ-प्रेसर सदृश रेमाबी सभसँ असु
छथि । गामक घब-घवाड़ पर्यन्त रैचि शहरमे
रैनाओर मकानमे पति-पत्नी एकाकी बहैत छथि ।
रैठा-पुतोह पबदेशमे बहैत छन्हि तँ
हिनकालोकनिक अपि लेनिहार कियो नै छन्हि । नागब
जीवनक चाकटिकसँ सम्मोहित भइ ओ शहर
जीवनमे रसि तँ गेल छथि, झुदा दोबी-डकैती,
लूठ-पाठ, अपहरण, गर्दगी आदि समस्यासँ असु शहर
ग्राम्य जीवनक सौहार्दपूर्ण रातारवणक प्रति आकर्षण
जगैत छन्हि । हद तँ तखन भइ जागत अछि



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,
VIDEHA

माथिलि बिदेह, ISSN 2229-547X

जखन प्रब द्वाबा ए समाद भेटैत छन्हि जे पौत्रक
मुठन घबपव नै भ२ क२ रैष्णो देरीमे होएतनि,
जग जेन हुनकोनोकनिके ओहीठाम एरौक आर्मवण
भेटैत छन्हि आ ओ अपनारके अशिक्य बूनेत छथि ।

ई कथाक माध्यमे मण्डनजी साम्प्रतिक ज़ीरनमे
उपकरन रिसथापनक समस्याक कावणे अरस्था
दोषग्रस्त बूझुआ पीठ की रयथारके अतिरयक्ति
प्रदान कएतनि अछि । ई समस्याक कावणे नोकरी-
चाकरी भेला उतव लोक शिहवमे रसि ग्राम्यज़ीरनक
सौहार्दसँ तँ रयित होगते छथि सगहि बृह्मरस्थामे
जखन परिवारोक लोक हुनक सग छोड़ा दैत छथिन
तँ अपनारके रचित अनुभव कबए नगैत छथि ।

एही समस्याके संग्रहक दोसर कथा “केना ज़ीर” मे
सेहो उठाओन गेल अछि । एकव प्रकष पात्र सेहो
अरकाशिप्राप्त प्राफ़ेसर छथि । ए रैष्ठारके पठ १-
निखा क२ रिदेशी पठयारामे सफल तँ होगत छथि
झुदा रैष्ठारि रिदेशी सभ्यता ओ सभ्यतिक बगमे बमि



जागत ढुनहि आ हिनकाराकनिक खोजो-प्रछावि नै
क२ परैत ढुनहि । पबिषामतः दुनु पबानी एकाकी
जीवन रितएराक हेतु राध्य होगत छथि । एहन
स्थितिमे हिनकाराकनिक तग एकमात्र अरनमरै रैछि
जागत ढुनहि- जिजीरिषा ओ संघर्ष । यएह
जिजीरिषा ओ संघर्ष कवरौक मानसिकता ई कथाक हाग
जीवनक अन्नकुर सँदेशे थिक जे एकबा पूर कथासँ
भिन्न आ स्तवीय रैनरैत छडि । ई कथाक रूझ
दम्पति कथनो हताशे आ निवाशे नै देखि पड़ैत
छथि ।

संग्रहक तेसब कथा ग्राम्य जीवनक पवित्रेमी ध्रुवकक
गाथा थिक जे अपन पवित्रेमक रैनेँ अपन
भाग्यरिषाता रैनन छडि । नरान शीर्षक ई कथामे
मिथिलाक लोक जीवनक रिभिन्न खण्डछि उपस्थित
कएन गेल छडि यथा रूझ-ततादिक पहिन हड
देरतारै चठायरै, गाए रिखाएनापब महादेरैकेँ दुधसँ
अभिषेक कवरै आदि । ग्राम्य जीवनमे पसरैत
जातीय ओ साम्प्रदायिक रिद्धि दिस सेहो ईमे संकेत
कएन गेल छडि । झुदा ई कथामे मिथिलाक



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)
VIDEHA

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

लोकजीवनक आर्थिक स्थिति के रूढ़िमान कबहुँना जग समस्यापव विशेष दृष्टिनिष्केप कएन गेल अछि, से थिक रौटि क समस्या । ई समस्याक कावणे मिथिलाक ग्राम्य जीवनक आर्थिक स्थिति अस्त-व्यस्त भऽ जागत अछि । तथापि ई कथाक नायक आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति अपनाए नर किस्मक धान उगऱैय नगैत अछि, तिमन-तबकाबीक नगदी फसल उपजाऱैय नगैत अछि आ नूतन नस्लक मात्र-जान पोसि अपन जीवन के खुशहाल रैना लैत अछि, रस्ततः ई वैज्ञानिक पद्धति द्वारा मिथिलाक धूमक जीवनक समुन्नति भऽ सकैत अछि, से सँदेशे देर कथाकावक उद्देश्य छन्हि ।

संग्रहक चारिम कथा थिक “तिवासफान्तिक नाग” ई कथामे ग्राम्यजीवनमे पसबन अन्धविश्वासपव प्रभाव कएन गेल अछि । तिवसफान्तिक एकठ्ठा एहन पर थिक जे सोत्साह मिथिलाक घर-घरमे मनाओल जागत अछि । ई दिनसँ सूर्य उतवारण भऽ जागत छथि आ फमशी शीत भूत रसन्त आ गृष्म दिस रैठय नगैत अछि । मिथिलाक प्रशिस्त भोजन चूड़ १-दही



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)
547X VIDEHA

मानकीकृत संस्कृतम् ISSN 2229-

ई दिन गवरीरौ-ग्वरौ धरि थागतै छि। चूड़ १ ओ
झुबहीक नाग, तिनरौ आदि देरताकेँ चढ़ाय प्रसाद
कपेमे ग्रहण कवरै ई पारनिक धृत्य होगत
छैक। शीत भृत्य बहनाक रादो मिथिलाक ग्राम्यजीवन
ई परिक ओबिथाउनमे मास दिन पूरिसँ नागि जागत
छि। झुदा ई परिक प्रसाद ग्रहण कवरौक हेतु
प्रातः स्नान जकरी रूमन जागत छैक। मिथिलामे
ओ अपराद सेहो पसवत छैक जे ई दिन जे
कियो भोरे नदी रा पोखरिमे डूब दैत छथि
हुनका नदी-देरता तत्काले नाग धरा दैत छथि।
एही अपरादपब रिश्नास क२ गोपाल नामक एकठि नैना
राबहे रँजे बातिमे नदीमे डूब देरै चर जागत
छि आ ठँठसँ त्रस्त भ२ जागत छि।
ग्राम्यजीवनक अन्धरिश्नासी समाजकेँ ई कथाक माध्यमसँ
ओ सन्देश देत गेल छि जे रस्ततः ओ पारनि
प्रभृति-पबिरर्जनपब आधारित छि आ ईमे रिन
पाखंड कएने लोककेँ अपन सामर्थ्यक अनुसार समैपब
स्नान कवरौक चाही, नै कि अन्धरिश्नासमे पड़ि
रोगग्रस्त भ२ जएरौक चाही। हवड़ रीतीक उज्जि-
“अहाँ जकाँ बातिमे कुरुब घिसियोने छलौ” जे भोरे
नहा क२ पाक हएरै” अन्धरिश्नासक प्रति रैस प्रहार



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मासिक बिदेह *ISSN 2229-547X*

VIDEHA

कएनेक अछि । कथामे ई पारमिक तैयारीमे जूठन
लोकजीवन अत्यन्त सुन्दर चित्र भेटैत अछि ।

पाँचम कथा “भागक सिनेह” भाग-तैयारीक आपसी
करह ओ आर्तियानक प्रेमक कथा छि । शिष्टदेव आ
रिचाबनाथ दुनू भूँ एक दोसबाक प्रति अगाध प्रेम,
भक्ति ओ रन्ध्रक भार बसैत छथि रूढ़ा देवादिनी
लोकनिक रीति-रिवाज परिवारमे भिन्न-भिन्न
भेद जागत छन्हि । भिन्न-भिन्नक मूलमे
अर्थसन्तुष्ट करैत रहैत अछि । रूढ़ा जखन दुनू
मनमे परस्पर प्रेमक भार जगैत छन्हि तँ दुनू
एकदोसबाक दुःख रीतिरक हेतु तपेव भेद जागत
छथि । ई कथामे प्रेमक जीवनमे परस्परिक
सहयोग, सद्भाव ओ शक्ति अन्तर्गत प्रेमपर आधारित
संयुक्त परिवारक उपयोगिताक परम्परित अनुगायन
देखि पड़ैत अछि ।

संग्रहक छठम कथा “प्रेमी” रसुततः प्रेमकथाक रूपमे
लिखल गेल अछि रूढ़ा ई कथामे बचनकारक उद्देश्य



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,
547X VIDEHA

मानकीय संकेतः ISSN 2229-

समाजिक जीरनमे व्याप्त दहेज प्रथाक क्वीतिके
समाप्त कवरौक सदेशे सएह अतिरिक्त भेल
अछि । पम्पधर आ त्रानचन्द दु गायक छथि । दुनूमे
प्रगाढ़ दोस्ती छन्हि । त्रानचन्दक पौत्र परीक्षा
देरौक हेतु पम्पधरक गाय अरैत छथिन जतए
परीक्षारथि धरि त्रानचन्दक पौत्र लोचन आ पम्पधरक
पौत्री सुकन्याक रीच सराद होगत छन्हि आ दुनू
परस्परान्वक्त भऽ जागत छथि । लोचनकेँ रिदा
कवरौक फ्रमे सुकन्या ओकरे संग ओकरा घब धरि
चलि जागत अछि जे ओहि गाममे गुरुकुलक रसुत
भऽ जागत छैक । रिजातीय बहनाक रौदो पम्पधर
आ त्रानचन्द पावस्परिक मैत्रीकेँ समर्थनमे रँदति
एकठा आदर्शिक स्थापना करैत छथि । पम्पधरक
उक्ति- “जग समाजमे मनुक्खक खरीद-रिक्की गाए-
महीस, खेत-पथाव जकाँ होगए ओग समाजकेँ पथ
तुलक रँनन मनुक्ख कहल जा सकैत अछि ? ज
से नै तँ हमर कियो मानिक नै छी । कियो अर्धवी
देखाओत तँ ओकर अर्धवी काँटि लेरै । ” मे दहेज
प्रथाक समर्थक ओ प्रेम-रिवाज, रिजातीय रिवाजक
अवरोधक तत्त्व प्रभाव कएल गेलैक अछि ।



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

VIDEHA

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

संग्रहक सातम कथा “रौप्योती सम्पत्ति” छषक जीरनमे
जातीय र्वरसायक महत्तरक अरधारणपव आधावित
अछि । सम्पत्ति छषक-मजदुरक पलायनसँ जे गामक
अर्थ-र्वरस्था चवमवा गेल अछि तकवा सुधारबक
हेतु ई कथामे चिन्तनक एकठा दिशा भेटैत अछि ।
कथानायक गुरछैन अपन पिताक सिखाओल र्वरसायसँ
नीक जकाँ पबिरावक पबिपालन कबरौमे सम्मम अछि ।
तँए कथाकावक उद्देश्य ग्राम्य सुधारनमरनकेँ पुनः
स्थापित कबरौक हेतु मात्तादर्शन कबरँ बुझना जागत
अछि ।

आठम कथा “डका” लोकजीरनक अरमुन्यनकेँ
बेथाकित करैत अछि । एकव दूथ्य पाव भैयाकाका
गामक बम्का कबरौक सकनप नह अपनो गाममे
अथड ताक प्रचलन शुक करैत छथि जेसँ पास-
पड़ असक गाम किंरा जमीन्दारक पहलमान
हुनकालोकनिकेँ अरैत बुझि प्रताडि त नै कह
सकनि । ई तबहँ समस्त समाजक हितकामनाक प्रति
हुनका र्वग्रता छन्हि दूदा साम्प्रतिक जीरनमे
सुवार्थक प्रवेशसँ ओ आ जानि रिचनित भह जागत



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)
547X VIDEHA

मानकीय संकेतः ISSN 2229-

छथि जे आरौ गाम-घरक लोकक कल्याणक गप्प तँ
दुब, लोक अपनो सब-सम्बन्धीक खोज-प्रछावि
कवरौसँ कतवयरौक मुखबलिह सस्कार पावय लागत
अछि । हिनक उक्ति- “माए-रौप, भाए-रौहिन सरहक
सरौध आ शिष्टाचार ई कपे नष्ट भऽ बहल अछि जे
साधनाभूमिकेँ मकभूमि रैनरौ अनिरार्य छै” मे समस्त
कथासब अभिरुक्त भऽ जागत अछि ।

नरम कथा “सर्गी” शिक्षा जगतमे भेल अद्यःपतनक
कथा थिक जगमे सुकल-कलत्रेजमे शिक्षाक
रयरसाधिकरणक हलसरकप सामान्य जनसँ छीनल
जागत शिक्षाक समस्यापब रिमर्श भेल अछि, जकब
समाधानक हेतु दुष्टा सर्गी पावस्पबिक परिणयपूर्क
ज्ञान्तिक शिखनाद करैत देखि पड़ैत छथि । कथाक
घटनाक्रम आकस्मिकताक दोषसँ ग्रस्त बुझना जागछ,
जे प्रभारान्तरिकेँ कमजोर करैत अछि ।

ठकहवरौ पूर्ति: राजनीतिक कथा थिक । एँमे
स्वातंत्र्योत्सव भावतमे प्रगति ओ नेतारोचकिक भ्रष्ट



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

VIDEHA

मासिक वार्षिक ISSN 2229-547X

चबिब, मतदानमे गडरैड १ आदिक चित्रा करैत
लोकजगतमे फमशी: पसरैत झुम्झाचाक अतिरेकक
चित्रा भेल अछि जगसँ कोनो रसुतक
रिश्नासनीयतापब प्रश्नचिन्ह नापि गेल अछि । ई कथा
लोकतंत्रमे लोक आ तंत्र दुनूक स्थापनपब सोचरौक
हेतु बिरशी करैत अछि ।

“अतहतह”मे मिथिलाक बैराहिक प्रथामे रबियाती
पक्ष द्वावा सवियाती पक्षकेँ देखाब कबरौक हेतु खाद्य
रसुतपब जेव देरौक परिष्काबक रूपमे सवियाती
पक्ष द्वावा तकब रैदना जेरौक कथा कहल गेल
अछि । ई कथामे रबियाती पक्षकेँ पानिक संग दराग
पिआय ओकवा सभकेँ देखाब कबरौक प्रयास कएल
गेल अछि जे लोकसंस्कृतिक प्रतिकूल हेतुएरौक
कावशे प्रतीयमान नै भऽ सकल अछि । अरश्वे ईमे
रब पक्षमे शिबारी पारि कऽ रबियाती जेएरौक
आधुनिक प्रचलनक बिकल्प आकाशिक अन्तरिक्ष भेल
अछि । मण्डलजीक ई कथा कन्यादान-रवदानमे दू
पक्षक सम्मान बक्षक पावस्परिक दायित्वक प्रति
कान्तासन्धित उपदेशि दैत अछि ।



बाबुल कथा “अच्छागिनी” ई पोथीक नामकवणक आपाव
बैनल अछि । ई कथामे अरकाशिप्राप्त शिक्षकक
अत्यन्त सूक्ष्म मनोरिक्लषण भेल अछि । अपन
कमागक बनेँ ओ आजीवन अपन पनीक दासीसँ आगु
बुमराक हेतु तैयार नै होगत छथि झुदा जखन
नोकरी समाप्त भऽ जागत छन्हि तखन पनीक
आरयकतापव पियान जागत छन्हि आ अच्छागिनीक
महन्तर बुमि पुरैत छथि । लेखक नाबीक मेरिका
स्रकपर्के मर्यादित कए ओकरा प्रकषक समानान्तब
मुन्य प्रदान कबरक पक्षपाती छथि, जकर
अभिरुचि ई कथाक लक्ष्य बुमना जागत अछि ।

तेबहु कथा थिक “ऑपरेशन” ई कथामे मर्दुंगव
नेनाक सामाजिक स्थितिपव रिमर्श कएल गेल अछि ।
जखन कोनो नेनाक माय असमय कारककरनि भऽ
जागत छैक, तँ समाज ओकरा अलच्छ कऽ कऽ बुमय
लगेत छैक आ ककरो ओकर शारीरिक ओ मानसिक
रकासक चिन्ता नै बहैत छैक । झुदा जँ ओहि
रिच्छाक पिता दोसर रिवाज कऽ ओकर प्रतिपादनक



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,
VIDEHA

मासिक चरित्र, ISSN 2229-547X

हेतु, स्थानापन्न माताक रयरस्था करैत छथि तँ रएह
समाज रैब-रैब आ जनरक प्रयास करैत छथि जे
सतमाय ओकर पालन नीक जकाँ क२ बहन छैक रा
नै। समाजक आ रयरहाव ओकर क्व मानसिकताक
पबिचय दैत छथि जेसँ नैना आ ओकर पिता आहत
होएरक लेल रौप्य होगत छथि। लेखक समाजक
ई रिकपित मानसिकतापब रयरग्य कवरै ई कथाक
उद्देश्य बखनि छथि। एही माध्यमसँ अस्पतालक
दूरयरस्था तथा प्रागरेष्ट प्रेक्टेसक कावणपब सेहो
रिमर्श कएल गेल छथि।

चौदहम कथा “धर्मनाथ” ठहैत जमीन्दार परिवारक गाथा
थिक। ईमे देहेज प्रथाक उन्मूलनक हेतु सामाजिक
जागरण कथाकारक उद्देश्य बुझना जागत छथि।
एकर नायक धर्मनाथ जमीन्दार परिवारक छथि आ
पिताक अमरदाबीमे धरि हुनक परिवार देहेजक
संतोषक बहन छथि आ खेत रैचि-रैचि कन्यादान
करैत अपन कलाभिमानक ब्रह्मा करैत बहन छथि।
झुदा आ मिथ्याभिमान जमीन्दारी उन्मूलनसँ स्फुट-
रिस्फुट भ२ गेल छैक आ धर्मनाथ ई स्थितिमे नै
बहि पड़ैत छथि जे पुरीक रिराह जमीन्दारे



पवित्रावमे कवराक हेतु धन जुष्टा पारथि । अन्ततः
उ प्रा. वामवतन मन दहेजरिरोषी र्यक्तिक
सहायतासँ एकठा कर्मयोगी रावकसँ अपन रैष्टीक विराह
ठीक क२ त्रैत छथि आ मिथ्या प्रतिष्ठाकेँ छनौती
दैत छथि । पवित्रामतः हुनक पिता अपन
रुद्राभिमानपव प्रहार होगत देखि मृत्हाकेँ प्राप्त क२
त्रैत छथि । पिता-पुताक थपड़ १ रजा-रजा ए
कहर जे- “रौरा रुगलाह- पूर्वी-जिनेरीक भोज
थायर..” रस्ततः पवम्पवा आ अन्धविश्वास जकड़न
सामाजिक र्यरस्थाक रिनाशिक प्रति उत्सर्ग थिक जे
दहेज प्रथाक उन्मूलनकेँ सकेतित करैत ए ग्रासित
करैत छथि जे ई लोक मिथ्याभिमानक त्याग नै
कवताह आ दहेज देर-लेरकेँ सामाजिक प्रतिष्ठाक
मानदंड रैनौने बहताह तँ अद्यः पतन अरक्ष्यम्भारी
छथि ।

“सरोजिनी” प्रेमरिराहपव आधुनिक कथा थिक ।
नायिका सरोजिनी जमीन्दार घरक कन्या छथि ।
हिनक भाय द्वादशनावायषा रिद्वैतिन कन्यासँ प्रेमरिराह
क२ लेने छथिन । ओहो अपन रावस्था बमेशीक संग

87



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,
547X VIDEHA

मानकीकृत संस्करण ISSN 2229-

संग्रहक मोहनम कथा सुभद्रा रिपरा रिवाहक
समस्यापव आधाबित छि। दैरयोगसँ सुभद्राक
पतिक देहान्त हराग दुष्टिनासँ भ२ जागत
छन्ति। ओ अभिनिपुत जीरन रितएराक हेतु राध
भ२ जागत छथि। एकव कावण ग्रा छि जे ओ
जग जातिमँ अरैत छथि तगमे रिपरा रिवाहकेँ
मान्यता नै छैक। कथाकाव कपलान राँरा नामक एक
गोष्ठे गाँधीरादी चरित्रक अरतावणा करैत छथि जे
नारी सङ्गत्थानक प्रति समर्पित छथि। हिनक मान्यता
छन्ति जे जहिना पनीक ऋगना उभव पतिकेँ दोसव
रिवाह कवरैक अधिकार छैक तहिना पतिक ऋगना
उभव पनीयोकेँ दोसव रिवाहक अधिकार छैक
चाही। कपलान राँरा सुभद्राक पितारकेँ मानाय सुशील
नामक हारकसँ ओकव रिवाह सम्पन्न कवरैत छथि। एँ
तवहँ समाजमे रिपराकेँ मान्यता छैक।
आदर्शरादी संकल्पनापव आधाबित ग्रा कथा रसुततः एँ
सामाजिक समस्याक प्रति कथाकावक प्रगतिरादी
मुन्यकेँ उद्घाटित करैत छि।



“সোনমা কাকা” ঐ স্রংহক সতবহম কথা থিক । গু
কথা মানর ধর্মপব খাপাবিত খ্দি । একব প্রধান পাত
সোনমা কাকা স্র্য পনৌক রীমাবীসঁ এস্‌ত ডুথি ।
ওকব গরাজ কবা জখন গাম ঘুম্‌ত ডুথি তঁ
বামকিস্বন নামক একষ্টা রিংড’র ব্যক্তিক মৃত্যক
সমাচার ভেট্টেত ডুন্‌হি । ও ব্যসনক চক্‌মে পড়া
ততেক নিৰ্‌ধন ভং গের ডুর জে ওকবা কখনো
ধবিক উপায় নে ডুলেক । সোনমা কাকা সমাজক
সহাযতাসঁ ওকব সস্‌কাব কবরৈত ডুথি থা ওকব
খনাথ রাতকক্‌ ঋপন রেষ্টীক সর্গ বিরাহ কবায ওকব
জীরনক্‌ সামান্য রনেরাক প্রযনে কবৈত ডুথি ।
কথাকাব ঐ আদর্শ পুঙ্‌ক স্থাপনা কএ গু সিঙ্‌
কবএ চাহিত ডুথি জে জঁ সমাজ চাহ্য তঁ কেহনো
পৈঘ সমসযাক নিদান ভং সকেত ট্‌ক ।

অষ্টাবহম কথা “দোতী রিঁয়াহ” পবিত্রকৃতাক
পুনর্নিরাহপব আধাবিত খন্ডি । একব প্রদ্ধখ প্বকষ
পাত্র উমাকান্ত দুখি জে পচাস রষক আছামে পনৌক
দেহারমানক কাবশে একাকী জীরন জীরোক হেত্তু রাণ্ধ্য
দুখি । জীরন সগিনীক অভারমে হিনক দিন কাষ্টর



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)
547X VIDEHA

मानवसिंह बरकतुल, ISSN 2229-

पहाड भ२ गेल छन्हि । दोसब दिस यशोदिया नामक
एकठ्ठा घरती छथि जनिक पति दिवलीमे नोकरी
करैत छथिन झुदा शिहरी चाकचिक्यमे पढ़ि
यशोदियाकेँ पबित्यक्त क२ कतह पढ़ । जागत
छथि । निस्सहाय यशोदिया गाम घुबि अरैत छ्छि आ
हबिनाबायण नामक एक गेष्ट सम्झान्त रयक्तिक
आश्रममे बहि जीरन-यापन कबए लगैत छ्छि ।
हबिनाबायण उमाकान्तक स्थितिरेँ पबथि हुनका
यशोदिया सँग बिराह कवा दैत छथिन जेसँ दूनुकेँ
अरनमरँ भेटैत छन्हि आ दुष्टा उज्ज्वल पबिराव रसि
परैत छ्छि । ई कथाक माध्यमे कथाकारक आ
उद्देश्य स्पष्ट होगत छन्हि जे मानव जीरनकेँ
सन्तुष्टि बखरौक हेतु पति-पनीमे कियो जँ
एककी जीरन जीरैत छ्छि, तँ ओ अनेक प्रकारक
मानसिक रयथामे पड़न बहैत छ्छि जेकर निदानक
हेतु समुद्र हागर रैनयरौक हेतु प्रयत्न होएरौक
चाही ।

ऊनैसम कथा “पढ़ गन” ग्राम्य जीरने पसबन
अवाञ्छितक कथा थिक जेकरा कारणेँ रैनगब लोक
निर्दोषकेँ सता क२ ओकरा गामसँ उपेक्षितपव लागत

“କତୌ ନେ” କଥା ସଂଗ୍ରହକ ଶ୍ରୀମତୀ କଥା ଥିକ ଜେ
ରସ୍ତୁତ: ଯାତ୍ରା-ବୃତ୍ତାନ୍ତ ଥିକ । ଏମେ ଜନକପୁର ଯାତ୍ରାକ
ରସ୍ତା ଆସୁଅଛନ୍ତି । ଗାମକ ଏକଟା ଶୈଳୀ ଜନକପୁର
ରାସ୍ତା ପଞ୍ଚମୀକ ମେଳା ଦେଖିବାକ ହେତୁ ପ୍ରସ୍ଥାନ କରୁଅଛନ୍ତି
ଏହି ଲୁଗା ରାସ୍ତା ପଞ୍ଚମୀ ଦିନ ଶ୍ରୀ ଲୋକନି ସମ୍ପ୍ରଦାୟ ଦର୍ଶନ
କରୁଅଛନ୍ତି ହେତୁ ଜାଗତ ଛାଡ଼ି ଆ ଓଡ଼ିଶା ଗାଡ଼ି ଖବାର
ଭେଦ ଜଣାଇବାକ ରାସ୍ତା ପଞ୍ଚମୀକ ବାଟିରେ ପ୍ରସ୍ଥାନ
ଜନକପୁର ଘୁମି ନେ ପରୁଅଛନ୍ତି ଛାଡ଼ି ଶ୍ରୀ ଲୋକନି



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,
547X VIDEHA

मानुषिह संस्कृतम् ISSN 2229-

जनकपुवक कार्यक्रम देखरौक अरसब नै भेटै पुरैत
छन्ति । अन्ततः हारि-थारि क२ सब सोचैत छथि
जे कबु एलौ त कबु नै । दूर्योगरशोत्
मनोवथपुर्तिमे राधा हेरौक ई कथामे रसुततः
जनकपुव यात्राक एक गेष्ट मनोवम रूतान्त भेटैत
छडि ।

ई तबहै अछुगिनी कथा संग्रह मिथिलाक ग्राम्य
जीवनक रिभिन्न आयाम ओ समस्या तथा तकब समाधान
सररूक आदर्शोन्मुख यथार्थरादी रूयाख्या थिक ।

ई संग्रहक कथा सब रूनि-प्रधान देखि पड़ैत
छडि । कथाकावक शैली एहन छन्ति जे ओ कोनो
घटनाकै प्रसुतत कवरौसँ पुरि ओकब पुरीरौठिकाकै
ततेक सघन क२ दैत छथि जे पाठक तगमे
तनूनीन भ२ जागत छथि । ई प्रकारक रूनि-रिन्वास
हिनक ओपन्यासिक रूठिकै स्पष्ट करैत छडि जगमे
रूनिनक हेतु पयाप्त अरसब बहत छैक ।



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,
VIDEHA

मासिक चक्रान्तर, ISSN 2229-547X

मनोरिग्नैषण मण्डनजक कथा सरैक अन्यातम
रिशिष्टता थिकनि । अ जग कोनो पावकें प्रसूत
करैत छथि तकव अन्तस्तनमे प्रेरेश कए ओकव
भारवाशिकें अतिर्यक्त क२ दैत छथि जगसँ पावक
चक्रि स्रतः स्फुष्ट होमय नगैत अछि । उदाहरणार्थ
“रैपौती सम्पत्ति” कथामे ग्रन्थेनक मानसिक
स्थितिकें अतिर्यक्त करैत अ पाँती द्रष्टर्य अछि-
“मनमे उठलै प्रबने कपड़ । जकाँ परिवारो
होगए । जहिना प्रबना कपड़ ाकें एकठाम काँठ
सीने दोसवठाम मसकि जागत अछि, तहिना परिवारोक
काजक अछि । एकठाम प्रबाड दोसव आरि जागत ।
झुदा चिन्ता आगु झूठे नै समरि बकि गेलै ।
चिन्ताक अँकिते मनमे खुशी भेलै । अपनापव
ग्रानि भेलै जे जग पवतीपव रसन परिवारमे
जन्म लेलैक सेहन्ता देरी-देरताकें होगत छन्हि
ओका हम मायाजान किअए बूनेत छी । अ दुनियाँ
ककवा लेल छै ? ककरो कहने दुनियाँ असत्य भ२
जागत । अ दुनियाँ उपयोग करैक छैक नै कि
उपभोग करैक । ”



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,
547X VIDEHA

मानकी बिदेह बिदेह, ISSN 2229-

मण्डनजी कथा भाषामे मैथिलीक गमैया रौनी-
राणीक सहज स्वरूप अभिरुचक भेल अछि । ए
पात्रानुसंग भाषाक प्रयोग कएनि अछि जेह
प्रत्येक पात्रक रौखिक ओ सामाजिक स्थिति स्पष्ट
होगत छल जागत अछि । हिनक कथा सभमे
कथाकारक भाषा सेहो मैथिलीक लोकजगतक
भाषाहिक अनुगमन करैत अछि जेहमे सहजता
अछि । कनेको द्वितीय प्रयोगसँ ए रचित बहल
छथि । हिनक भाषामे तन्दुर ओ देशीज शब्दक प्रचुर
प्रयोग भेल अछि । हगम शब्दक प्रयोग हिनक
भाषाकेँ नावित्य प्रदान कवरामे आ ओक
प्रवाहमयतामे सहायक बहनि अछि । उदाहरणक हेतु
मान-जान, नैर-दैर, दोकान-दौबी, चष्टी-रष्टी,
ताड़-दक, दुहब-महब, टोबी-डकैती, रौन-रौध,
रैष्टी-प्रतोह, भोज-काज, अन्हब-रिहाड़, दाब-
मदाब, सुक-पाक, भुखन-दुखन, चीज-रौस, घुसका-
हुसका आदिकेँ देखल जा सकैछ ।

मण्डनजी कथा भाषाक ए अनूतम विशिष्टता थिक
जे ए कोनो स्थितिकेँ पाठकक समक्ष अभिरुचक
कवरौक हेतु चमत्कारिक उपमानक प्रयोग करैत



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

VIDEHA

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

छथि जगसँ रसुतसुथितिक सुपसुठ छि पाठकक सोना
आरि जागत अछि यथा- “जहिना थढ़ एत खेतमे
हबराहकेँ हब जोतरँ भविगब बुनि पड़ैत छैक
तहिना सुशीलक मन समस्याक रौनाएत रुप देखतक ।
जहिना पहाड़सँ निकलि अनरवत गतिसँ चलि नदी
समुद्रमे जाय मिलैत अछि तहिना ने ठंठघबक ज्ञान
उड़ि कऽ सर्रोछि ज्ञानक समुद्रमे मिलत । ”
आदि ।

एतारता कहल जा सकैछ जे मण्डनजीक कथा
रूपनक दृष्टिअः मिथिलाक ग्रामजीवनक यथार्थरूपा छि,
घटनाक दृष्टिअः आदर्शक प्रति अभिभूत, सूक्ष्म
मनोरन्ध्रक प्रति प्रतिरूप तथा उद्देश्यक दृष्टिअः
लोक मंगलकारी अछि । मैथिलीक आधुनिक कथा लेखन
हिनक बचना सभसँ समरूपित भेल अछि आ एकव
समाजोपयोगी तत्व सभ अनन्त काल धरि मिथिलाक
लोकजीवनकेँ प्रेरित-प्रभावित करैत रहत ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मानवीय बिदेह बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

ई कनापव अपन यंत्र

ggajendra@videha.com पब पठाड ।



शिरुमाव मा 'ष्टिबु'

मैथिली कथा साहित्यिक विकासमे बाजकमक
योगदान ::

सन् 1954 मे “अपवाजिता” कथाक सर्ग बाजकमन
जीक मैथिली कथा साहित्य जगतमे प्रवेशि भेल ।
हिनक मूल नाँ मनीन्द्र नावायण चौधरी छन्हि ।
1929मे जनमल ई साहित्यकारक लेखनीसँ मैथिली
साहित्यकेँ लगभग 36 गोष्ठ कथा भेटैत । मात्र 38
रबखक अपन जीवनकालमे बाजकमन मैथिली गद्य
साहित्यकेँ किछ एहेन प्रति दह देलनि जेसँ



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,
VIDEHA

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

प्रयोगकेँ रौदक धरातलपर प्रतिष्ठित कबरौक श्रेय
साहित्यक समालोचक लोकनि ई साहित्यकावकेँ
निर्भरिद कर्पे दह बहन छथि।

हिनक तीन गोष्ठ कथा संग्रह ललका पाग, एक आन्हव
एक रोगाह आ “नि नमोही रौदम हममब” पुस्तकाकाव
प्रकाशित छन्हि। एकव अतिविकृत हिनक एक गोष्ठ
पोथी “छाति बाजकमलक” मैथिली अकादेमीसँ
प्रकाशित भेल अछि जगमे 13 गोष्ठ कथा आ एकठा
उपन्यास आन्दोलन संकलित अछि। ओना
छातिबाजकमलक छठ गोष्ठ कथा “ललका पाग”मे
सेहो छपल अछि।

बमानाथ नाक मतेँ बाजकमलक कथा मूल उद्देश्य
मनोरंजनमय प्रणालीसँ आरोपित मर्यादा ओ आदर्शक
पाछाँ नुकाएल आन्हवकेँ नाउठ कबरौ अछि। डा.
डी.एन. ना सेहो ई मतसँ सहमत छथि।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,
547X VIDEHA

मानकीकृत संस्कृतम् ISSN 2229-

“नरका पाग” कथा हिनक निखन कथा सभमे अपन
रिनिष्ठ स्थान बथैत छन्हि । ई कथाकेँ मैथिली
साहित्यक किछु श्रेष्ठ कथामे स्थान देबै सर्रथा
न्यायोचित छिट्ठि । कथाक आरंभमे मैथिली स्त्रीक
चिन्हरीक रिनिष्ठमे कोनो अचबज नै । विप्रवाक
तुलना जग रत्नाक मैथिली नाबिसँ कएन गेल कथाक
भूमिकामे ओग रत्नाक स्पष्ट उल्लेख तँ नै कएन
गेल अदा ओ अलक्ष पबिरावक कन्या छथि ।
अनुपायमे पण्डित पिताक मृत्युक पश्चात् तिक
अपन मागक संग गाममे बहैत छलीह । अग्रज
निग्वनाथ राहब धन उपार्जन लेल चलि गेलाह ।
किछुए रर्रमे तिक हारती रयसमे प्रवेशे क२
गेलीह । दस-एगावह रर्रक राँद जखन निग्वनाथ
अपन गाम घुबि अएलनि तँ मातृसिनेहक संग-संग
तिकक हाथ पीथब कवरौक जिम्मेदारीक आभास
भेलनि । रास्तरिकतो डेक जे जखन ए कथा
1955मे बिदेह रिनिष्ठमे देल गेल ओग कारकेँ के
कर्र रर्रमान समेमे सेहो अपना सर्रहक समाजमे
कन्याक जन्म कारहिँ रिनाहक चिन्ता अतिभारकर्र
सतर्रए नगैत छन्हि । तिक तँ माघमे 14मे रर्रमे
प्रवेशे क२ जेलीह । उद्देश्य जेँ सार्थक हूँ तँ
सफलता निश्चित भेलै करैत छिट्ठि । चण्डीपुवक



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,
VIDEHA

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

बाम सागब चौधरीक सुपुत्र बाधकान्तसँ सूर. पण्डित
हेकनाथ माक पुत्री विप्रबाक रियाह सम्पन्न भेल ।
सासुर आरि तिक कनेको सुतर्ष नै छथि कि एक तँ
जीवन शरीर कोनो ज्ञान नै छन्हि । अज्ञानतामे
रौंड़ कि पछुआबमे पोथवि देखि अपन रैमात्र सासुरसँ
हेनरौक कनाक जिज्ञासा कएनि । यएह जिज्ञासा
हुनक जीवनक नेर कार भऽ गेलनि । चननपुवराणी
सासुर भोरे-भोव समस्त गाममे अफराह पसावि
देखिन जे बातिमे नरकी कनियाँ पोथविमे छुलकि
बहर छलीह । बाधकान्त ई घटनासँ मर्महित भऽ
गेलह । आरि प्रश्न उठैत अछि जे चननपुवराणी
एना किथए कएलीह ? ओ अपन पितृगत भाय डा.
शंभूनाथ मिसरक सुपुत्रसँ बाधकान्तक रियाह कवरैए
छाँह छलीह । ई ठाम कथाकार कनेक छुकि गेल
छथि । ई उद्देश्यकेँ कतौ स्पष्ट नै कएल गेल ।
माए जौ अपन रैष्ठिक रियाह कोनो ठाम कवरैए छाँह
छलीह तँ विप्रबासँ कोना भऽ गेलनि । जखन की
चननपुवराणी परिवारक अतिथारिका छलनि । हुनक
पतिक हुनकापव कोनो विशेष अवशिष्टन सेहो नै
छलनि आ नै बाधकान्त विप्रबासँ प्रेम रियाह केलनि
तँ कथानकमे एहेन परिवर्तनकेँ सोनै-सोनै
आत्मसात् कवरै कनेक कठिन लागि बहर अछि ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)
547X VIDEHA

मानकीसिंह बरकतुल, ISSN 2229-

गाममे तँ कुठनीति चरिते छि कि एक तँ दुनु रोजी
रोजगावपव रैरोजगावी भारी । तँए भोनामासूँव आ
रँगष्ट चौधवी सन पविराव रिधूसक केँ बाधाकान्त सन
सरेदनशील लोककेँ दोसब रिघाह कबरौक प्रेषणा
देरैएमे यथार्थ रौध होगत छि । ए सब घटना
चक्रमँ कथा रोचक होगत छि । झुदा कथाकेँ
आकर्षक रैनेरौक एममे बाजकमन रिसवि गेलाह जे
त्रिपुरा मात्र 13-14 बरसक रौनिका छथि । जखन
पोथबिमे छुत्करौक जित्तासा मासुरोमे छुन्ति तखन
सौतिन अएरौक संभारनाक मध्य अपन सकल गृहस्थ
कार्यमे कोना लागल बहलीह ? एक दिस चंचल कपक
उद्घाटन आ दोसबा कपमे पविपकर नाबी, एकबा
प्रयोगराद तँ कहल जा सकैत छि झुदा
प्रयोगात्मक कपसँ रास्तरिकतासँ रहूत दुब ।
बाधाकान्त सेहो शिक्षित छथि, मात्र अपन स्त्रीकेँ
पोथबिमे स्नान कबरौक सजाक कपेँ दोसब
रिघाह । ओना मिथिलामे पहिने गप्पे-गप्पमे रिघाह
कबरौक गतिहास बहल छि पर्वच ई प्रकारक रिघाहक
काबण समीचीन नै लागल । अंतमे अपन रिघाह
कालक बाखल ललका पाग जखन त्रिपुरा बाधाकान्तकेँ
दोसब रिघाहक लेल प्रस्थानकालमे दैत छथिन तँ
बाधाकान्तक हृदय परिवर्तन भऽ जागत छि आ



पहिलक तलका पागक मयादा बथराक लेल ओ छप्प
भेअ आंगनमे आरि कसपव रैस जागत छथि । एह
घटनाक्रममे कथा रास्तरिकतासँ रैसी कल्पवृक्षक
प्रभु प्रतीत होगत छथि । जे बापाकान्त मात्र
पोखरि स्नानक दंडमे विप्रवास नारीक अधिकार छनि
लेराक निर्णय केनि ओ अंगुलिमार जकाँ क्षणमे
कोना रैदनि गेलाह । ओ झुर सत्य छथि जे मैथिल
जादू पवित्रावमे तलका पागक स्थान विशेष छैक आ
ओ पागकेँ सहेजि कइ विप्रवा धने छलीह ।
भगत पवीक्षा जकाँ सौतिन अनराक लेल पतिक
हाथमे पाग देराक निर्णयमे अंगुलिमार कपी
बापाकान्तकेँ बुझसँ दर्शन भेलनि । जेँ एकवा संभरो
मानल जाए तैयो कनेक कमी ओ जे बापाकान्त
विप्रवाक तलनामे कामाख्या दागक संस्कारकेँ सोचि-
रिचावि रिशिष्ट मानि दोसब रियाह कबराक निर्णय
कएनि । कोनो क्षणमे नै । ई रियाहक सुप्रभाव
हुनक रैमात्र माए छलनि । चननप्रवरातीकेँ अछैत
बापाकान्त माथपव रिन पाग धने कोना रिदा भेअ
बहल छलाह, ओ तँ सत्य कथाक रैत कमजोब पक्ष
छथि ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)
547X VIDEHA

मानुषीह संस्कृतम् ISSN 2229-

भाषा रिक्तानक आधावपव जौं मुत्थाकिन कएत जाए तँ
कथाकाव पवम्पवारादी मैथिल साहित्यकाव जकाँ
गद्यकेँ अधोषित त्रुंगावक कप देरौक प्रयास
कएतनि ।

तिकक तुतना राश भष्टक श्यामांगी नायिकासँ कबए
कान ग्रा उद्धश्य स्पष्ट भइ जागत अछि । झुदा
जखन निथेत छथि जे “मिथिलाक छोट १ सभ अहिना
करैत अछि । ” तँ स्पष्ट भइ जागत छन्हि
आत्मिक कपसँ किछु आव कहए चाहैत छथि । ईठाम
छोट कि स्थानपव ‘कन्या’ शैर्दक प्रयोग सेहो
कएत जा सकैत छल जे रैसी नीक लगैतए ।
कामाख्या दागक रिषयमे बाधाकान्तक मौन सिनेहमे
मिथा आ आ जाइ..... निथरौक उद्धश्य स्पष्ट नै
भइ सकल ।

ग्रा सत्य अछि जे बाजकमल मैथिलीक संग-संग
हिन्दीमे सेहो निथेत छलन्हि, झुदा हिन्दीक प्रति
नम्रपन सिनेह मैथिली कथामे परिवर्तित भइ गेल ।
ग्रा मैथिली साहित्यक लेल दुर्भाग्यक गप्प जे ई
भाषाकेँ दुर्भाषी बचनाकाव मात्र अपन नाँ-गाँक लेल



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,
VIDEHA

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

हथियाव रनेननि मातृभाषा सिनेहसँ साहित्यिक बचनाक
कोनो सर्प नै । ओना ई प्रकारक कथ्य यात्री आ
आवसीक बचनमे नै भेटैत छि । कथोपकथनमे
रिरोधाभास देखनाक बादो एकबा नीक बचना मानल
जा सकैछ कि एक ठँ कथा रहू आकर्षक छन्हि । जौ
रिम्बरक रिश्ताकेँ शिल्पक रूपमे देखल जाए तँ
बाजकमनजी स्थापित शिल्पी छथि आ नरका पाग
प्रकट भै गेल ।

क्रमशः

ई कनापव अपन मत

ggaj_endra@videha.com पब पठाउ ।

बि एच ए विदेह *Videha* विदेह विदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* विदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका विदेह १०१ म अंक ०१ मार्च



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,
547X VIDEHA

मानवीय संस्कृतम् ISSN 2229-

३. पद्य



३.१.१. कामिनी कायायनी- करी
सा



३.२.१. उमप्रकाश सा- करी/ गजल/
गीत- करिता



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,
VIDEHA

मासिक संस्कृतम् ISSN 2229-547X



३.३.१.

बाजदेर मण्डन २.



अमित मिश्र-



गजल -करिता ३.
सभसँ आग्र आग्र छी

जगदानंद सा 'मनु' करिता



३.४.१.

सदीप कुमार साह- भक्तजोगनी।



रसंत पंचमी.

डा. अरुण कुमार सिंह



३.

उमेश पासवान

वामरिनास साह ४.



बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०१ म अंक ०१ मार्च



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,
547X VIDEHA

मानवविज्ञान संस्कृतम् ISSN 2229-



इ.उ.१.

जगदीश प्रसाद मण्डल चंदन कुमार



सा ३

नन्द रित्नास बाय



इ.उ.१.

नाबायण सा २



निशीत सा



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,
VIDEHA

मासिक अंक, ISSN 2229-547X



३.१९.

प्रीति प्रिया मा २.



परन



रुमाव साह ३.

डा. शशिधर रुमाव



३.१९. बमेश मण्डल

मोन रुमाव मा



‘बगिया’
बाउत

किशन कारीगर ४.



कपिलेश्वर



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,
547X VIDEHA

मानक संख्या ISSN 2229-



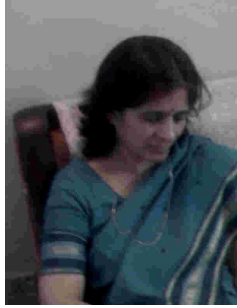
१

कायिनी कायायनी



करी न्ना

१



कायिनी कायायनी

कायन बाग

कायन मे बास बचाऊ सखी कायन मे. . . 2. .
पीयरी पहिबने खेत मे देखियौ. . .
नाचि बहन छडि जौरन. . . .
सिनुबिया सन दहकि बहन छडि. . .
चाककात रन उपरन
गवमाछै स भवन ग सुबज .. .
थारै नै मुह नुकारै. . .



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

VIDEHA

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

जोब जोब स चलेत रसती. . .
सेहो डहकन गारै.
मन उमकि बहल रैजोड . .
चाह सीमा तोडि लै हाथन मे. । । 2
असगब कोना बहर हाग मे
हिय हमर नहि मानै. .
गाढु रिबिडु सरु झुसिक बहल अछि
कि सोछै कि जानै. . . .
आस रैठा क' पाती लिख. .
पठरैत हम प्रियजन के. . .
मग मे रैसर रिहसि उठैत छी. .
दीप जवा नैनन के. . . .
हमर आंगन झलक धाम रैनर हाथन मे । । 2
गठजोबि खेनु हाग सखी हाथन मे. . . .
आ पुआ आ मारपुआ. . . .
आ दहीरैडा. . . . मुगरा गमवती . . .
पहिने खेनु हाग पोख भवि
पेछ मे तखने ससवती. . . .
रिन पीने . . मदिवा भाग . . रौरेलौ हाथन मे. . .
..
रैनजोबि खेनु हाग सखी हाथन मे. । । 2



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,
547X VIDEHA

मानवसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-



करी या

१

निर्मोही

निर्मोही संग जेवत प्रेम क कहानी ,
साने छी नोबसँ प्रेमक पिहानी ,
मौधमे रौबि-रौबि कहै छलाह .
... तखन केहन ओ प्रेमक रसना ,
केने सबारौब छुथि ओतरे ,,
नोबसँ हमब दुनू नयना ,
हाथमे हाथ दहै रसमरै,
कोना ओ प्रेमक परिभाषा .
हज्जि अब खंड केलाह आग ओ ,
हमब मोनक सब आशि ,
मोन मे आशि छल कष्टरै,



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

हुनका सँगे जिनगानी,
किछु दितौं किछु नितौं ,
हम हुनका प्रेमक निशानी ,
हुनक झुठार बसिक झुमर ,
केब होग अछि तहिना ,
बस पिरँथि चँपा चमेली ,
थन गुनार पव तहिना ,
जुनी कहिओ कवर रिस्रॉस ,
पुखथ प्रेम पव यै सहेली ,
कहिओ नै सुनहए उतमार
बहए सदिखन अ अछि पहेली
पुखथक , प्रेम जेना कागजक नैया ,
भिजय तँ गोरब सुथय तँ कगया

२

ओठनी बाव

ओठनी बाव चुनव के ,
निपटि निपटि क२ अहाँसँ,
हम्मर पासन नयनकेँ,
सदिखन ठँसरेत बाथेत छल ,
कখনो उडए ओ नकोर हरा सँग ,
कখনो समेठी जाग राहिमे ,



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

547X VIDEHA

मानक बिदेह बिदेह ISSN 2229-

कथनो कान्हा पब रौफन भय ,
ससरेत खसकैत बहैत छन ,
हुनक कानमे जा क२ कथनो किछ
छातीसँ कथनो सँष्टि जागत छन ,
हुनक धरकन केँ गिनि गिनि क२ ,
ओ उठैत रैजरेत बहैत छन ,
कथनो हुनकब कमबरँद रँनि ,
कथनो गानकेँ छरैत छन ,
कथनो पीठ पब जा क२ रेशेबम ,
ससरेत ठनकैत बहैत छन ,
कथनो तँ देखु ओ जाजिम रँनि क२ ,
कथनो कोबामे सुति जागत छन ,
कथनो हुनकब हाथकेँ ई दूनारे ,
सदिखन हमबा सतरेत छन ,
एकबा माथ पब नै बखु अछा ,
अछाक ओठनी अछि हमबा दुश्मन ,
हमबा अछाक रीच आरि क२ सदिखन ,
किएक ओ रेशेबम बहैत छन ,

ई कनापब अपन मँतर

ggajendr a@videha.com पब पठाड ।



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मासिक *बिदेह* ISSN 2229-547X

VIDEHA



उमप्रकाश ना

बराँध/ गजब/ गीत-करिता

बराँध

जोना क२ बंगलक करेज केँ ए बंगलेज, बंग छुटै
ले ।

नेन पियासत छोटि गेल, झुदा खास मिनक छुटै
ले ।

हमरा छोटि तडपेत पिया अपने जा रसना मोर्ग,
बूमथि बिबहक ले मोर, भाग्य ए ककरो एना छुटै
ले ।

गजब

किछु हमर मोन आग रस कह२ चाहि ए ।

अहीक रनि क२ सदिखन तँ ए बह२ चाहि ए ।



अ तारी ठोवक तँ अछि जाननेरा ये,
अछि अ धाव बसगव, सँग रहै छै ए ।

अहाँ काजब नगा क२ अन्हाव केने छी,
रैबखत सिनेह घन कथन दहै छै ए ।

अहाँ फेँकु नहि अ माक्क सन झुझी,
रिना मोत हमब करेज ठहै छै ए ।

रिन अहाँ "ओम"क स्त्रथो छै दूध रैरोरैवि,
सरै दूध अहाँक अ करेज सहै छै ए ।
(रैहरे-हजज)



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मासिक बिदेह *ISSN 2229-547X*

VIDEHA

गजव

रौतबक शत्रु हारि गेल झुदा मोन एखनहुँ कारी
थुँडि ।
नागबि नहि कष्ट कइ झुडी कष्टरै कइ हमब रैमावी
थुँडि ।

तेन सँ पोसने सौग बथे छी रार्थ कोना हम होरैय
देरै,
थुँडा अपन गाडरै ओते जतइ सभक सँमिया रौडी
थुँडि ।

पेठे भवन थुँडि तेँ थुँर भेजा छै ए, तेँ तइ हम
थोथ छी,
तोतक कियो रँजारै, मस्तु भेल रँजैत हमब थावी
थुँडि ।

जीतरौ नेल ठेवी बण रौचन, एखन कहाँ निचेल हम,
केहनो ग रूह होय, छुँठरै कबते जँ पूवा तैयावी
थुँडि ।

डाह-घृणा केँ अहाँ कात कक, ग अम्र शिखर ले
कमजोवी छै,
आँ सँ ओहिठाम जतय बँह "ओम" प्रेम-प्रजावी



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,
547X VIDEHA

मानक संख्या ISSN 2229-

अङ्क १।

सबन राप्तिक रँहव रँप २२

गजव

हमर झुझीक तब माँपन करेजक दर्द देखतक नहि
अ जमाना ।

सिनेहक छेष्ट माकक छन पीडा जकब बुझतक नहि अ
जमाना ।

हमर हातत पब कहाँ नोब खसरेक खुबसति कररो
बहन कथनो,

कहेत बहन अहाँ छी बेसम्भाव, झुदा सम्भावतक नहि अ
जमाना ।

करैत बहन उघाव प्रेमक अ दर्द भवन करेज हमरा
सगरो,



हमर घरक तँ छुटकी जेत बहर, कथनहुँ माँपनक
नहि अ जमाना ।

मकभूमि दुनियाँ लागेत बहर, सिनेहक रिता गेल धाव
कतौ,

करेज तँ माँगनक दु ठोप ठाँ प्रेमक, किछु स्मरणक
नहि अ जमाना ।

कियो "ओम"क सिनेहक बुझते कहियो सनेस पता
कहाँ अ चलै,

करेजक हमर झुंझी छुटै, झुंझा देखि जोडनक नहि
अ जमाना ।

(रँहर-हज्ज)

गजव



कहै बाति सुनि निख सजन, खाग अहाँ तँ जेरौक
जिद जुनि कक ।

अ दुनियाक डब हन्दा रैनन, अ रैनाना रैनैरौक जिद
जुनि कक ।

अहाँ रिन सुन पडल भरन रैनन, कसन किया हमरा सँ
हमर मदन,

अहाँ नै यौ झुकत रैन क२ बछ, हमरा हरेरौक
जिद जुनि कक ।

अ चानक पसबल अजोत नस-नस मे टुकल, मोनक
नेह छै जागल,

सिनेह सँ सीचल हमर नयन कहल, अहाँ कनेरौक जिद
जुनि कक ।

अहाँ प्रेम हमर जुग-जुग सँ रैनल, हम थोनि कहल
अहाँ सँ कहिया धरि,



अहाँ सँकेत बुँनु, सदिखन अ गप केँ कहैरौक ज़िद
जुनि कक ।

कहै छै योन "ओम"क पाँति भवन प्रेम सँ, सुनि अहाँ
छुप किया छी,

अ नोत कते हम पछैरै, डनछा गंगा रहैरौक ज़िद
जुनि कक ।

(रौहरे-हज्ज)

मनुष्य (करिता)

जिनगीक कैनभस पब,

अपन कर्मक कुटी सँ,

छिद रौनेरौ मे अपछाँत मनुष्य,

भबिसक आगयो अपन हेरौक



अर्थ थोजि बहन छडि ।

हजारो-नाथो रैबथ सँ,

रैहत अ जिनगीक धाव,

कतेक रिडरो कैँ छाती मे नुकेने,

भबिसक आगयो अपन सृजनक

अर्थ थोजि बहन छडि ।

बाजतन्त्र सँ प्रजातन्त्र धरि,

डूँच-नीचक गरीब थाधि,

स्वसमक झूठ जकाँ रैठने छडि,

भबिसक आगयो अ तन्त्र सभक

अर्थ थोजि बहन छडि ।



कथनो करेजक रबिबारी,

कथनो मोनक बाज सहित,

रठने जाग डै मनुक्थक जिनगी,

भबिसक आगयो मोन आ करेजक

अर्थ खोजि बहन छुटि ।

शिरबानिक अरसब पब एकठा प्रस्तुति-

गौरी बहि-बहि देखथि राँठ, कथन एता भोलनथ ।

आंगन मे मैना कानि बहन छुथि,

झनि नाबद केँ कोसि बहन छुथि ।

ताकि अननाह केहन रब रौबाह,



गौबाक जिनगी भेल आरै तरौह ।

मैना पीछे छथि अपन माथ, कथन एता.....

भूत-रैतानक नागन अछि मैना,

प्रेत पिशाचक अछि ठेनम ठेना ।

पुडी पकरान कियो नै तके छै,

सरै भाँग धबक खोज करै छै ।

कियो नंगछै, कियो ठठने छै, कथन
एता.....

कोना क२ गौरी अपन सासुर रँसतीह,

रिषधर साँप सँ कोना क२ रँचतीह ।

पिताक घरक छरीह जे रँनर बानी,

कोना नगेतीह आरै ओ रँडदक सानी ।



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मासिक चक्रवर्त, ISSN 2229-547X

VIDEHA

आरौ तह किछु नै बहलौ हाथ, कथन
एता.....

गौरीक मोनक आस आग पूरा रहत,
रैव रैनि अघनाह शिखु बिभुरन नाथ ।
जगज्जननी माँ गौरी शैकब छथि स्नामी,
जग उछावक शिर छथि अन्तर्यामी ।
फेरियो हमरो माथ पव हाथ, कथन
एता.....

“ओम” ब्रूमारौ, स्रनु हे मैना महाबानी,
ग छथि जगतक स्नामी गुंठबदानी ।
भोला नाथक छथि नाथ कहारैथि,
सरहक ओ रिगडन काज रैनारैथि ।
शिर छथि एहि सृष्टि केव नाथ, कथन एता.....



ई कनापब अपन मंतर
ggajendr.aevi.deha.com पब पठाड ।



१. बाजदेर मण्डन २.



थमित



मिश्र- गजल -करिता ३. जगदानंद ना मन
करिता सभसँ आग्र आग्र छी

१



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

माथिलि संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA



बाजुदेर मण्डन

करिता-

कामना

अपन-अपन कामना सरहक पास

धवतीसँ पसबल अकास

रैठले जा बहल मासे मास

होगते राँपा दुखक आस

आस निवास तेयो आस- जिनगीक पाशि



निबुद्धि पौता हानि क२ रैजन-

“यौ, रौरा आरि गेल हाथन मास । ”

“है रौ रौथा रौदा भ२ गेल

आरि हएत जाडसँ उरवास

पवसान कहाँ भेल छल जाड

एरैबक जाड तँ देहकै क२ देवक ताब-ताब

घुबमे जवि गेल सभठा नाब-पुआब

नगै छल नै रैचत जान

नीनसामँ भवन छल खान

दूनु रैठा भ२ गेल जुआन

हमरो रैठा गेल सामाजिक शान

परिराबक भाव उठौलक कान्ह

आरि निचेन भेल हमरो जान



छहन्नरै, बून्नरै किछ कबरै दान

गारिँ सकरै सुखसँ भक्ति गान । ”

“स्यौ राँरा नै करु नाथ

हमबा कछु एकठौ रात

मगड १ केनक राँरुसँ काका

माँगेत बह तीन हजार ठका

कह छलै- तोहब नै ठीक बहनौ गुमान

भ२ गेनह पूबा रैगमान

राँरु थुछि सभ मगड १क जडा

सनकेनकौ तोबा जिनगी भवि

ई जाडमे कबतौ ओ पबलोक राँस

राँष्टि नैरौ सभ चास-राँस

थपन-थपन चास, थपन-थपन राँस



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,
547X VIDEHA

मानवसिंह सार्वभौम, ISSN 2229-

देखिहै सिनेमा खेनिहै तस

अपना सम्पतिके कबिहै नाश

राँरा ठीके कबरै पबलोकराँस

रीतन जा बहन जाडक मास । ”

घूमए नगले माथक चाक

राँरा भेल खराक ।

२



अमित मिश्र

१

गजव

आग एता पिया गाम त कंगना दाग गै ,
सून भेल छलै कान्ति जे अंगना दाग गै ,



नीन नै होग छै यदि ओ आरि गेला यदी ,
आग एला पिया छोटि क पठना दाग छै ,

आब कोरी कए बाथ भेलै भुजिया सखी ,
जानलौ आरि गेला पुरा {जगह कए नाम} पढ़ना
दाग छै ,

राजलै पायल दोगलौ ओरती मे नुका ,
राज नागै छलै होयते सामना दाग छै ,

नीक साडी छनबी बूझिदाव कोली छलै ,
भीजलै मोन होली सँ , प्रेमो घना दाग छै . . .
। ।

२

गजव

बाति मे हुनकब अयादि आरै रैसी .
बाति मे रैष्ट जेहिअ आँखि जोगै रैसी ,

कतरौ प्रकृतिक कोवा मे बहरै छदा ,
खल्लव सिनेक नीक नागै रैसी ,



माँ कए चिन्ता जेना संतान जेन होग छै .
खुन नै बग-बग सँ चिन्ता दौगोए रैसी ,

गामक छुट्टी ठाँठ दोग सँ देखैत ओ ,
पहिलक मिनक रात दौगोए रैसी ,

कोना-कोना कोहरब सँ कलकत्ता एनौ ,
ककरो नै करै बिन्ध जेकाँ भागोए रैसी ,

बिबहक बेदना सुनसा देलक आमा ,
घुबो सँ "अमित" करेज सुनोए रैसी . . . । ।

३

करिता

मछब

मछब रँड करेजगब होग छै
जानक रँजी नगा सँ कए क छुमे छै
हमब घब मेँ बँठ छै
हमरे खुन छुस छै
अनमन घुसखोब कर्मचारी जेकाँ
कान नग आरिँ भैवरी मेँ सुनब गीत सुनरै छै

করিভা- আধুনিক ব্রেন্ড



कालि दुनौँ स्वतन मचान पब ,
तथने किछु रँडु जेव सँ राजने ,
नडखड १ कः खसनेँ दनान पब ,
मठ पडनेँ रँडका रँडे सँ ,
कहनक भुँनमा के रिखाह छै .
ओही ठाम रँडु राजए छै ,
रँडु । आश्चर्य सँ खूजन बही गेल आँखि ,
रँडु एहन होए छै .
हमरा जमाना मे होए छै
एकठ्ठा ठेरा .
मधुबन शिनाए के सब ,
ठोतक थाप .
मागतक सँकाव ,
आ गोक गाँवैत गरैया ,
झुदा आँखि ,
चाबि(4) चकिया पूछाँ उड़ रँडु त्रक ,
तही पब 10-20 ठाँ पनी रिस्तावक यँव ,
तेज धून ,
खमिर रौन ,
दाक पि नाँतेत छौड़ १ छौडी ,
ए पहचान छँडि आधुनिक रँडु कए ,
बाँटी जाए ककरो कानक पर्दा ,



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मासिक चरित्र ISSN 2229-547X

VIDEHA

पैड जाग दिन के दौड़ ।
भ जाग ब्रैन हमरेज ,
त कोनो ज़ुलम नग ,
अ रैलिक धून अनि क
थूनी रा डब सँ जानरबो नाच नागो डै ,
सच मे जमाना रदति गेली ये . . . । ।

३



जगदानन्द का मन्त्र

गजल-१

कहरहि ओ मंदीव मे, नहि पिरुँ एतए शिवार
कोनठाम घब हुनक नहि, पिरुँ जतए शिवार



अ नहि अछि खवाप, रँदनाम एकबा केने अछि
ओ की रूमत, भेठेनो नहि जेकबा कतए शिबारी

मबनारौदो हम नहि पियासन जाएरँ स्रग्ना मे
जाएरँ जतए सदिखन भेठए ओतए शिबारी

माबा-माबि भऽ बहन अछि जाति-पातिक नाम पब
मेन देखक हूँ तऽ देखू भेठए जतए शिबारी

सरँ गोष्ठे कए निर्मल सङ्ग मन दैत अछि
आरिँ जाए-जाऊ सरँमिन पियरँ एतए शिबारी



ठूठन करेज बाथरै नहि हम एखन सिखने छी
किछु अपने एकटा तौबनौं किछु भागक निखने छी

जिनका बूठैतहुँ हम अपन झरु भवन करेज
हुनका सँ दूर होराक, मातृव अपने सँ चीखने छी

सोचने त छतहुँ एक दिन जीरेन मे होयत बग
ओहि बग भवन दुनियाँ सँ कतेक दूर एखने छी

दोसब सँ कक की शिकाति जँ अपने नहि बुझवक
जिनका केनौं नेह करेज तोरैत हुनका देखने छी



गजल-३

केहन-केहन दुनियाँ, केहन-केहन बग एकव

कियो हँसै कियो कनै, कियो नुमै सग एकव

कियो मरै दुधक द्वावे, कियो भाँगे मे डुरैन अछि

बुमि नहि पएनहुँ आगतक कनिको ठग एकव

नस्त्रीके देखनो पथेत टिपड़ १, करैड चवारै पारी

गंगा-यमुना पानि भरेत, की हमहुँ छी अंग एकव

भोष्ट माँगे पोहना-पोहना कs, गदहो के राँप रँना
कs

जितैत देखु गिबगिष्ट जेकाँ रँदनेत बग एकव



मनु' छत काबिसाम चिन्हाव रैनोतहि अनचिन्हाव

घबरी-घबरी मे रँदलैत देखु आरँ तऽ उमँग एकव

- - - - - रँ-२० - -
- - - - -

गजल-४

दर्द करेजक देखाएँ तऽ अहाँ जानरँ की

हमर रौत कनी सपना मे अहाँ मानरँ की

अहाँ कहलौं प्रकषक प्रेम गोरँव आ बङ्गा

करेज चीरो कऽ देखायँ तऽ अहाँ कानरँ की

दोख एकेठै मे होङ्गा छैक सरँमे कलौ नहि



सरके सग हमरो अहाँ ओहि मे मानरँ की

अहाँ कहत छी सरँगाम अन्हारे-अन्हारे डै

अजोबियाके आँखि झुनि अन्हबिया मानरँ की

एक रँब हमरो पब भरोसा कय कs देखु

प्रेम केकवा कहत छैक मन्त्र सँ जानरँ की

गजल-३

जबि-जबि नाम रँनतहुँ हम

सोना नहि रँनि पएतहुँ हम



कतेक अभागल हमब भाग

अपन सोभाग हरेनहुँ हम

अपन जीरेन अपने नेनहुँ

किएक नगन नगेनहुँ हम

सुगंधा अहाँ के रिबह मे देखु

की की जवनाहा रैननहुँ हम

अहाँ रिबह के माहूब पिरैत

मबनासन आरिं भेनहुँ हम

जतेक हमब मनोबथ छल

संगे सावा मे त अननहुँ हम



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,
547X VIDEHA

मानक संख्या ISSN 2229-

मातन प्रेमक जडित आगि मे

थकसिआह मन भेनहूँ हम

ए कनापव अपन मंतर

ggaj_endra@videha.com पब पठाड ।



१. सदीप कुमार साहनी २.



डा. श्वक्ल



कुमार सिंह ३.

बामरिनास साहू



४. उमेश पासवान



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,
VIDEHA

माथिलि संस्कृतम्, ISSN 2229-547X

१



सदीप कुमार साहू, जन्म
१ जून १९८४ पिता श्री सीताराम साहू, माता- श्रीमती
सीता देवी, गाम- मेहथ, भाया- सान्नाबपुर, जिला-
मधुबनी । शिक्षा- बी.ए. (प्रतिष्ठा), मैथिली ।

१

भक्तजोगनी

भुक्क-भुक्क रौंती रौंटे

बागतक खन्हबियामे

हाथ-हाथ नै सुनेए



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

547X VIDEHA

मानवसिंह सन्कलान् ISSN 2229-

जेरौक थुछि ठैनपव

रुकुव बुकैए न्नाड-न्नाड-न्नाड

साँमक रँजैए दुख

हाथमे नै थुछि नाठी-ठैगा

नबहिया करैए सोव

मैगमना रारा गरैए निर्गुण

तमारुनपव मारै छैष्ट

रौखा कनैए भगजोगनी नए

रँडैए चाइँ ओव

पकड रोड, बुल्ला, होकरा

ठहा- ठैगा थुनबियामे ब्रुती

नेने माथपव नाबक थुँप



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,

मासिक बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

खबखबाग छी हम पढ्खबमे

२

रसत पछमी

सबस्यती पूजा सभ सान जेना

हरेक सानमे आरैए

बिद्यार्थी सभ हर्म डमंगसँ

माता वग शीस नुकारैए

माघ मासक शुक्ल पक्षमे

आ सुन्दर परगन आरैए

हबियब-हबियब तीसी-मौसवी

सबिसौ क२ बून बूनागए



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

547X VIDEHA

मानवसिंह सार्वभौम ISSN 2229-

जोब-जोबसँ पढुराँ हराँ

ध२ क२ गर्दा उड़ि रैए

देखियौ आम आ देखियौ महरा

सभ मिन सुगन्ध सुगन्धारैए

गढुमे हबियब नरका पत्ता

रौदामे चमक देथारैए

नछ-नछ रैहए प्रवराँ हराँ

होलीक गीत सुनारैए

पिया-प्रता सभ रैठ आगवपव

गहूम गोअठनाक ओवहा पकारैए

रैसन्तु पँचमी सभ लोककै

अपनामे मिनारैए



२



डा. अनुराग कुमार सिंह

भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर

भारतीय भाषाक हम

रैष्ट्रीय मैथिली

हम रैष्ट्रीय तँ छी

माय, अर्थिक

रूढ़ि अथवा अनुसूचितमे पहुँचि



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

547X VIDEHA

मानवसिंह सन्कलान् ISSN 2229-

रिकासक रौष्ट जौहेत

रिसुवक लेन छुटपठागत

हम कैँषी तँ छी

पवच अहाँक प्रतीष्काक

केन्द्ररिन्दु नहि

अहाँक साँस पब माय

निखर अछि कोनो आन नाम

नहि दए सकैत छी हम अहाँकै

आगियो धरि

जखन हक-रचित

एहिना, माय

जखन नाम रनिकए

भावतीय भाषा रनि जागत छी

तখনो एकठा प्रश्न



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

VIDEHA

मासिक चरित्र ISSN 2229-547X

नकशा पब उतडा ये अरैछ

हम के छी ?

अहाँक महीमा गीतमे

अपन चर्चेसँ महकम

हमब नामक आगू

‘श्री’ लागो रा ‘मबद्धम’

हम धनी बही रा गरीब

अहाँकेँ की

नहि जीत छी अहाँक

नहि अहाँक हाव छी

हम जरेत दियाक

पातब अहाँब छी

अहाँ भावतीय भाषा छी माय

हम मैथिली छी

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०१ म अंक ०१ मार्च



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,

मानवसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

माघ, हम मैथिली छी ।

३



बामरिनास साहू

करिता-

आधर रसन्त

आधर रसन्त

भागन जाड

हूनसँ सजन धवती

148



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,

मासिक बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

द्वितीया समान

बुद्धक स्वगन्ध चढ़ए आसमान

आम मजबूत

महत्वा पसबन

भौवा करए ग्वागान

सेबसौं राजए

शहनामा समान

रसन्त बंगमे



बिगधन सभ एक समान

ठोम, मज्जीबा, ठाक, डहनी

रैज रैज गैरैज बागुनक गान

बिग धरिबमे नहधन समान

भेद-भार मिष्ट गेन

सभ तगैध एक समान

खामक गाढपब कोठनी रैजैत



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,
VIDEHA

मासिक चरित्र ISSN 2229-547X

सभकेँ दैत प्रेमक रवदान

धवती रैनर सुरक्षा समान

आएन रसंत भागर जाड़ ।

४



डमेश पासवान

करिता-



रौन्ह

एक्क रैब ठूँठन रैडका रौन्ह

गाम-घब रैन गेल कोसी ओ रैनान

तँ मनमे सोचनौं हे भगरान

केना रैचते लोकक जान

मत्थाहाथ नैत सब अछि कानैत

कतएसँ आनरँ मकथा पान

भुखसँ निकलौए प्राण

नेता मोछ छैरैत खागए पान

देखु केना लोकतंत्रकेँ

कए बहल अछि अपमान ।



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,

मासिक बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

अपने-स-अपने कहि-कहि मिथिलाक रिभूति

कए बहुत अछि प्रतिष्ठाकेँ रँदवैँछै ।

ए कनापब अपन मँतर

ggaj_endr_aevi_deha.com पब पठाड ।



१. जगदीश प्रसाद मण्डल, चंदन कुमार सा



२. नन्द रितस बाय



जगदीश प्रसाद मण्डल-

चाँदनी गीत

गीत- 1

रिसवि गेल मन तोबा

हे रहिना रिसवि गेल मन तोबा

जहिना गाढक हूँ नडिँ छुग

नडाँ -नडाँ खसलह तोबा

हे रहिना, रिसवि गेल मन तोबा ।



बहि-बहि स्वभावक अरौं दुग

देखैले छदए तडस दुग

माबि-सम्हाबि गरौं दुह तोबा

हे रहिना, रिसबि गेल मन तोबा ।

थोद-रैद सदि करैत बह दुह

तोबा-पाछु घुमैत बह दुह

नपकि-नपकि पारैए चाह दुह

नपछि पकड़ा रहि तोबा

हे रहिना, रिसबि गेल मन तोबा

कोसी-कमला दुब भगौनक

नेहब-साम्ब सेहो रिसरौनक ।

हहबि-हहबि छदए सहछि

छाती सछरैए चाह तोबा



हे रहिना, रिसवि गेल मन तौबा ।

गीत- 2

ढुपपव किथए कचड़ ढुह हे कौथा

ढुपपव किथए रैसन ढुह ।

नग-थारि समाद स्नारैह

नेहबाक सोथवि स्नारैह

भैया-भौजीक हान-चान सर्ग

गाम-समाजक सेहो स्नारैह ।

ढुपपव किथए रैसन ढुह हे कौथा

ढुपपव किथए कचड़ ढुह ।

दादी-दबदक हान स्नारैह



रौंरूक रौत रिसबिहक नै

बेथिया-सुगिया पढ़ि छग कि नै

मागयक मन रिसबिहक नै

छप्पब किथए कचड़ि छह हे कौथा

छप्पब किथए रैसन छह ।

गाँत- 3

गामसँ किथए डरै छी

भाय यौ, गामसँ किथए डरै छी ।

सदिकार गामक चर्च करै छी

बाति-दिन प्रशंसो करै छी ।

तखन किथए भङ्गै छी



भाय यौ, गामसँ किथए डरै छी ।

रौप-प्रकथाक प्रकथार्थ गारि-गारि

छाती-तानि हामी भरै छी

नानी-दादीक थिससा-पिहानी

सुना-सुना मोह छी

भाय यौ, गामसँ किथए डरै छी ।

जग मातृभूमि ममतासँ

छदए गंग रहै छी

गामे-गाम पसबन छुग मिथिला

गामेसँ किथए झुकछ छी,

भाय यौ, गामसँ किथए डरै छी ।

गीत- 4



आरौ कने रिचाक

भाय यौ, आरौ कने रिचाक ।

भूथे भगनौ, सभ जनेए

दूथे भगनौ, सभ जनेए ।

भवन पेठ रिचाक, भाय यौ.....

जहिया जे भेन, से तहिया भेन

भूत गेन, भूतकानौ गेन ।

रत्नमानक कथा-रैखा संग

रिचाक, आरौ भरिष्यक नेन ।



रिचाक आरौ भरिष्यक नैन भाय यौ....

कमा-थठा क२ दूथ मेष्टेलौ

भूथ-पियास सेहो, भगेलौ ।

जबन मन भवि पोथ भवेलौ

आरौ कने रिचाक, भाय यौ आरौ.....

आधा दर्जन करिता-

प्रिय- 1



उठिँते बेदना उषिआए नगए जरेँ

बच-रिचड़ १ हूँआ नगौ दुग ।

कर्ण-प्रिय, प्रिय राणी रीणा

कप माधुर्य सिबजए नगौ दुग ।

दूब-दूब जंगल पसबन

पसबन दुग ग्रह-नक्षत्र सागब

तरेगन छिड़ि आ-रितिआ

सजरेँ कप पठाव-पहाड़ ।

धवती डूपव शून्य रसन दुग

नाँउ धरोने अपन अकास ।

छसि बस माँछि-पानिक

संग चलेँ रौद-रसात ।



ने दुग ओव-छोड़ थकासक

एक छोड़ धवती धेने दुग ।

नपेष्ट-नपेष्ट नपेष्टा डोव

रिधाता गृही उड़रै दुग ।

रनि रिधकरी रिधाता

सिबजन शक्ति जगरै दुग ।

कर्मभूमि, जन्मभूमि ओ मर्मभूमि

कना-जीवन सिथरै दुग ।

स्वर्गा-साड़ १ पहीरि देखि कियो

गुणधाम कप रूमन नगै दुग

हंस चारि पकड़ा -पकड़ा

राहिनी हंस कहरै नगै दुग ।



चलि चलि हंसराहिनीक

सुवधाम नचरैत नगै दुग

सजि केशि सुकेशिनी गढ़ि

कपरती कहरैत नगै दुग ।

गुणरती कपरती रनि-रनि

गुणधाम रिसवैत नगै दुग ।

गुण पकड़ि जखन सुकेशिनी

धव जम्ना रिसवैत नगै दुग ।

कावी रंग पकड़ि -पकड़ि

सिबसिवागत सिब सजरैत गलै दुग ।

शुद्ध-सुभार, गुण सिबजि

गुणरती कप रनरैत नगै दुग ।

गुणरती कपरती रनि-रनि



गंगा-सबस्रती मिनए नगौ छग ।

जगठाम तीनु पाव सठए

बिरेणी घाँ रैनरँ नगौ छग ।

घाँ-स्नान क२ तीनु सहैनी

खनड़ित-मनड़ित चनए नगौ छग ।

भेद-रुभेद मेँ-मेँ

गंगा-सागर जा डूमे छग ।

सम्पन्न शिर्द, शीरी सम्पन्न

शिर्द कोष सिबजए नगौ छग ।

जड़ा-ढीप पकड़ा भाषाक

संसार-साहित्य गढ़ए नगौ छग ।

खपन-खपन खस्त्र-शस्त्र सजि



पथ-प्रदर्शन कबए तर्गे छुग ।

पथ प्रिय प्रेमी पारि-पारि

पथिक पथ चले तर्गे छुग ।

लोक अनेक, दुनियाँ अनेक

पथ अनेक अनेक पथरौह ।

अपन खेत जहिना जोते छुग

रैबदक सर्ग अपन हवरौह ।

रैखा-कथा सम्पन्न गढ़ि ,

करिब सर्ग मिनि चले छुग

दोहा, चौपाया, छुपय ओ करिब

सर्ग मिनि करिता कहै छुग ।

आँखि, कान, नाक मिनि जहिना



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

547X VIDEHA

मानवविज्ञान संस्कृतम् ISSN 2229-

कप देह सजरेँ दुग ।

झूठ रीच जिहिया पकड़ा

राणी राणी ताब थिटे दुग ।

तड़पि-तड़पि मनक रेखा

दूरेंछीं ओमब जा हँसि दुग ।

शिरद राण जा-जा कह दुग

झुदा ओमब कहाँ रँदलौ दुग ।

ओमब जखन चानि पकड़ा

अस्त्र हाथ उठरै दुग

कर्मभूमि पकड़ा धवती

शिरदराण छोड़ि दुग ।

नख-सिख कप जतह सजै दुग



पुर्णिमाक चान कहैए नगै छुग ।

पुनोक गौबर गाथा कहि-कहि

मास सलानी परैए नगै छुग ।

जहिना साउनक सिस्की सिहकए

तहिना सिहकए रीषाक ताव ।

मनोक ताव तहिना सिहकि

सिबजि अपन तहिना उद्गाव ।

जहिना पवती अकास रीच

गाछ-रिबीछ नहनह करैत ।

तहिना रिरैक रिचाव संग

सदि हँसि-गारि कहैत ।

हज्जाव नाम जहिना हवि



हजाब हाथ तहिना सजन दुग ।

हजाब मन सेहो कहैत

हजाब कोष भवन दुग ।

अपनेपब- 2

अपनेपब कने छी

अपनेपब हँस छी ।

अपने दिस तके छी

अपने ने देखै छी ।

घुबि पाछु जखन देखै छी

जुगक अनुरूप समाज देखै छी ।

उपर-उपर नीपन-पोतन



भीतबमे ककार देखे छी ।

ओही समाजक रीच रसन

अपनो पुरखाक अतिहास परै छी ।

बिहिया-बिहिया बिहियारिते

ठहर-ठनमनाएन देखे छी ।

निश्चित सीमा रीच गाम

निश्चित जाति रान्हन छी ।

छैनरैया कहि निश्चित जातिक

पतिखानी लागि सठन छी ।

सठन-सठन पतिखानीक रीच

हठन-सठन सेहो परै छी ।

सठन-हठन आ कि हठन-सठन



गामक थाह कहाँ परै छी ।

चौहन्दी रीच कबो समाज

कबो जाति समाज कहै छी ।

कबो-कबो प्रकथक समाज

तँ कबो सम्प्रदाय समाज रैने छी ।

ऊठिते नजबि भूत-भरिष्य

सिंहबनसँ सिंहबए नगैए ।

अकाबथ जिनगी देखि पारि

कहबि मन तुबद्धि मरैए ।

अगम-अथाह कप समाजक

असथिब भे सगब कहैए ।



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मासिक चक्रान्ता, ISSN 2229-547X

VIDEHA

रैख रैख रैख-रैख

उना-पाथव रैखिमा दगए ।

परिंते पारि पृथ्वी पसवि

धविषा-चाति धडए नगैए ।

उध्वी-रैसी खेन खेलेत

मोअन-धव रैनरैए नगैए ।

दूक स्वपारी समाज कष्ट-कष्ट

दूकड १ जाति रैनन डग ।

दूक-दूक जातिक धवम

धर्म-मानर कात पडन डग ।

कन्याणक पययि धर्म कहरैए

कन्याणक दुश्मन रैनन डग ।

दृष्टिकुष्ट सिबजि दृष्टा-रैख



अनग चित्त चोनान खसल दुग ।

देखि-देखि कहै छी ।

कहबि-कहबि सिहरै छी

सिहरि-सिहरि सिसकै छी

सिसकि-सिसकि थूनकै छी

थूनकि-थूनकि कनै छी

अपनेपव कनै छी

अपनेपव हँसै छी ।

तँए कि कोनो हाबि मानै छी

भाग्य-तकदीव सिबजै छी ।

ज्योतिषक ज्योति पजाबि-पजाबि

कर्म-लेख लिखैत चलै छी ।



जेकब जेहेन भाग्य रैनत छुग

तेहने तेकवा बन भेटै छुग ।

हँसि-हँसि शिरदजान कर्म

गीता गीत स्मरण तगै छुग ।

पढ़ि गीता रौवा कियो

चिन्तक रनि चिन्तन करैए ।

पागत कहि प्रक्री दए-दए

रौवाहा कप गढ़ैए ।

सभ किवदानी देखि-स्नि

मदनाबी शिर कहैए ।

कियो भागिया-भिखाबी मानह

शिरदानी शिर कहैए ।



डायरी- 3

मनक डायरी लिखै रैसलौं
उपहावक डायरी निकारलौं।
बग-रूप देखि डायरीक
उपरे-उपरे भसए नगलौं।
भसैत-भसैत-भसैत
मनक रात रिसवए नगलौं।
छपन फूल गनारै कनी
रिहिया-रिहिया देखए नगलौं।
सुब-सुब करैत सुबसुबी थारि
नाकब छोब थिचए नगल।
बस-गंधक भूथ जगा



भूखत मन तबसए तगर ।

ताकए तगलौ बस करीमे

सादा कागज रैनत-पड़त ।

सीथ-लीथ नै परेथि पेलौ

अथनो ओहिना रैसत पड़त ।

गुन-गुन गुनगुनाए तगलौ

जगत अपन डायबी मनमे

हाँग-हाँग पन्ना डनष्टेलौ

करम खोति रिचावत मनमे ।

तही रीच आँखि पड़त पन्ना

चाई रैना ठाँगत देखत

अपन मनक चाई नै देखि



अदहन मन उषिआए नगन ।

आखब अंतिम मन पड़ा ते

कलमक हाथ घुसकए नगन ।

अनका असे कते दिन रीतन

मनक हिसारै उठए नगन ।

मानव ग्रंथ- 4

जा पवि ग्रंथ नै अरैत मनजमे

ता पवि मनज मन बैए ।

अरिते ग्रंथ हन-हून जहिना

नाँउ अपन धड़रैए नगैए ।

जा पवि हून मरक नै परैत



कोठरी-राती कहँरैत बहै ।

तहिना ने मनुखो रीच

मनुष्य-मनुष्य कहँरैत बहै ।

गुण अनेक समेटि आठ

पौकष गुण कहँरै ।

परिते पारि रँनैत गुणी

महाप्रकष रँनै नगै ।

जहिना-जहिना गुण रँनै दुग

तहिना-प्रकषपनो रँनै दुग ।

परिते पौकष तन मनुजमे

महाप्रकष कहँरै नगै दुग ।

तीन गुण आदिये सँ आरि



सत्-वज-तम करैए ।

तामस-प्रीति मनथेष्टा नै

पशु-पक्षी सेहो पकड़ैए ।

जहिना-जहिना पशु-पक्षी रीच

गुण तीनु गुणगान करैए ।

एक-दोसबसँ हठि-सठि

कामी-लोलक कप धड़ैए ।

रिना किछ कहनौ-स्वनौ

रीथ रमन सदति करैए ।

गहमन चाति बुनि देखि

मनस्यत्र डबए नगैए ।

झदा छैननिहार मनथो होग दुग



उपाए तेकर सोचए नगैए ।

मन-जौड़ सीथि-सीथि

चिन्ती-कौड़ १ भाजए नगैए ।

भजिते चिन्ती-कौड़ १ धवती

गरुड़ चारि पकड़ए नगैए ।

चाक दिशी नजबि दौगा

अकास रीच उड़ए नगैए ।

उड़ि ते अकास देखए नगैए

रीन-धोधुड़ि रूम्ह-धवती

एक अकास दोसब पतार

जागर रूम्ह सुतार धवती ।

जहिना रँवही काठ थोदि



उथड़ा ठोतक कठवा रैनरैए ।

तहिना ने कठथोषियो थोदि

हीव काष्ट धोषड़ा रैनरैए ।

बस्मित स्वस्मित भरन रीच

चैनक जिनगी रीस करैए ।

निच्छाँ धड़तीक रौहवि देखि-देखि

स्वथ-सेजि रिश्राम करैए ।

ने डब पानि ओ पाथव

हरो ने किछु कए सकैए ।

धवती सहजहि पड़न-स्वतन

भयये किथए भइ सकैए ।

झसक थूनन रीत पकड़ा



नाग-नागिन कहैए नगैए ।

नागे तँ धवती छैकने छुग

थथण्ड बाज भोगै छुग ।

जेकरे रँनाउन घब रँसै छुग

तेकरे पकड़ि भोजन करै छुग ।

सुथ-पतारक पारि-पारि

थकास-पतार लोक गढ़ैए ।

भोगी जोगी रँनि-रँनि

मँव सूत्र गढ़ैए नगैए ।

सृजै-चानक गति-मतिकै

बगड़ि-बगड़ि मेठैए नगैए ।

कहियो रौदर पकड़ि

मेघाउन कप धड़ैए नगैए ।



तै कहियो देर-दानर ठड़ १

रैरैस भ२ देखै नहोए ।

छुट्टि गेव- 5

पाछु घुबि जखन देखै छी

मकभूमि भेल गाम देखै छी ।

गंगोष्ठि मानि सिब सजि

चानन करैत खनैत बहलौ ।

रौबक रूजि रैनत रौध

देखि-देखि कहैत बहलौ ।

जग पानिक रीच रैसन छी

तरो पानि तबहथियो पानि



राहाओ पानि रँसातो पानि

उड़न अकास दोड़तो पानि

तग पानिक रीच काहि काष्ट

पानिये रिन्र डुष्टपष्ट करै छी

कठौ छूँकियो नोन नै

कठौ-कठौ सागव रँनन डुग ।

दुनियाँक दोखाह रसात

दूबि केने डुग दुनियाँके

रिन्र कन-काबखानाक मिथिला

दूषित भेन अछि हारासँ ।

देशे-दुनियाँक काबखाना चला

थेती-पथारी सेहो करैए ।



थपन सभ किछ उपस्था-रिगस्था

मिथिलाक जय-जयकार करैए ।

भाषा साहित्यक कथे की

नमगब-चौड़गब रौनह कसल-ए ।

करे झसरौ पकड़ए हान्सरौ

दिन-बातिक लीला चलैए

जननिहार सभ किछ जने छथि

झदा पेठ पकड़ा पेठकान देने

सभ-सरहक झह देखि-देखि

जेने-जेने कि देने-देने ?

रुग्गुथा- 6



जुआनीक जे कप देखैए
तेकरेसँ ठंढा करै छी ।
अपन कवम-धवम रिसवि
हगुआ हँसि-हँसि गरै छी ।
दोहाकेँ करिउ रँना-रँना
दोगे-दोग रिहँसैत चनु ।
बटि करिता जोगिवा केव
ब- ब- ब- ब- गर्द कक ।
कप सजि कबता-कबतीक
शुभशान कप रँनरै छी
बस हुन माधुर्य हनक
जी-जान कहाँ छिथै छी ।



जहिना सबसो-सून-सून करैए
गहूमनिया बग नपकति बैहए ।
केछुआ छोटक मसीम पबथि
नपष्टि-नपष्टि नपष्टिए नगैए ।
ताड़ रीणाक कम्पन्न जहिना
ओब-छोट मनकरैए नगैए ।
तहिना पएबक उठन सून-सून
डाबि-पात, सिब डोलरैए ।

पारि हाथ रसन्धवा जहिना
खनसाएन-मनसाएन नूमैए ।
पारि जूखानी रिवह तहिना



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

माथिलि बरबन्नाम ISSN 2229-547X

VIDEHA

रिड़हा-रिड़ही रौबाए ।

ढोल-डम्फ तान मिना-मिना

दूनु नाचए-गारैए नगैए ।

रुड़न-रुड़नएन देखि रस्रपा

थकास परन डोलए नगैए ।

चान-सूर्ज रैसि दूनु संग

हिस्सा-रैखवा रुड़ि यरैए नगैए ।

जहिना पुनोक चान चमकए

मध्य-मस्त सूर्ज सेहो हँसैए ।

अपन-अपन दशा-दिशा

मिति दूनु गारैए नगैए ।

रौमा हाथ थिड़कि-थिड़कि



दहिना चकमक चमकए नगैए ।

जहिना जाड़क पाना पकड़ा

शीतल छदए मिनि जूड़ौनक ।

ठिठूबन-ठिठूड़न पकड़ा कनी

रसन्त गीत सेहो सिबजौनक ।

२

चंदन क्रमाव सा

सबबा, मदनेश्वर स्थान, मधुबनी, बिहार



|| हेतैक नरका भोव |

एते जागृति हेतैक नरका भोव,

घब-घब मे पहुँचत शिक्षा,

शिक्षित हेते सभ लोक,

संपूर्ण धरा पब खुशिये पसवत,

ककरो आँखि मे नहि बहते नोव,

नहि बहते आतंक, आतंकी,

आ आतंकवादक जेव,

नहि बहते राजनिति आ



जातिरादक गठजोड़,

नरन दिरस, नूतन प्रभात,

प्रति हेतैक नरन अजोब । .

३



नन्द रितस बाय जीक
करिता-

मानरता



आनक गतती निठहावरै ङ नीक काज ले

कथनो कान अपनो झूठ एनोमे निठहावन कक

जौं दानरसँ मानर रैनरौक थडि

मानररौना कर्तुर्य ि नभाएन कक ।

जीत केव खुशीमे सभ बैठत थडि मगन

हाविक दूखीमे अहाँ झुस्फबाएन कक

दोसबक खुशी देखि जड़ि छी किएक

देखि दोसबक तबक्की मरै छी किएक

हएत केना अप्पन तबक्की रिचावन कक

की नः दुनियाँमे एलौं की नः कः दुनियाँसँ जाएँ

होब एना किएक करै छी बाति-दिन रौप-रौप

टोखा कमारै लेन केनौं कतेक पाप

जौं पापसँ झुजि चाहि छी अहाँ



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मानवविज्ञान संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

गरीब-गरीबपन खल-धन ब्रूएन कक

दोसबक खुशी लेन जौं जीत क२ हाबि सकी

खानक रैचैरौक खातीब घब अपन जाड़ा सकी

धवतीपब केना मानरता जीरैत बहत

अपना भवि अहाँ जूजी नगाएन कक

अपना लेन तँ सब जीरैत अछि

अनका लेन जौं अहाँ जी सकी

खानक उपकार खातीब जौं जहब पीर सकी

मबियो क२ केना लोक भ२ जागत अछि अमब

अछ गप्पपब थोड़क माथ नगाएन कक

खानक गतती निगावरीं अ नीक काज नै

कখনो कान अपनो झूठ ईना निगावरीन कक ।



शिक्षित रैबोजगार

हम शिक्षित रैबोजगार छी

परिवारपर रैनर भाव छी

गोर्खा समाजक लेन रैकार छी

हम शिक्षित रैबोजगार छी

राबू हमरेपर भाषा माड' छथि

गप्पसँ हमरा मारै छथि

हम मने-मन भनभनागत छी

गप्प मारि खाग छी ।

हमर कनियाँ हँ हमरासँ कसर छुटि



ও কই খুঁজি হম কপারে ফুটল খুঁজি ।

কী এক গদী সেনুরো দেলৌ

জহিয়াসঁ গৌনা ভ২ খন্য ঘব এলৌ

কী তেলৌ সারুন খন্যকৌ হমবা লেল জুমেত খুঁজি ।

কী কহঁ, ভায লোকনি

হমবা তঁ কিছ নে ফুটল খুঁজি ।

লোড়াক মাঝিসঁ বেসী চোষ্ট বগৌত খুঁজি

কনিয়াঁক রাতক হমবা

কে পতিয়াএত খপন দুখ

হম কহিয়ৌ ককবা

কনিয়াঁক রাপো

খপন বেসী হমবাসঁ রিয়াহি



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मासिक चरित्र ISSN 2229-547X

VIDEHA

पचतागत अछि

दिनली पंजारे पठेबाक जेन

हमब माथ थागत अछि ।

अ रै नै गुजब हएत हमबा गाममे

चलि जाएँ दिनली आगये साँममे

ओतए कबरै कोनो काम

दोखा कमा, लाएँ गाम ।

ई कनापब अपन मतर

ggaj_endra@videha.com पब पठाड ।



१.

नावायण ना



निशान्त ना



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,
547X VIDEHA

मानवसिंह सस्कृतम् ISSN 2229-



नावायणा न्ना

मिथिला बाज्यक आह्वान

कक आंदोलन रैनाडु बाज मिथिला

जमि क२ रैनाडु बाज मिथिला ।

मिथिला थिक मिथिलारसीक करेज

बाथक अछि एकवा सभकेँ सहेजि ।

हाथ जोड़'क समए रीत गेल

अधिकार हथियेरौमे देबी भ२ गेल ।



जनकक सर्ग सीताक था क२ संपत्त

सघर्ष सदिखन बाथर तखनहि भेटैत ।

आलस, भुख-पियास छोड़ि क२

बाति-दिनक सघर्ष क२ ।

दिन-बातिक परिवर्ष क२ रँजाड घँष

तखने रँजाड मिथिला बाज रँनरँक डडा ।

अपन बाज्यक अपन सँकाव

अनुकवणीय होएत सँकाव ।

दिग-दिगति पताथा कहवा सकैत अछि

सफलताक रीखा रूना सकैत अछि ।

सम्पूर्ण मिथिलारसी होएताह आत्मनिर्भर

सपनोमे नै बहए पड़त करबो पड़ निर्भर ।

कक आंदोलन रँनाडु बाज मिथिला



जमि क२ रैनाडु बाज मिथिला ।

२.



निशान्त ना

थुनि बह नैत अहाँकेँ हज्जब रैहना अछि ,
कनीस दौस्तरी अहाँकेँ घरसँ अहाँक यावाना अछि ..

हमब ख्रारै तू आसमानसँ डूँच भ२ जौ,
हमरो आग अपन होसना कनी अजमेरौक अछि ..

साकी तू रैस पियेने जौ रजह नै पुछ पीरै
के ,



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मासिक चक्रान्तर, ISSN 2229-547X

VIDEHA

सरहक दर्द अपन अपन सरहक अपन
अहसाना अछि ..

एक चूक भेल की तेलब नजबसँ उतबि
गेलौ ,
ईना छौ तेलब आँखि की अदर की पैमाना अछि
..

आमोशी तलाग नाकामी कसरग ,
निशित भैलौ तेलब मोहरत के नजबाना
अछि

२

करोडपतिक सेठ पब, आग रैरात भऽ गेलै

करोडपतिक सेठ पब, आग रैरात भऽ गेलै ।
कंपुष्टब स्फीन पब, आयत गज्रँ सरात भऽ
गेलै ॥
आयत गज्रँ सरात जीत कय , फास्टस्ट फिंगर फस्ट
।
सँ सँ पब आरि गेलथि , नेता जी एकगो भ्रष्ट
॥
पहिना प्रश्न जितायत , कपया पाँच हजार ।
देशीमे भ्रष्टाचार ले, के अछि जिम्मादार ?



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मानवसिंह बरकत, ISSN 2229-

547X VIDEHA

सही जराँ रैतारू, बिरकप्प थुँडि आ चाबि ।

ए) जनता री) मंत्री सी) नेता डी) सबकाव ॥

हम छी नेता, हम छी मंत्री, हमरे थुँडि सबकाव

।

ऊँ जनता केँ लोक कबरँ, चुनाव जायँ हाव

॥

मंत्री जी पडि गेलथि सोचमे, मदति

कबत आरँ के ?

रैजना - होन नगायन जे बिरकप्पक पाँटी

नेताकेँ ॥

तीसे सेकंड मे भइ गेल, नोठ रोठ केव डीन

।

कष्टि केनथि नेता जी रैजना एकछुथनी रुठाठ आग

हलीन ॥

बिना जराँक अबरोँ रैनेत थुँडि अपन रोठ - सीठ

पव ।

का बखत थुँडि "निशित" छोडओ अहन छँठ-सीठ

पव ॥

हुँसि रचन, हुँसि कसम, हुँसि देखा कइ श्रृंग ।

ओतय जनताक रौंटींग पेड्स पव सरँटी

बिरकप्प अपन ॥

कथनो कथनो रँस भाषण रौंजी, कबकन तेरव

तीथ ।

करोडपतिक सेठ पव, आग रैरान भइ गेलौ ।



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मानक बिदेह बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

करोडपतिक सेठ पब, खाग रौरा भ२ गेलै ।

ई कनापब अपन मतर

ggaj_endra@videha.com पब पठाड ।



१.

प्रीति प्रिया ना



परन



रुमाव साह

डा. शशिधर रुमाव



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,
547X VIDEHA

मानकीकृत संस्कृतम् ISSN 2229-

१.



प्रीति प्रिया मा

अन्तराष्ट्रीय महिला दिवस 08 मार्चक अाराहन भ२
बहन अछि । ई अरसबक परिपेक्ष्यमे नरतुबिया
करमित्रीक सम्यक प्रस्तुति । बचनकाव- प्रीति प्रिया
मा, पिताक नाँ- श्री रिजय चन्द्र मा, माताक
नाँ- श्रीमती सीमू मा, जनम तिथि- 01/ 03/ 1994
सम्प्रति- डात्रा कथा 12म, केन्द्रीय बिद्यालय ठाँठा
नगब, आरासीय पता- गौतमपहाड 1 मेन रोड, गायत्री
मदिवक निकट, जमशेदपुर, पैंतक गाम- धनखोबि,
बृत्तपवास मधुरनी, मातृक- घोघबडीहा, मधुरनी



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

VIDEHA

मासिक संस्कृतम् ISSN 2229-547X

करिता-

रैष्टी

जन्मएकान, आमक मज्जब

खुशीक पैष्टाव

घबक नम्मी रैष्टी

झुदा मंचेष्टापब

सभ कह छुग रैष्टी-रैष्टी एक समान

तँ किथए दूथ मनरैत छी

कन्याक जन्मपब

किथए नै जन्माएन जाग छुग रैष्टी

एकष्टी पत्रक आशामे

सात-सात रैष्टी



ककरो तनपव साह रसु नै

झदा एकठा रैठा-

रएह- रौआ, रौरू, सुग्गा-नु

दोष ककवा देन जाए ?

सरहक मतिमे प्रेमोह, तिनकक नोभ

ककरो मति तँ रदनन नै जा सकैछ

रूप रैपारी आ रैठा रसुत रनि

रजावमे पसवन छुटि

रिक्क रौक नैन तैयाव

चाम-मोठ झदा दाम चमनगव

जखन रैठीक रूप- तखन कनेत छी

झदा । जखन रौकक पिता

तँ भगवानक समान आदव चाही



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मासिक चरित्र ISSN 2229-547X

VIDEHA

बैथी सभ माबन जाग छै

नीके हएत, बैथी खतम भऽ जाएत

बहि जेता सभै रौनक क्रमारे

प्रकृति केँ छनौती दिख ?

राह आर्यरुक्त पुत । । ।

२



परन क्रमाव साह



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,
547X VIDEHA

मानवसिंह सन्कलान् ISSN 2229-

जन्म- 2/2/1987

पिताक नाँ- श्री रासुदेर साह

गाम- थाप, पोस्ट- अन्धाबरन (रासुदेरपुर), थाना-
लाँकहा, जिला- मधुबनी, (बिहार)

पिन- 847421

शिक्षा- एम.ए. (अंग्रेजी)

एन.एम.एन.यू. दबलगा

करिता-

प्रेम

की पाप दुन प्रेम हमर

की प्रनाह दुन प्रेम हमर



नगि गेन किअक अकवा एहेन नजबि

की पाप छन प्रेम.....

जौं प्रेम पाप छी तँ

अ पाप हम कबरौ कबरौ

कियो मिनए ने दिअए चाहिअ हमवा

झुदा हम ओकवासँ मिनरौ कबरौ

सभ किछ ओकवा नैन मेछी गेन हमब

की पाप छन प्रेम.....

अनि लिख यौ प्रेमक दुश्मन

मिनैसँ हमवा ने रोकू

क२ देनौ ओकरे नगु जीरन



हमरा आरौ कियो ने ठैकु

रुथ भैत जिनाग जिनगी हमर

का पाप दुत प्रेम.....

गीत-

उड़ि गेलौ ओ हमर दिन

एना तोड़ि क२

उड़ि जाए पंक्ती जेना

पिजवा तोड़ि क२

उड़ि गेलौ....

अपना ओ पंक्ती समनतक



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मासिक चक्रान्तर, ISSN 2229-547X

VIDEHA

हमरा दिनक पिजबा

छोड़क जखन संग हमर

तड़पए नगर जियबा

मावक तीव दिनमे

एना जोड़ा क२

उड़ा जाए पंक्ती जेना

पिजबा तोड़ा क२

उड़ा गेलै.....

पिजबाकेँ कोनो दर्द नै होए

दिन रैगबि दर्दक नै बहए

पंक्ती तँ गगनमे उड़ाए

संगी हमरा चमनमे घुमैए



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,
547X VIDEHA

मानवसिंह सार्वभौम, **ISSN 2229-**

बि जलौं ओकरा बिनु हम

एना मबि क२

उड़ि जाए पंखी जेना

पिंजबा तोड़ि क२

उड़ि गेलौं.... ।

३





(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,

मासिक बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

डा. शशिधर कुमार, एम.डी.(आर.) - कायचिकित्सा,
कानून और आर्यवेद एंड बिसर्च सेक्टर, निगडी -
प्रारम्भिक, पुष्पा (महावास्त्र) - ४११०४४

अर्थात्

(कविता)

“अर्थात्” छी भूत एहेन, रैडका -
रैडका के अवक छ । ^१

की मनुष्य केव गप्प कही, देरहु के सरक
सिखवक छ । ।

नावद सन धरि के अर्थात् भेवहि, ^२



निज मन पब हमर नियन्त्रण अछि ।

कहवहि - के हमरा डोवा सकत ?

विभ्रन के - मोव आम्त्रण अछि ।

ब्रह्माक तनय, रिङ्गक भङ्ग,

हब विषय सँ हम - निर्विषु थिकहुँ ।

की काम - रासना - फाध - लोभ,

की मोह - द्वेष, सब जय कयवहुँ ।

रौनव सन मुँह भेवहि हुनकब, सच । अहं काव केव
भोजन छी ।

की मनुष्य केव गप्प कही, देरहुँ केँ सरक
सिखवक छी । ।

सर्जक रङ्गका - हम कथाकाव,

हम गीतकाव रा गजवकाव ।



हम के छी - ककबहु कही भुछ,

आ कही "कुथि कइ बिबिधता ?

की नीक - ब्रैजाए ? तकर बिबिध,

कबतार पाठक - जन, सुधी - समाज ।

हम तइ लेखक, बिबिधता कर्म,

हम के छी पबलिष्ट बिबिधता ?

जौ छी महान, तइ लोक कहत; अपनहि निज गाव
ब्रैजाए की ।

की मनुख केव गप्प कही देरहु के सँक
बिबिधता छी । ।

हमरा समूह केओ अनिच्छा, ३



बिदेह बिदेह के पत्रिका चिन्ता ।

जनिका जनिका जे शिक विथि,

हब जन के अभिरुचिक अधिकार ?

सब के माथा सोचराक लेव,

आ हाथ लेव विथराक लेव ।

नकि जनजात के सिङ्गल,

ही समय, निष्ठा रनराक लेव ।

अहं मुँह - हाथ आदर दैत छि, आ रहुत के
वतिअवक छ ।

की मनुष्य केव गप्प करी, देरह के सरक
सिङ्गल छ । ।

जै ही आलोचक - समालोचना,

नीक - रोजाए सल्ला देथी ।

अपना थैमा, अनकर थैमा,



दू कत पबिष्कण समन्वय ।

अपना थैमा अथवाहो नीक,

अनका जै कही हम - सर तीते ।

तह चानि पब थापड़ा निश्चित अछि,

छी कावक गति अनुपम, ठीके ।

“समय” हाथ निषि सभ - ठी कत दू - दर्प
सिखौवक अ ।

की मनुष्य केव गप्प कही देरह के सरक
सिखौवक अ । ।

सन्दर्भ सकेत -

१) । एहि करिता केव विषय रसुक प्रेरणा “बिदेह”
पब रिगत २ महीना सँ चलि बहल रातनिप सभ सँ
मनःस्फूर्ति भेल अछि । तेँ हेमसँक पब “बिदेह”
कम्युनिष्टीक एडमिन लोकनि केँ सादर धन्यवाद ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,
547X VIDEHA

मानकीय संकेतः ISSN 2229-

२) । ए सन्दर्भ "रिश्त - प्रवास" मे वर्णित एक
कथा सँ लेल गेल अछि ।

३) । एहि ठाम प्रयाज "अनटिन्हाव" शिष्ट, "अपविचित"
केव पबिचायक थिक (टिन्हावक डनठ) । कोनहु
राजिनिशेष सँ एकव कोनहु प्रकारक सङ्ग्रह नहि अछि
।

ए करिता "बिदेह" केव आगामी अंक (अंक १०१) मे
प्रकाशिनक हेतु सम्पादक मन्दन केँ सेहो पठाओल
गेल अछि ।

आयव बसल लेल नर - नर डमंग

(हगव गीत)



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मासिक बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

[+ -] मययक सुरास लेने, रैरुछ
परन ।

आयव रसलु लेने, नर - नर
डमग । ।

[-] तीसी आ सरिसो केब,
रुसुमित शोखा ।

[+] प्रेम केब मधुरन मे,
नयन केब भाषा ।

[-] अथवाह भूतव पब मययथ, बती केब
सर्ग ।

[+ -] आयव रसलु लेने, नर - नर
डमग । ।



[—] धवती केव कण कण ये,

हवियहरी आयव ।

[+] भाँति - भाँति बग केव,

बुव बुवायव ।

[—] सुनि कोयतीक रौव, रँठय प्रेमक
अगन ।

[+ —] आयव रसनु नेने, नर - नर डमंग
। ।

[—] सभतवि अछि जीरन,

आ सभतवि यौरन ।

[+] प्रिया केँ निबधि क२,

अघायव ने प्रियतम ।



[–] चव्व भैवा पवाग वष, वसित
उपरन ।

[+ –] आयव रसन्त नने, नर – नर
। ।

[–] चक्रेवक प्रतिष्ठा केव,
भेव जेना खन्त ।

[+] चन्द्रमा सँ मिवव जन्म
पाव क२ खन्त ।

[–] आध श्रितिक पाव मिवव, धवती –
गगन ।

[+ –] आयव रसन्त नने, नर – नर
उमग । ।



[-] :- स्त्री अराज [+] :- प्रकष
अराज [+ -] :- स्त्री आ प्रकष दूहक
समवेत अराज

देखु आयव रसलु

(गीत)

रौति गेव, रौति गेव, देखु रौतव हेमलु ।

निज दव-रव केव सँग, देखु आयव रसलु । ।

हरा मदहोशे रौहय, मोन उतड़ए - चढ़ए ।

जन सँतवि, अछि छायव अनग । ।

थग कववर कवय, बाह गमगम कवय ।



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

माधुसूदन चन्द्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

गुंजय कोयलीक सब दिग - दिगलु । ।

देखु केसब पवनि रेवरी चम्पा गुवारै ।

भेव सुबभित, धवा रंग अनलु । ।

बिबु ब्रेदना रैठव, मिवन सपना सजव ।

बम वगधत अछि, सुकजक किवा । ।

नहर शोखी उगव, आयव किशेवय नरव ।

वागय धवती केव कण - कण जीरलु । ।

* शोखी = शोखाहाज = गाढ - बिबिड



आयव होवीक दिन मतरावी

(गीत)

आयव होवीक दिन
मतरावी ।

छह दिशि अनंग
सम्भावी । ।

हव तबक रैहय मवयानिव

वष शीतव सुगन्धि चन्दन ।

सौमै भूतव हवियव - सुन्नव



हव उपरन जन नन्दन ।

मावय प्रसूति जेना
किवकारी ।

आयव होवीक दिन
मतरावी । ।

जहना तठै पव धूम मचव अछि,

कङ्क - भरन मे हवचव ।

बग - अरौब सँ वाव भेव आग,

जहना केव शामव - जव ।

मावय भवि - भवि क२
पिचकारी ।

आयव होवीक दिन
मतरावी । ।



एक दिशि अछि सब ग्राव - रौव,

दोसब दिशि सब ब्रजनाबी ।

रौच मे हर्षित - हृदित बाष्पिका,

सर्ग मे श्रुत - ह्रवाबी ।

भीजय ब्रजरावा केव
साङ्गी ।

आयव होवीक दिन
मतराबी । ।

आयव होवी केव तिलाव



आयव होवी केव तिलाव ।

सर्ग रससु रसराव ।

नेले आयव अडि सर्गहि, नर उर्मग – उल्लास
। ।

कतहु लोक सब सुधि – सुधि क२,

घोडि बहव छुथि भागि ।

कतहु करैतछि रावबृन्द सब,

बग घोडि रोक ओबिआउन ।

रहय मदहोशि रसात ।



संगे स्वभित्त सुवास ।

नेने आथव अङ्गि संगहि, नर जीरनक डसास
। ।

भोरे - भोरे नरकी भोजी,

कएवहि रैन केरौड् आ थिड्की ।

मोन थड् रिक रैहना रैना कह,

रैड्की भोजी थाष्ट पकड्वीह ।

लेकिन दियह रैड् चवाक ।

चवतहि किकहु ले कोनो रौत
।

नेने आथव ओ संगहि, रंग हवियव आ वाव
। ।



भैरवी कतरहु होथि वज्रिङ्गी

होथि प्रबन्की, नरकी - जूथनकी ।

चाहे कोनहु रैताना रैनगुती

लेकिन बग सँ आध ले रैचती ।

बगरैनि हिनकर दू गाव ।

कवरैनि ठाव दू गाव ।

लेने आयव छी सगहि, बग - खरीब - गुवाव
। ।

दियन्ह भाडज केव रीच होखछ अ

निर्मल प्रेमक धाव ।

अ प्रणीत खरसवि आयव अछि,

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०१ म अंक ०१ मार्च



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,
547X VIDEHA

मानक बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

एक रैबथ केव रौद ।

जुनि कक आष वाज ।

नहिषे आन कोनहु वाथ ।

कक आगत रैसलुक, बंग - अरौब दए हाथ
। ।

छायव मिथिवा मे आजू रैसलुक

(गीत)

जेम्बरहि देखु तेम्बर आष अछि भाँति - भाँति
केव बंग ।



आग भेल रैमठ लोक सब, पीरि क२ नरका
भंग । ।

भोग पीरि क२ आग अ बूढो,

पगवहि न२र थूमाबी ।

काया वकक, दाँतहु दैव,

पब नस - नस ये जूखानी ।

छायव चहु दिशि जेना उमंग ।

आग भेल रैमठ लोक सब, पीरि क२ नरका
भंग । ।

तेड़ा आजू सकस -
प्रतिज्ञा,



तकणी सर्ग ब्रह्मचारी
। *

छाडी धान-तप-लाग ओ पूजा

कामिनी सर्ग सखाबी ।

छायव अंग - अंग जेना अंग ।

आष भेव रेमंत लोक सभ, पीरि क२ नरैका
भंग । ।

यव - तव देखरी ये आरंभ

बाधा आ छटक छेवी ।

वाले कंग साडी वंग सँ तीतव

हवियव वंग बाँगव छेवी ।

छायव मिथिला ये आजू रसलु ।



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मासिक बिदेह *ISSN 2229-547X*

VIDEHA

आप भेल रैमठ लोक सब, पाँरि क२ नरैका
भंग । ।

* आपाँती सब प्रतीकामेक मात्र थिक । कोनहु
रक्षा विशेष रा समुदाय विशेष पब आम्बेप नहि ।

हे ई भौजरी कसवि किछ छी ?

(गीत)

हे आ (ई) भौजरी कसवि किछ छी ?

गाव हुवा छप रैसवि किछ छी ?



घर मे बैसदि किअ आँखि वाव करै छी ?

दू बूझ पड़िअ जेँ गेल, तँ किअ रँगाव करै छी ?

होती मे होखतहि अछि एहिना,

बग अरब मे, डूबल अ दूनिषा ।

मानर केव तँ रात कहू की,

नाचय धवती रँगि नरकनिषा ।

किअ कोप - भरन मे, अहाँ कपाव धुने छी ?

दू बूझ पड़िअ जेँ गेल, तँ किअ रँगाव करै छी ?



खेवथि ब्रँज मे गोपी केव संग्

छछजी बग अरौव ।

मिथिला मे रुग्ना अछि नाथ,

दियऽव भाँजि केव रीच ।

किए आग अहाँ हड़ताव कएने छी
?

दू बूँन पड़ि ए जँ गेल, तऽ किए रँगाव करै छी
?

कसु जूनि हम करै छी भौजी

हाथ जोड़ि नहोवा ।

एक रँवथ केव रौदहि आउत,

पारनि हेब दोरौवा ।



किं स्रष्टुं त्वं अपन, कात कएने छी ?

दू बूझ पड़ि ए जे गेव, तऽ किं बरौव करै छी ?

सभ सीवि – यीवि कऽ गाँउ

(गीत)

सभ सीवि – यीवि कऽ गाँउ ।

यूँगी सकाय
सजाउ ।

आयव होवीक तिहाव,
बग – अरौब वगाउ । ।



आयव रसल, रसल मवयक रसल ।

प्रश्रुति कामिनी कयव सोवहो शिगाव ।

नृप – आसन वगाड ।

घव – आम्न सजाड
।

आयव होवीक तिहाव,
वग – अरौव वगाड । ।

बृह हो, रौवक हो, हरा हो या हरती ।

सभमे जूखनी अछि, सभमे अछि मसुी ।

ढोव – डम्हा रँजाड ।

जुनि कनिषे
वजाड ।



आयव होवीक तिलाव
बग - अरौव वगाड । ।

अरधपुर्वी मे खेवथि वस्त्र, सीता केव सग
होवी ।

मिथिला मे अछि नामी सभतवि, दियहव भाँडजि केव
जोड् । ।

भौजी । एम्ब आड ।

जुनि घहव मे
नकाड ।

आयव होवीक तिलाव
बग - अरौव वगाड । ।

ई कनापव अपन मतर
[ggaj endr a@vi deha.com](mailto:ggajendr a@vi deha.com) पव पठाड ।



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,
VIDEHA

मासिक बिदेह, ISSN 2229-547X



१. बमेश मण्डल सोनू कुमार ना



‘बमेश’ ३. किशन कारीगर ४. कपिलेश्वर बाउत



१

बमेश मण्डल

गाम- निर्मली

पोस्ट- निर्मली

राउ नं. ०८

थाना- निर्मली, जिला- सुपौल

संप्रति- रयाख्याता (अंग्रेजी विभाग), अश्विनी दाम,
साहू-समाज अष्टव महिना महारिद्यालय- निर्मली,
सुपौल, मिथिला-रिहाय ।



अ छथि स्कुल प्राङ्गरेष्ट ठूँव

नन्हिठा स्कुलक दुनियाँमे
बैत अछि अ प्राङ्गरेष्ट ठूँव
हँसत पान चिरँरैत
दैत अछि ओ लेकचब
ओ समनेए ईसँ पैघ नै अ दुनियाँ
परब सच अ अछि
हिनकासँ रैसी कमाए एकठा दुनिया
किछु तँ घबक खर्ची काँटि क२
बैत अछि मेन्टीनेन्समे
प्रणाम सब स्नि क२
रैकैत अछि सेन्टीमेन्समे



ও कहैत थछि

हमरासँ नीक थछि कियो ई गाममे

पर्वच सच्चाग छ

चष्टियो नै थछि हिनकर पएबमे

थतेक कठिनाग केब रौदो

छ सुकन नै छोड़ता

हिठनर जकाँ प्राचार्यक आगाँ

हाथ छ जोड़ि रँजताह-

छुशिन मिलैक छ सुकन थछि संगम

रौतन थगब डेटऽ सए कपेया थछि

तेयो एका बली नै गम

कम रौतन पारि हम सन्तुष्ट हो नैरै

सिर्फ दुष्टा छुशिन पकड़ऽ दिओ



केनाहितो जीरे नेरै

हिंनव जकाँ प्राचार्य हिनका

मनमानिसँ जोतेत

कथनो ओ कार्यालयमे बथेत

तँ कथनो ओ सर्जनी खनराक नेन पठरैत

मिनरै अहाँसँ बूसनाएरै अहाँकेँ

कि रँच्चा दिख हमबा रिद्यालयमे अरशिय

एकब सख्या रँठत

तँ खबिदरै एक सकुन रँस

एते बहि प्राचार्यक जी-हजुबी कबरै

अगब रिचाव नै मिनत

तँ नरँका सकुन थोतरै

हिनक नावा अछि-

अहाँ रँच्चाकेँ स्रस्थ नागबीक रँना देरै



झुदा हिनक पठः १०३ रँछा

छाह-पान रँछेत नजब आउत

अंतमे बमेशे सब अपन नसीहत

भुन भुन आगरेष्ट छुँव नै रँनर

नावियन रँचि नैर

मज्जासँ बहर

आगरेष्ट छुँवक आ दर्दनाक कहानी

आ कतेक सच्ची कतेक सुनानी

२.



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,
547X VIDEHA

मानवसिंह सार्वभौम, ISSN 2229-



सोनू कुमार मा 'बप्पि', द्वाबा -
श्री रिमल कुमार मा, ग्राम- हबिनगव ,पो.—
बघुनीदेह, जिला -मधुबनी . बिहार

करिता

संतुलन

धवती पव पयव धवरा स पहिने
ऊँ हारामे साँस लेराम पहिने
अपन आँखि किछ देखराम पहिने
मावन जागत छी जन्म लेरा स पहिने

शोकक नहरि पसरि जागत अछि
जाहि घब जन्म लेत छी
कयन जागत अछि जन्म स कबेना
सभक नजरि अरुडेवन जागत छी



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,
VIDEHA

मासिक बिदेह, ISSN 2229-547X

सभ दिन बहनु हम आगु
भेटैत जखन मौका हमबा
तखन कियेक कबग छी हमबा सर्ग अन्याय
बोके छी कियेक अथरा स हमबा

खुटि प्रग्न ओहि मायस हमबा
कहैत छथि जे एकैसम सदीक नाबी
उडितहु कोना आकाशमे
माय जै गर्भमे दितथि मारि

खुटि हमब एकठा अर्जी
नहि बोकु धवती पब अथरास
दृष्टि जायत सृष्टिक सन्तान
केरत हमरेठा मबना स

३.



किशोर कारीगर

कबीका कपेया ।

(हस्त करिता)

नेहोवा करैत करैत मरि गेल कारीगर
नहि नियथ आ ने दियथ कबीका कपेया
झुदा आ की कोनो काज करैरौक थुडि
त कहन जायत जन्दी नाउ कबीका कपेया ।

मौका भेटैना पब सबकारी राबू नहि छोटत



कपेया रिन एका ठा काज ने होएत

अहाँ फायन न रर्थ घुमेत छी यो भैया

काज करैक अछि त जन्दी नाड कबीका
कपेया । ।

कहनु त स्रिस रैंक मे खाता थोनाएँ

छुपेचाप पार्टी ऑफिस मे चंदा जमा कवाएँ

जोरैत जिनगी हम अप्पन झूठी रैनएँ

मोन होएत त रिदेशी यात्रा पब जाएँ । ।

कतरौ हल्ला कवर ते स की

स्रिस रैंक मे जमा बहत कवरै की

ब्रूठा बहन अछि सबकारी खजाना



खहूँ बहूँ हमहूँ ब्रष्टैत छी जमा कर कबीका
कपेया । ।

भ्रष्टाचारक ठेवीपुनहा संपति हमरे छी
एहि दुआरे पक्ष-रिपक्ष मे वगवा भेल ओ भैया
एक दोसबाक झूठ पब कबीका आही हेलकक
बाजनैतिक घमासान मचा देलक कबीका कपेया । ।

बामनीना मैदान मे जनआंदोलन भेल
लोकपाल पब कोनो ठोस काबराङ्ग ने भेल
सबकाब हेलि काष्ट बहन अछि बुझलहुँ की
साह सुथवा लोकपाल कहियो आउत ने । ।

भ्रष्टाचार मे खुम नाम कमेलहुँ झुदा



तगयो सतौष नहि भेल ओ भैया

भ्रष्टाचारक रोगी था देह फूटाड

सपैत ढूँ बियाड अहाँ जमा कर कबीका कपैया । ।

दुनियाक सब सँ नमहब लोकतंत्र मे

कसी हथिअरक होड मचन अछि

अहाँ जूनि पढाड गठजोड कर यौ भैया

छुपेछाप अहाँ जमा कर कबीका कपैया । ।

हन्ना-गुन्ना कबने किछु काज ने होएत

रिना किछु लेने-देने हाथन ने घुसकत

ग्रामानदारी स किछो नहि तकैत की छी

जन्दी जेरी गवम कर नाड अहाँ कबीका कपैया । ।



४



कपिलेश्वर बाउत

करिता-

मागक ओदमे जे भाषा सिखनक

पबदेशी जा सभ रिसबनक ।

गाम आरि काहे-रुहे रैजेए

समाज कहैत आरि रैछु रूनेए ।

पठन लिखन आव रिगाबनक



रौत रौचारे कनभेनष्ट धरैनक ।

चारि-ठारि अंग्रेजिया पकड्ा

मातृभाषाके खिली उड्ा नक ।

अपन भाषा रिसवि

रहवरैया भाषा अपनोनक ।

अहाँ मैथिलीके केना आगु केनौ

अपने तँ गेरै केनौ रौचारेके भसिऐनौ ।

जेतरौ अज्जत गौआँ दगए

पवदेशी ओकवा थरुटेए ।

गौआँ-घरुआ मैथिली जियारैए

पवदेशिया राहव भगारैए ।

कनिये अंग्रेजिया जेव नगरिओ

मैथिलीके आगाँ देखरिओ ।

बि दे हू बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०१ म अंक ०१ मार्च



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,
547X VIDEHA

मानवसिंह सार्वभौम, ISSN 2229-

जनक आ सीताक भाषा अपनाउ

कर्म छोड़ू नै अपनारै रैनाउ ।

बिद्यापति आ यात्री कहि गेला

मण्डन आ अयाची कर्म रीब भेला ।

अपन भाषा सब जन मिथै

एकरा नै बुझू हँसी ठैठा ।

ई कनापब अपन मतिर

ggaj_endr_a@videha.com पब पठाउ ।



बिदेह नूतन अंक मिथिला कला संगीत

१.



बाजनाथ मिश्र

चित्रमय मिथिला स्लागड शो

चित्रमय मिथिला

(<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/>)

२.

बिन्दु बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०१ म अंक ०१ मार्च



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,
547X VIDEHA

मानुषिह संस्कृतम् ISSN 2229-



डमेशे मल्लन

मिथिलाक रनस्पति स्नागड शो

मिथिलाक जीर-जल्लु स्नागड शो

मिथिलाक जिनगी स्नागड शो

मिथिलाक रनस्पति/ मिथिलाक जीर जल्लु/ मिथिलाक
जिनगी

(<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/>)

ई कनापब अपन यंत्र

ggajendra@videha.com पब पठाड ।



बिदेह नूतन अंक गद्य-पद्य भावती

१. मोहनदास (दीर्घकथा): लेखक: उदय प्रकाश (मुव
हिन्दीसँ मैथिलीमे अनुराद रिलीत उपेव)

मोहनदास (मैथिली-देरनागरी)

मोहनदास (मैथिली-मिथिलासंस्कृत)

मोहनदास (मैथिली-ब्रैव)

२. छिन्नमस्ता- प्रभा खेतानक हिन्दी उपन्यासक सुशीला
मा द्वारा मैथिली अनुराद

छिन्नमस्ता

३. कनकमणि दीक्षित (मुव नेपालीसँ मैथिली अनुराद
धीरेन्द्र प्रेमर्षि)



भगता रैङ्क देशे-भूषा

४.



मंगलेश डरवान- हिन्दीसँ मैथिली



खनुराद रिनित उपेन

घब शाँत अछि

रौद भीत केँ बकमे-बकम तपा बहल अछि
नगे मे एकठा मस्मि आँच अछि
रिछोना पब एकठा गेद पडल अछि
पोथी छपचाप अछि



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मासिक चक्रान्तर, ISSN 2229-547X

VIDEHA

झुदा ओकबामे कतेक बास रिपेत रँद थुछि

हम अपजागर छी आव अपसुतर छी
अपसुतर छी आव अपजागर छी
रौहबसँ आरौ रँना शोबमे
केकरो कानैक शोब नै थुछि
केकरो धमकारैक रा डरैक शोब नै थुछि
नै कियो प्रार्थना क२ बहर थुछि
नै कियो भाँख माँगि बहर थुछि

आ हमब भाँतब कनियो ठाँ मैर नै थुछि
झुदा एकठ्ठा पबछायन ठाम थुछि
जतय कियो बहि सकैत थुछि
आ हम नाचाव नै छी ई कार
झुदा भवर छी एकठ्ठा जकरी रेदनासँ
आ हमबा मोन पडि बहर थुछि नैना कानक घब
जकब थुंगनामे चितंग भ२ हम
पीठ पब धुप तापेत बही

हम दुनियासँ किछ नै माँगि बहर छी
हम जी सकैत छी
बुक्खा, गेद रा घास सन कोनो जिनगी
हमबा चिंता नै
कहिया कियो मरठहासँ हिराक२ ठाँहि देते
ई शाँति घबकै ।



(बचनाकाल : 1990)

रौतानां प्रते



डा. शशिधर कुमार “बिदेह” –

कानि दे हमरो खेलौना

(रौतगीत)

माए गे माए । कानि दे हमरा
खेलौना ।

कनिष्ठा – प्रतवा केव दिन गेलौ, नेरै ने हम
मूनमूनहना । ।



हमब असकत केव सर्गी सभ,

जानि ने की - की तारैए ।

“मैथिल बूढ़ाँ रैक” कहि क२ हमबा,

ओ सभ रोज सिहारैए ।

हमरो कीनि दे रौरीं थुड़ाया, डिङनी रैना
थेलौना ।

माए गे माए । कीनि दे
हमबा थेलौना । ।

केओ उड़ारैए हराग - जहाज,

केओ मोष्ठब के दौड़ारैए ।

केओ हाथ रैन्दुक न२ घुमए,

रिडियो - गेम देखारैए ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

547X VIDEHA

मानक बिदेह बिदेह ISSN 2229-

सभरक हाथ बिमोठ खेनौना, हमरा लग
हुनमूहना ।

माए गे माए । कीनि दे
हमरा खेनौना । ।

पिया भावती – सिया हमर,

आ रौआ गौतम – मन्दन ।

पिया हमर बुधियावि रहुत,

आ रौआ तेहने सज्जन ।

जुनि कानू, मोन छोठ कक नहि, कीनि देर रहुते
खेनौना ।

माए गे माए । कीनि दे
हमरा खेनौना । ।



रैछा लेखनि द्वारा स्वर्णाय श्लोक

१. प्रातः काल ज्ञानमूर्ति (सूर्योदयक एक घण्टा पहिने)
सर्वप्रथम अपन दू हाथ देखैक चाही, आ ओ श्लोक
रैजैक चाही ।

कवांछे रसते नमः कवमस्तु सर्वस्वती ।

कवमूले स्थिते ज्ञाने प्रभाते कवदर्शनम् ॥

कवक आगाँ नमः रसिते दुधि, कवक मध्यामे
सर्वस्वती, कवक मूलमे ज्ञाने स्थिते दुधि । भोवमे
ताहि द्वारे कवक दर्शन कवकैक थीक ।

२. संध्या काल दीप जेसकैक काल-

दीपमूले स्थिते ज्ञाने दीपमस्तु जनार्दनः ।

दीपांछे शिखरः प्राकृतः संध्याज्यातिर्नमोऽस्तुते ॥



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

547X VIDEHA

मानकीय संख्या ISSN 2229-

दीपक मूल भागमे ब्रह्मा, दीपक मध्याभागेमे जनार्दन
(विष्णु) आर दीपक अग्र भागमे शिव स्थित छथि ।
हे संध्याजाति । अहाँकेँ नमस्कार ।

३. स्वतः काल-

वामं स्कन्दं हनुमन्तं रैनतेर्यं वृकोदरम् ।

शयने यः स्मरेन्नितं दुःस्वप्नस्तु नश्यति ॥

जे सभ दिन स्वतःसँ पहिने
वाम, कृष्णायामी, हनुमान्, गण्ड आर भीमक स्मरण
करैत छथि, हुनकर दुःस्वप्न नष्ट भऽ जागत छन्हि ।

४. नहैरौक समय-

गङ्गा च यङ्गने तैर गोदारवि सबस्यति ।

नर्मदे सिङ्गु कारेवि जनेऽस्मिन् सन्निधिं करु ॥

हे गङ्गा, यङ्गना, गोदारवी, सबस्यती, नर्मदा, सिङ्गु आर
कारेवी धार । एहि जलमे अपन सान्निध्य दिथ ।

५. उतर्ब यसेन्द्रस्य हिमाद्रश्चैव दक्षिणम् ।

रश्मिं तत् भावतं नाम भावती यत्र सन्ततिः ॥



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

समस्तक उत्तवमे आह तिमनयक दक्षिणमे भावत अछि
आह ओतका सन्तति भावती कहैत छथि ।

३.अहना द्रौपदी सीता तारा मन्दादरी तथा ।

पञ्चक ना अरेल्लि महापातकनाशिकम् ॥

जे सभ दिन अहना, द्रौपदी, सीता, तारा आह
मन्दोदरी, एहि पाँच साप्ती-स्त्रीक अवण करैत
छथि, हुनकर सभ पाप नष्ट, भइ जागत छन्हि ।

१.अग्निधोमा रत्निरासो हनुमान्च रिभीषणः ।

धृपः पञ्चवामश्च सन्तुते चिबङ्गरीनः ॥

अग्निधोमा, रत्नि, रास, हनुमान्, रिभीषण, धृपाचार्य आह
पञ्चवाम- आ सात ठाँ चिबङ्गरी कहैत छथि ।

४.साते भरतु अर्पिता देरी शिखर रासिनी

उत्थेन तपसा वृद्धा यथा पञ्चपतिः पतिः ।

सिद्धिः साक्ष्य सतामस्तु प्रसादान्तुष्ट धूर्जष्टेः

जाल्हरिफेननेथेर यन्त्रि शिषिनः कना ॥

६. रौनोहं जगदानन्द न मे रौना सबसती ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

547X VIDEHA

मानकीय संकेतः ISSN 2229-

अपूर्णे पंचमे वर्षे रक्षायामि जगत्त्रयम् ॥

१०. दुरास्मित मन्त्रशुक्ल यजुर्वेद अध्याय २२, मंत्र २२)

आ ब्रह्मन्निष्ठा प्रजापतिवन्द्यः । निर्भोकता
देवताः । सुवाङ्मतेतिष्ठन् । षड्जः स्ववः ॥

आ ब्रह्मन् ब्रह्मन् श्रौतं ब्रह्मन् रचिंसी जायताम्
वायुं वायुं वायुं श्रौतं वायुं वायुं श्रौतं वायुं
मन्त्रवन्ता जायतां दोग्ध्री
धेनुर्वेतां नन्दरानां श्रुः सन्तिः प्रवर्हिर्वेतां
जिष्णुं वन्तेऽग्राः सन्तेऽग्राः हाराश्च यजमाना
रीरो जायतां निकांमे-निकांमे नः पर्जन्या
रश्मिं हनन्तं नन्तं वधः पचन्तां योगेष्मन्मो
नः कम्पताम् ॥ २२ ॥

मन्त्रार्थाः सिद्धयः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोवन्ताः ।
शत्रूणां रूक्षिनामोऽस्तु मित्राणां हृदयस्तु ।

ॐ दीर्घायिर्भूत । ॐ सौभाग्यरती भव ।

हे भगवान् । अपन देशीमे सुयोग्य आ सरीत्र
रिद्धार्थी उपेन्न होथि, आ शत्रुके नशि कएनिहव सैनिक
उपेन्न होथि । अपन देशीक गाय खुरै दुध दय रानी,
रैवद भाव रहन कबएमे सम्म होथि आ घोड़ा ।



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

बुबित कपेँ दौगय रँना होए । म्नीगण नगबक
नेत्र कबरामे सम्म होथि आ हारक सभामे
उजपूर्ण भाषण देरयँना आ नेत्र देरामे सम्म
होथि । अपन देशमे जखन आरथक होय रसा होए
आ ठुमक-रुँटी सरदा परिपक्व होगत बहए । एर
हमे सभ तबहै हमरा सभक कर्णा होए । शत्रुक
रुँहिक नाश होए आ मित्रक उदय होए ॥

मनुष्यके कोन रसुक गछा कबरोक चाही तकव रणन
एहि मनेमे कएन गेल अछि ।

एहिमे राचकबुधपमानङ्काव अछि ।

अनुय-

ब्रह्मन् - रिद्या आदि गुप्त परिपूर्ण ब्रह्म

बाष्पे - देशमे

ब्रह्मरुचि-ब्रह्म रिद्याक तेजस हकत

आ जायता- उपेन होए

बाजुः-बाजा

शुभ-रिना डब रँना



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,
547X VIDEHA

मानकीकृत संस्कृतम् ISSN 2229-

अथर्वान्- रौप्य चलेरौमे निष्पन्न

अतिरौप्य-शिवकौ तावन्न दय रौप्य

महावन्धो-पैय वध रौप्य रौप्य

दोग्ध्री-कामना(दुध पूर्ण कवच रौप्य)

धेनुर्वेतांनन्दरानांशुः धेनु-गौ रा रौप्य

रौतांनन्दरा- पैय रौप्य नांशुः-आशुः-रुवित

सन्धिः-योद्धा १

पुवर्हिर्वेतां- पुवर्हि- रौरावकौ धावन्न कवच
रौप्य रौप्य-मन्त्री

जिष्णु-शिवकौ जीतए रौप्य

वन्धेष्ठाः-वध पुवर्हि

सन्धेयो-उत्तम सन्धामे

हराश्व-हरा जेहन

यजमानश्व-बाजाक बाजामे



बी॒रो-शु॒के॒ प॒राजि॒त क॒र॒ए॒र॒ना

नि॒का॒मे-नि॒का॒मे-नि॒श्च॒य॒ह॒र॒त॒ कार्य॒मे

नः-ह॒म॒ब॒ स॒भ॒क

प॒र्ज॒ना-मे॒घ

र॒ष॒भ॒-र॒षा॒ हो॒ए

ह॒न॒र॒ना-उ॒त्त॒म॒ ह॒न॒ र॒ना

उ॒ष॒ध॒-उ॒ष॒धिः

प॒चा॒न्ता- पा॒क॒ए

यो॒गे॒ष्म॒मो-अ॒न॒न्त॒ न॒न्त॒ क॒रे॒र॒क॒ हे॒तु॒ क॒ए॒न॒ गे॒न॒
यो॒ग॒क॒ व॒ष्मा

नः-ह॒म॒बा॒ स॒भ॒क॒ हे॒तु॒

क॒म्प॒ता॒म्-स॒म॒र्थ॒ हो॒ए

त्रि॒वि॒ध॒क॒ अ॒न॒रा॒द- हे॒ त्रि॒ल॒ोक॒, ह॒म॒ब॒ बा॒ज॒मे॒ त्रि॒ल॒ोक॒
नी॒क॒ पा॒र॒मि॒क॒ रि॒द्या॒ र॒ना, बा॒ज॒न्त॒-री॒व॒,ती॒र॒दा॒ज॒, दु॒ध॒ द॒ए
र॒ानी॒ गा॒य, दौ॒ग॒य॒ र॒ना॒ ज॒न्तु॒, उ॒द्य॒मी॒ ना॒री॒ हो॒थि॒ ।



पार्जन्य आरथकता पडना पब रसि देथि, हन देथ
रैना गाढ पाकए, हम सब संपत्ति अर्जित/संवर्धित
कबी ।

8.VI DEHA FOR NON RESIDENTS

8.1 to 8.3 MAITHILI LITERATURE IN ENGLISH

8.1.1.The Comet –GAJENDRA THAKUR
translated by Jyoti Jha chaudhary

8.1.2.The Science of Words – GAJENDRA
THAKUR translated by the author
himself

8.1.3.On the dice-
board of the millennium- GAJENDRA
THAKUR translated by Jyoti Jha
chaudhary

8.1.4.NAAGPHANS (IN ENGLISH)-
SHEFALI KA VERMA translated by Dr.
Rajiv Kumar Verma and Dr. Jaya
Verma



बिदेह नूतन अंक भाषापाक बचना-लेखन

Input : (कोष्ठकमे देरनागरी, मिथिलाक्षर किंवा
फोनेटिक-रोमनमे णगप कर । Input in
Devanagari, Mithilaakshara or
Phonetic-Roman.) Output :
(परिणाम देरनागरी, मिथिलाक्षर आ फोनेटिक-रोमन/
रोमनमे । Result in Devanagari,
Mithilaakshara and Phonetic-Roman/
Roman.)

- ☒ English to Maithili
- ☐ Maithili to English



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मानवविज्ञान संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

अंग्रेजी-मैथिली-कोश / मैथिली-अंग्रेजी-कोश

प्राजेक्टके आगु रेट्टा, अपन सुमार आ योगदान

अ-मेर द्वावा ggaj_endra@videha.com पब पठाउ ।

बिदेहक मैथिली-अंग्रेजी आ अंग्रेजी मैथिली कोश
(अष्टवनेष्टपब पहिल रैब सर्च-डिक्शनरी) एम.एस.
एस.क्यू.एन. सर्व आधरित -Based on ms-sql
server Maithili-English and
English-Maithili Dictionary.

१.भावत आ नेपाक मैथिली भाषा-बैज्ञानिक लोकनि
द्वावा रैनाउत मानक शैली आ २.मैथिलीमे भाषा
सम्पादन पाठक्रम

१.नेपाक आ भावतक मैथिली भाषा-बैज्ञानिक लोकनि
द्वावा रैनाउत मानक शैली

१.१. नेपाक मैथिली भाषा बैज्ञानिक लोकनि द्वावा
रैनाउत मानक उच्चारण आ लेखन शैली
(भाषाशास्त्री डा. बामराताब यादरक धारणाके पूर्ण
कपसँ सङ्ग दत्त निर्धारित)
मैथिलीमे उच्चारण तथा लेखन



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

१. पञ्चमस्कव आ अनुस्राव. पञ्चमस्कवानुशात ७, ए०, १, न एरं म अरैत अछि । संस्कृत भाषाक अनुस्राव शिष्टक अनुस्रावमे जाहि रश्माक अस्मव बहैत अछि ओही रश्माक पञ्चमस्कव अरैत अछि । जेना-
अरु (क रश्माक बहैक कावणे अनुस्रावमे ७ आएन अछि ।)
पञ्च (च रश्माक बहैक कावणे अनुस्रावमे ए० आएन अछि ।)
खल (छ रश्माक बहैक कावणे अनुस्रावमे १ आएन अछि ।)
सखि (त रश्माक बहैक कावणे अनुस्रावमे न् आएन अछि ।)
खल (प रश्माक बहैक कावणे अनुस्रावमे म् आएन अछि ।)
७पञ्चमस्क रीत मैथिलीमे कम देखन जागत अछि । पञ्चमस्कवक रीदनामे अधिकारी जगहपव अनुस्रावक प्रयोग देखन जागछ । जेना- अरु, पञ्च, अरु, सखि, अरु आदि । रश्माकबहैक पञ्चमे गोरिन्द नाक कहै छनि जे करश्मा, चरश्मा आ छरश्मासँ पूर्ण अनुस्राव लिखन जाए तथा तरश्मा आ परश्मासँ पूर्ण पञ्चमस्कवे लिखन जाए । जेना- अरु, चरश्मा, अरु, अनु तथा कम्पन । छदा हिन्दीक निकट बहै आधुनिक लेखक एहि रीतकेँ नहि मानैत छथि । ओ लोकनि अनु आ कम्पनक जगहपव सेहो अरु आ कम्पन लिखैत देखन जागत छथि ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)
547X VIDEHA

मानकीकृत ISSN 2229-

नरीन पछति किछु स्वरिषाजनक खरथु छैक । किएक
तँ एहिमे समय आ स्थानक रँचत होगत छैक ।
झुदा कतोक रँब हस्तलेखन रा झुदामे खनुझाबक
छोष्ट सन रिन्दु स्पष्ट नहि भेलासँ अर्थक अनर्थ होगत
सेहो देखन जागत अछि । खनुझाबक प्रयोगमे
उच्चारण-दोषक समुहारना सेहो ततरँए देखन जागत
अछि । एतदर्थ कसँ न२ क२ परञ्चा धरि पञ्चमाक्षरेक
प्रयोग कवरँ उचित अछि । यसँ न२ क२ छ धरिक
अक्षरक समूँ खनुझाबक प्रयोग कवरँमे कतहु कोनो
रिवाद नहि देखन जागछ ।

२. ठ आ ट : ठक उच्चारण “व् ह”जकाँ होगत
अछि । अतः जत२ “व् ह”क उच्चारण हो ओत२
मात्र ठ लिखन जाए । आन ठाम खाली ठ लिखन
जएरँक चाही । जेना-

ठ = ठाकी, ठेकी, ठीठ, ठेडुआ, ठम्मी, ठेवी, ठाकनि,
ठाठ आदि ।

ठ = पढ़ १ग, रँठरँ, गठरँ, मठरँ, रूँठरँ, साँठ, गाठ,
बीठ, चाँठ, सीठी, पीठी आदि ।

उपर्युक्त शिष्ट, सबकेँ देखलासँ ए स्पष्ट होगत अछि
जे साधारणतया शिष्टक श्रुतमे ठ आ मध्य तथा अन्तमे
ठ अरैत अछि । एएह नियम ड आ डक सन्दर्भ
सेहो लागू होगत अछि ।

সামান্যতয়া শিষ্টক শব্দমে এ মাত্র খরিত খন্টি । জেনা
এহি, এনা, একব, এহন আদি । এহি শিষ্ট, সন্তক
স্থানপব যহি, যনা, যকব, যহন আদিক প্রয়োগ নহি



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)
547X VIDEHA

मानुषिंह बरकत, ISSN 2229-

कवरौक चाली । यद्यपि मैथिलीभाषी थाक सहित किछु
जातिमे शिछक आवन्तामे “ए”केँ य कहि उच्चारण कएत
जागत छटि ।

ए आ “य”क प्रयोगक सम्बन्धमे प्राचीन पञ्चतिक
अनुसन्धान कवरौ उपहाऊ मानि एहि पुस्तकमे ओकर
प्रयोग कएत गेल छटि । किएक तँ दुनूक लेखनमे
कोनो सहजता आ दुरुहताक रीत नहि छटि । आ
मैथिलीक सरसाधारणक उच्चारण-शैली यक अपेक्षा एस
रैसी निकट छैक । थाम क२ कएत, हएर आदि
कतिपय शिछकेँ कैत, हँर आदि कपमे कतहु-कतहु
लिखत जाएर सेहो “ए”क प्रयोगकेँ रैसी समीचीन
प्रमाणित करैत छटि ।

७.हि, हू तथा एकाव, ओकाव : मैथिलीक प्राचीन
लेखन-पत्रपत्रमे कोनो रीतपत्र रँत दैत कात शिछक
पाछाँ हि, हू तगाओत जागत छैक । जेना- हुनकहि,
अपनहु, ओकबहु, तकोरहि, टोष्टहि, आनहु आदि ।
झुदा आधुनिक लेखनमे हिक स्थानपत्र एकाव एर हुक
स्थानपत्र ओकावक प्रयोग करैत देखत जागत छटि ।
जेना- हुनके, अपनो, तकोने, टोष्ट, आनो आदि ।

१.ष तथा थ : मैथिली भाषामे अधिकारितः षक
उच्चारण थ होगत छटि । जेना- षडान्त (थडान्त),
षोडशी (थोडशी), षष्टकोष (थष्टकोष), वृषेशी
(वृथेशी), सन्ताष (सन्ताथ) आदि ।



+ प्रनि-रूप : निम्नलिखित खरसुत्रमे शिष्टसँ प्रनि-रूप

भ२ जागत अछि:

(क) क्रियानुयी प्रत्य अयमे य रा ए वृष्ट भ२ जागत अछि । ओहिमे सँ पहिने एक उच्चावर्ण दीर्घ भ२ जागत अछि । ओकर आगाँ रूप-सूचक चिह्न रा रिकारी (' / २) लगाओल जागछ । जेना-

पूर्ण कप : पठए (पठय) गेनाह, कए (कय) नेन, उठए (उठय) पडतौक ।

अपूर्ण कप : पठ गेनाह, क' नेन, उठ' पडतौक ।

पठ२ गेनाह, क२ नेन, उठ२ पडतौक ।

(ख) पुरकानिक छत आय (आए) प्रत्यमे य (ए) वृष्ट भ२ जागछ, झुदा रूप-सूचक रिकारी नहि लगाओल जागछ । जेना-

पूर्ण कप : थाए (य) गेन, पठाय (ए) देर, नहाए (य) अएनाह ।

अपूर्ण कप : था गेन, पठा देर, नहा अएनाह ।

(ग) स्त्री प्रत्य एक उच्चावर्ण क्रियापद, संज्ञा, ओ विशेषण तीनुमे वृष्ट भ२ जागत अछि । जेना-

पूर्ण कप : दोसबि मानिनि चलि गेलि ।

अपूर्ण कप : दोसब मानिन चलि गेल ।

(घ) वर्तमान छदन्तक अन्तिम त वृष्ट भ२ जागत अछि । जेना-

पूर्ण कप : पठैत अछि, रजैत अछि, गरैत अछि ।

अपूर्ण कप : पठै अछि, रजै अछि, गरै अछि ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

547X VIDEHA

मानकीकृत संस्कृतम् ISSN 2229-

(७) क्रियापदक खरसान एक, उक, एक तथा हीकमे
ब्रह्म भ२ जागत अछि । जेना-

पूर्ण कप : द्वियोक, द्वियेक, द्वीक, द्वौक, द्वैक,
खरितेक, होगक ।

अपूर्ण कप : द्वियो, द्विये, द्वी, द्वौ, द्वै, खरिते,
होग ।

(८) क्रियापदीय प्रत्यय न्ह, ह् तथा हकावक रूप भ२
जागछ । जेना-

पूर्ण कप : द्विह, कहवह, कहवह्, गेवह, नहि ।

अपूर्ण कप : द्वि, कहवनि, कहवौ, गेव२, नग, नगि,
ने ।

९. ध्रुवि स्थानानुवर्ण : कोनो-कोनो ध्रुव-ध्रुवि अपना
जगहसँ हटि क२ दोसर ठाम चलि जागत अछि ।
थाम क२ द्रुव ग आ उक सँधमे ग राँत लागू
होगत अछि । मैथिलीकष भ२ गेव शिष्टक मध्य रा
अन्तमे जँ द्रुव ग रा उ आरँध तँ ओकव ध्रुवि
स्थानानुवर्तित भ२ एक अक्षर आगाँ आरि जागत
अछि । जेना- शिनि (शिजन), पानि (पाजन), दानि (दाजन),
माष्टि (मागष्ट), काद्ध (काडद्ध), मास्र (माडस)
आदि । रूदा तसेम शिष्ट, सभमे ग निधम लागू नहि
होगत अछि । जेना- बशिके बगश आ स्रपाशिके
स्रपाडस नहि कहन जा सकैत अछि ।



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

१०. हलन्त ()क प्रयोग : मैथिली भाषामे सामान्यतया
हलन्त ()क आरम्भिकता नहि होगत छि । काव्य
जे शिष्टक अन्तमे अ उच्चारण नहि होगत छि ।
हुदा संस्कृत भाषासँ जहिनाक तहिना मैथिलीमे आब
(तसेम) शिष्ट, सभमे हलन्त प्रयोग कएत जागत
छि । एहि पोथीमे सामान्यतया सम्पूर्ण शिष्टक मैथिली
भाषा सम्वन्धी निम्न अन्तमे हलन्तरितीन बाखत गेल
छि । हुदा आरम्भिक सम्वन्धी प्रयोजनक लेल
आरम्भिक स्थानपत्र कतह-कतह हलन्त देल गेल
छि । प्रसृत पोथीमे मैथिली लेखनक प्राचीन आ
नवीन दुनु शैलीक सबत आ समीचीन पक्ष सभकें समेटि
कह रर्ष-रिचार्ज कएत गेल छि । स्थान आ समयमे
रचितक सम्बन्धि हलन्त-लेखन तथा तकनीकी दृष्टिसँ सेहो
सबत होर-रौरा हिसारसँ रर्ष-रिचार्ज मिलाओल गेल
छि । वर्तमान समयमे मैथिली मातृभाषी पर्यन्तकें
आन भाषाक माध्यमसँ मैथिलीक ज्ञान लेर-पडि बहल
परिप्रेक्ष्यमे लेखनमे सहजता तथा एककपतापत्र ध्यान
देल गेल छि । तखन मैथिली भाषाक मुल
विशेषता सभ कथित नहि होएक, ताहू दिस
लेखक-मन्त्र सचेत छि । प्रसिद्ध भाषाशास्त्री डा.
बामरताब यादवक कहै छनि जे सबतक
अन्तर्गतमे एहन अरुता किन्तु ने आर-देरक चाली
जे भाषाक विशेषता छहमे पडि जाए ।
-(भाषाशास्त्री डा. बामरताब यादवक भाषाकें पूर्ण
कपसँ सम्बन्धित)



१.२. मैथिली अकादमी पठना द्वारा निरूपित मैथिली लेखन-शैली

१. जे शैली, मैथिली-साहित्यक प्राचीन कालसँ आग धरि जाहि रीतिमे प्रचलित छल, से सामान्यतः ताहि रीतिमे लिखल जाय- उदाहरणार्थ-

ग्राह

एथन
ठाम
जकब, तकब
तनिकब
अछि

अग्राह

अथन, अथनि, एथेन, अथनी
ठिमा, ठिना, ठमा
जेकब, तेकब
तिनकब । (रैकल्पिक रूपेँ ग्राह)
ईछ, अहि, ए ।

२. निम्नलिखित तीन प्रकारक रूप रैकल्पिकतया
अपनाओल जाय: भ२ गेल, भय गेल वा भए गेल ।



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

जा बहन थुँ, जाय बहन थुँ, जाए बहन थुँ ।
कब गेलाह, रा कबय गेलाह रा कबए गेलाह ।

३. प्राचीन मैथिलीक 'न्ह' ध्वनिक स्थानमे 'न' लिखल जाय सकैत थुँ यथा कहलनि रा कहलन्हि ।

४. 'ई' तथा 'उ' ततय लिखल जाय जत 'स्पृष्ट': 'अग' तथा 'अड' सदृश उच्चारण अछि हो । यथा-
देखैत, छुल्लैक, रौंखा, छुल्लैक अलादि ।

५. मैथिलीक निम्नलिखित शिष्ट, एहि कपे प्रहाङ्ग होयत: जैह, सैह, अएह, ओह, लैह तथा दैह ।

६. ह्रस्व अकारांत शिष्टमे 'अ' के वृद्ध कबल सामान्यत: अग्रह थिक । यथा- अग्रह देखि आरह, मारिनि गेलि (मनुष्य मात्रमे) ।

७. स्वतंत्र रूप 'अ' रा 'य' प्राचीन मैथिलीक उच्चारण आदिमे तँ यथारत बाखल जाय, किंतु आधुनिक प्रयोगमे रैकल्पिक कपे 'अ' रा 'य' लिखल जाय । यथा:- कयल रा कएल, अयलाह रा अएलाह, जाय रा जाए अलादि ।

८. उच्चारणमे दु स्वक रीच जे 'य' ध्वनि स्वत: आरि जागत थुँ तकवा लेखमे स्थान रैकल्पिक कपे देल



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,
547X VIDEHA

मानवसिंह बरकत, ISSN 2229-

जाय । यथा- धीखा, अटैखा, रिखाह, रा धीया,
अटैया, रिखाह ।

९. सान्नासिक स्रुतत्र स्रुवक स्थान यथासंभार 'ए' निखन
जाय रा सान्नासिक स्रुव । यथा:- मैएण, कनिएण,
किवतनिएण रा मैएँ, कनिएँ, किवतनिएँ ।

१०. कावकक रिभक्तिभक्त निम्नलिखित रूप त्राह:-
हाथकै, हाथसँ, हाथेँ, हाथक, हाथमे । 'मे' मे
अनुस्राव सर्रथा लज्ज थिक । 'क' क रैकम्पिक रूप
'केव' बाखन जा सकैत अछि ।

११. पूर्वकारिक क्रियापदक रौद 'कय' रा 'कए' अरुय
रैकम्पिक रूपेँ वगाउन जा सकैत अछि । यथा:-
देखि कय रा देखि कए ।

१२. माँग, भाँग आदिक स्थानमे माँ, भाँ आदि
निखन जाय ।

१३. अर्द्ध 'न' ओ अर्द्ध 'म' क रौदना अनुस्राव नहि
निखन जाय, किन्तु टापक सुविधार्थ अर्द्ध 'ँ' , 'एँ',
तथा 'ण' क रौदना अनुस्रावो निखन जा सकैत अछि ।
यथा:- अर्द्ध, रा अँक, अखन रा अँचन, कँठ रा
कँठ ।



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

१४. हर्त टिह निश्चयतः नगाउन जाय, किंतु रिभञ्जिक संग अकारांत प्रयोग कएन जाय । यथा:- श्रीमान् किंतु श्रीमानक ।

१५. सब एकन कारक टिह शिष्टमे सष्ठा क' निखन जाय, हष्ठा क' नहि, सहाज रिभञ्जिक हेतु ह्वाक निखन जाय, यथा घब पबक ।

१६. अनुनासिककेँ चन्द्रबिन्दु द्वारा रञ्ज कयन जाय । पर्वत ऋक्षक सुरिधार्य हि समान जट्टन मात्रापव अनुस्वारक प्रयोग चन्द्रबिन्दुक रँदना कयन जा सकैत छि । यथा- हि केव रँदना हि ।

१७. पूर्ण विराम पासीसँ (।) सूचित कयन जाय ।

१८. समस्त पद सष्ठा क' निखन जाय, रा हागफेनसँ जोडि क' , हष्ठा क' नहि ।

१९. निख तथा दिख शिष्टमे रिक्कारी (२) नहि नगाउन जाय ।

२०. अंक देरनागरी कपमे बाखन जाय ।

२१. किछु प्रनिक नेन नरीन टिह रँनराउन जाय । जा अ नहि रँनन छि तारत एहि दूनु प्रनिक रँदना

হ./- গৌরিন্দ না ১১/৭৩ শ্রীকান্ত ঠাকুর ১১/৭৩
স্বৰেন্দ্র না "স্বমন" ১১/০৭/৭৩

২.১. উচ্চাংশ নির্দেশ: রৌন্ড কএন কপ গ্রাহ্য:-

দন্ত ন ক উচাবামে দাঁতমে জীহ সঠত- জেনা রাজু
নাম, কদা প ক উচাবামে জীহ মুখামে সঠত (নৈ
সঠেএ তঁ উচাবণ দোষ খাছি)- জেনা রাজু গণেশী।
তানরা শেমে জীহ তানস', ষমে মুখসিঁ আ দন্ত সমে
দাঁতস' সঠত। নিশী, সন্ত আ শৌষণ রাজি কহ
দেখু। মেথিলীমে ষ কেঁ বৈদিক স'স্কৃত জকা' খ
সেহো উচবিত কএন জাগত খাছি, জেনা রষা,
দোষ। য খনেকো স্থানপব জ জকা' উচবিত হোগত
খাছি আ প ড জকা' (যথা সংযোগ আ গণেশী **সজোগ**
আ

গড়মে উচবিত হোগত খ্দি)। মেথিনীমে র ক
উচাবণ র, শে ক উচাবণ স খা য ক উচাবণ জ
সেহো হোগত খ্দি।

ওহিনা দ্রুত ও বৈশীকান মেথিনামে পহিনে রাজন
জাগত খন্ডি কাবণ দেবনাগবীমে থা মিথিনাম্ভবমে
দ্রুত ও খন্ডবক পহিনে নিখনো জাগত থা রাজনো



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मासिक बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

जएरौक चाही । कावण जे हिन्दीमे एकब दोषपूर्ण
उचावण होगत छि (निखन तँ पहिने जागत छि
झुदा रौजन रौदमे जागत छि), से शिक्षा पद्धतिक
दोषक कावण हम सब ओकब उचावण दोषपूर्ण ठगसँ
क२ बहन छी ।

छि- थ ग छ **ईछ (उचावण)**

छि- छ ग थ - **छैथ (उचावण)**

पहुँचि- प हूँ ग च **(उचावण)**

आरौ थ आ ग आ ए ई ओ उ थं थः म ई सब
नेन मात्रा सेहो छि, झुदा ईमे आ ई ओ उ थं
थः म केँ सहाजक रूपमे गत कपमे प्रहाज आ
उचवित कएन जागत छि । जेना म केँ बी
कपमे उचवित कवरौ । आ देखियौ- ई नेन
देखिओ क प्रयोग अछि । झुदा देखिई नेन
देखियौ अछि । क सँ हूँ धि थ सम्मिलित भेनासँ
क सँ हूँ रौनेत छि, झुदा उचावण कान हननु हाज
शेखक अछि उचावणक प्रवृत्ति रौनेत छि, झुदा हम
जखन मनोजमे ज् अछि रौनेत छी, तखनो
प्रबनका लोककेँ रौनेत मनोज- मनोज२, रासुरमे
ओ थ हाज ज् = ज् रौनेत छि ।

हेव छ छि ज् आ ए क सहाज झुदा गत
उचावण होगत छि- गा । ओहिना म् छि क् आ
म क सहाज झुदा उचावण होगत छि छ । हेव श्
आ व क सहाज छि श् (जेना श्रमिक) आ स् आ



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मानवीय बिदेह बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

ब क सहाज थुडि स (जेना मिस) । व भेन त+व
।

उचावणक आँडियो हागन बिदेह आकारिग

<http://www.videha.co.in/> पब उपनद्ध थुडि ।

हेब के / म / पब प्रर अम्बरम सठा क२ निथु
झदा ठ / क२ ठठा क२ । एमे म मे पहिन सठा
क२ निथु आ रौदरना ठठा क२ । अंकक रौद ठा निथु
सठा क२ झदा अन्ठ ठाम ठा निथु ठठा क२- जेना
ठठठा झदा सभ ठा । हेब उथ म सातम निथु-
ठठम सातम ने । घबरनामे रौवा झदा घबरानीमे
रावी प्रहाज कक ।

बह-
बह

बह झदा सकैए (उचावण सकै-ए) ।

झदा कथनो कान बह आ बह मे अर्थ भिन्नता
सेहो, जेना से कन्ना जगहमे पारिग कबरौक
अन्नास बह ओकवा । प्रहनापब पता नागन जे दूनदून
नाम्ना आ द्वागरब कनाठे झसक पारिगमे काज करैत
बह ।

हुनै, हुनए मे सेहो ए तबहक भेन । हुनए क
उचावण हुन-ए सेहो ।

सयोगने- (उचावण सजोगने)

के/ क२

केब- क (



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

माथिलि संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA

केव क प्रयोग गद्यमे नै कर, पद्यमे क२ सकै
छी ।)

क (जेना वामक)

- वामक आ सँगे (उच्चारण वाम के / वाम क२
सेहो)

सँ- स२ (उच्चारण)

चन्द्रबिन्दु आ खनुस्राव- खनुस्रावमे कंठ धविक प्रयोग
होगत छटि कदा चन्द्रबिन्दुमे नै । चन्द्रबिन्दुमे
कनेक एकावक सेहो उच्चारण होगत छटि- जेना
वामसँ- (उच्चारण वाम स२) वामकेँ- (उच्चारण वाम
क२/ वाम के सेहो) ।

केँ जेना वामकेँ भेल हिन्दीक को (वाम को)- वाम
को= वामकेँ

क जेना वामक भेल हिन्दीक का (वाम का) वाम
का= वामक

क२ जेना जा क२ भेल हिन्दीक कव (जा कव) जा
कव= जा क२

सँ भेल हिन्दीक से (वाम से) वाम से= वामसँ
स२ , त२ , त , केव (गद्यमे) एके चाक शिष्ट
सरैक प्रयोग छराछित ।

के दोसब अर्थे प्रहाज भ२ सकैए- जेना, के
कहक ? रिभजि “क”क रँदना एकव प्रयोग
छराछित ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मानक बिदेह बिदेह ISSN 2229-

547X **VIDEHA**

नहि, नहि, नै, नग, नँग, नगँ, नगँ ई सबक उचावण
था लेखन - नै

अब क रँदनामे अब जेना मरुपुर्ण (मरुअबपुर्ण नै)
जतए अर्थ रँदनि जए ओतहि मात्र तीन अक्षरक
सहाजामरुपुर्ण प्रयोग उचित । सम्पति- उचावण स स
ग त (सम्पति नै- कावण सही उचावण आसानीसँ
सम्भर नै) । रुदा सरोतिम (सरोतिम नै) ।

बाहिरिय (बाहिरिय नै)

सकैए/ सकै (अर्थ परिवर्तन)

पोछैले/ पोछै लेल/ पोछैए लेल

पोछैए/ पोछैए/ (अर्थ परिवर्तन) पोछैए/ पोछै

ओ लोकनि (लो क२, ओ मे रिकारी नै)

ओअ/ ओहि

ओहिले/

ओहि लेल/ ओही व२

जखरौ/ रैसखौ

पँचभय्या

देखियौक/ (देखिओक नै- तहिना अ मे ज्ञान था
दीर्घक मात्राक प्रयोग अनुरोधित)

जकाँ / जेकाँ

तँग/ तै/

होएत / लएत

नहि/ नहि/ नँग/ नगँ/ नै

सौसे/ सौसे



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

माथिलि संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA

रैड /

रैडी (सोनावाउन)

गाए (गाए नहि), रुदा गाएक दुध (गाएक दुध नै।)

बल्लौ/ पहिबठै

हमही/ श्री

सरै - सभ

सरैलक - सभलक

धवि - तक

गप- रात

रुसरै - समसरै

रुसलौ/ समसलौ/ रुसलई - समसलई

हमवा आव - हम सभ

आकि- आ कि

सकैछ/ करैछ (गद्यमे प्रयोगक आरथकता नै)

होअन/ होनि

जाअन (जानि नै, जेना देव जाअन) रुदा जानि-

रुसि (अर्थ परिवर्तन)

पअर/ जाअर

आड/ जाड/ आड/ जाड

मे, कै, सँ, पव (मेहिसँ सँ क२) तँ क२ ध२ द२

(मेहिसँ लै क२) रुदा दूरी रा रैसी रिभजि संग

बहनापव पहिब रिभजि ठाँके सँ क२। जेना अमे सँ

।

एकरी, दूरी (रुदा क२ ठाँ)



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

547X VIDEHA

मानकीय संकेतम् ISSN 2229-

रिकाबीक प्रयोग शिष्टक अन्तुमे रीचमे अनारथक
कपेँ नै । आकावाञ्चु आ अन्तुमे अ क रौद रिकाबीक
प्रयोग नै (जेना दिअ

, आ/ दिया , आ, आ नै)

अपेम्प्राथमिक प्रयोग रिकाबीक रौदनामे कवरै अन्वित
आ मात्र फाँटिक तकनीकी न्यूनताक परिचायक)- ओना
रिकाबीक संस्कृत कप २ अरग्रह कहन जागत अछि
आ रतिनी आ उचावण दुनू ठाम एकव लोप बहैत
अछि/ बहि सकैत अछि (उचावणमे लोप बहैत
अछि) । ऊदा अपेम्प्राथमिक सेहो अंग्रेजीमे पसेमिर
केसमे होगत अछि आ फ्रेचमे शिष्टमे जतए एकव
प्रयोग होगत अछि जेना *raison d'etre* एतए
सेहो एकव उचावण बैजौन डेष्टेव होगत अछि, माने
अपेम्प्राथमिक अरकाशे नै दैत अछि रवन जोडेते
अछि, से एकव प्रयोग रिकाबीक रौदना देनाग
तकनीकी कपेँ सेहो अन्वित) ।

अगमे, एहिमे/ एमे

जगमे, जाहिमे

एथन/ अथन/ अगथन

कै (के नहि) मे (अन्वय बहित)

भ२

मे

द२



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मानक बिदेह बिदेह ISSN 2229-547X

VIDEHA

तै (तै, त नै)

मै (मै, म नै)

गाछ तब

गाछ वग

साँस खन

जो (जो go, करै जो do)

तै/तथ जेना- तै दुखारे/ तथामे/ तथाने

जै/जथ जेना- जै कावण/ जथमै/ जथाने

ई/थथ जेना- ई कावण/ ईमै/ थथाने/ झुदा एकव

एकठां थाम प्रयोग- नावति कतेक दिनमै कहैत

बैत थथ

लै/वथ जेना लैमै/ वथाने/ लै दुखारे

नहै/ लौ

गेलौ/ गेलौ/ गेलै/ गेलै/ गेलै/ गेलै

जथ/ जाहि/ जै

जहिठाम/ जाहिठाम/ जथठाम/ जैठाम

एहि/ थहि/

थथ (रामक थथमे थथ) / ई

थथछ/ थथि/ ईछ

तथ/ तहि/ तै/ ताहि

उहि/ उथ

साथि/ साथ

जोरि/ जोरी/ जोरै

भलेही/ भवहि



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मानुषिंह संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

ते/ तँ/ तँ

जाधर/ जधर

नग/ ने

ढग/ ढे

नहि/ ने/ नग

गग/ गे

डनि/ डन्ति ...

समय गेर्दक संग जखन कोनो रिभक्ति जूठे छे
तखन समे जना समेपव गत्यादि । असगवमे छदथ
आ रिभक्ति जूठने छदे जना छदेसँ, छदेमे
गत्यादि ।

जग/ जाहि/

जे

जहिगाम/ जाहिगाम/ जगगाम/ जेगाम

एहि/ अहि/ अग/ अ

अगछ/ अछि/ अँछ

तग/ तहि/ ते/ ताहि

ओहि/ ओग

सीथि/ सीथ

जीरि/ जीरी/

जीर

भने/ भनेही/

भवहि

ते/ तँ/ तँ

जाधर/ जधर



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मासिक चरित्र ISSN 2229-547X

VIDEHA

नग/ नै

हुग/ हू

नहि/ नै/ नग

गग/

गै

हुनि/ हुनि

हुकन थडि/ गेव गडि

२.२. मैथिलीमे भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

नीचाँक सूचीमे देन रिक्स्पमेसँ लेखिअज एडीटिब द्वारा
कोन कप हुनन जेराँक चाली:

रौटेड कएन कप ग्राह:

१. होयरीना/ होरीयरीना/ होमयरीना/ हेरै रीना, हेम रीना/

होयरीक/होरीयरीना /होयरीक

२. था/ था२

था

३. क जेने/क२ जेने/क३ जेने/क४ जेने/क५

जेने/न/व२/नय/व३

४. भ गेन/भ२ गेव/भ३ गेन/भ४

गेव

५. कव गेनाह/कव२

गेवह/कव३ गेवाह/कव४ गेनाह

६.

विथ/दिथ निय, दिय, निथ, दिय /

१. कव रीना/कव२ रीना/ कवय रीना कवरीना/कव रीना

/



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मानक संख्या ISSN 2229-

547X VIDEHA

करैराव

१. रैवा रवा (प्रकष), रावा (मूवा) २

आइव आइ

१०. आयः प्रायः

११. दुःख दुःख १

२. चलि गेल चव गेल/चैन गेल

१३. देवखिन्ह देवखिन्ह, देवखिन

१४.

देखवहि देखवनि/ देखलैन्ह

१५. छुखिन्ह/ छुवहि छुखिन/ छुलैन/ छुवनि

१७. चलेत/दैत चलि/दैति

१९. एथनो

अथनो

१८.

रैठनि रैठान रैठहि

१६. ७/७२(सरनाम) ७

२०

७ (संयोजक) ७/७२

२१. कागि/कागि कागि/कागि

२२.

जे जे/जे२ २३. ना-बुब ना-बुब

२४. केवहि/केवनि/कयवहि

२५. तखनत/ तखन त



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मासिक बिदेह बिदेह *ISSN 2229-547X*

VIDEHA

२७. **जा**

बहव/जाय बहव/जाय बहव

२१. निकनय/निकनय

नागव/ वगव रैहवाय/ रैहवाय नागव/ वगव

निकन/रैहवै नागव

२४. ओतय/ जतय जत/ ओत/ जतय/ ओतय

२६.

की कुबव जे कि कुबव जे

३०. जे जे/जे२

३१. कुदि / यादि(मोन पावर) कुदि/यादि/कुदि/यादि/

यादि (मोन)

३२. ओहो/ ओहो

३३.

हंसय/ हंसय हंस२

३४. नौ आकि दस/नौ किंरा दस/ नौ रा दस

३५. सास-ससुव सास-ससुव

३६. छत/ सात छ/छः/सात

३७.

की की/ की२ (दीर्घाकाबानुमे २ रजित)

३८. जरारै जरारै

३९. कबयताह/ कबयताह कबयताह

४०. दनान दिशि दनान दिशि/दनान दिस

४१.

. गेवाह गेवाह/गेवाह

४२. किछु आव/ किछु ओव/ किछु आव



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मानकीसिंह सार्वभौम ISSN 2229-

547X VIDEHA

४३. जाँघ छव/ जाँघत छव जाति छव/ जैत छव

४४. पङ्क्ति/ भेट जाँघत छव/ भेट जाँघ छव

पङ्क्ति/ भेट जाँघत छव

४५.

जुरान (हारा)/ जुरान (होजी)

४६. वय/ वय क/ क२/ वय क२ / व२ क२/ व२ क२

४७. व/ व२ कय/

क२

४८. एथन / एथने / अथन / अथने

४९.

अथिके अथिके

५०. गहीव गहीव

५१.

धाव पाव केनाथ धाव पाव केनाथ/ केनाथ

५२. जेकाँ जेकाँ

जकाँ

५३. तहिना तेहिना

५४. एकव अकव

५५. रहिनउ रहिनोथ

५६. रहिन रहिनि

५७. रहिन-रहिनोथ

रहिन-रहिनउ

५८. नहि/ ने

५९. कवरौ / कवरौय/ कवरौथ

६०. त/ त २ तय/ तथ



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मासिक चक्रान्तर ISSN 2229-547X

VIDEHA

७१. बैयारी मे छेठ-भाए/भै, जेठ-भाय/भाए
७२. गिनतीमे दू भाग/भाए/भाँ
७३. ओ पोथी दू भाषक/ भाँ/ भाए जेन । यारत
जारत
७४. माय मै / माए ऊदा माषक मयता
७५. देखि/ दणन दनि/ दएहि/ दयहि दहि/ दैहि
७६. द/ द२/ दए
७७. ओ (संयोजक) ओ२ (सरनाम)
७८. तका कए तकाय तकाए
७९. पैरे (on foot) पएरे कएक/ कैक
१०.
ताहुमे/ ताहुमे
११.
प्रतीक
१२.
रैजा कय/ कए / क२
१३. रैननाय/रैननाय
१४. कोवा
१५.
दिनका दिनका
१६.
ततहि
१७. गवरैवहि/ गवरैवनि/
गवरैवहि/ गवरैवनि
१८. रौव रौव



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,
547X VIDEHA

मानुषिह संस्कृतम् ISSN 2229-

१२.

चेष्ट चिन्ह(अक्षर)

+०. जे जे

+१

. से/ के से/के

+२. अथुनका अथुनका

+३. भूमिनाव भूमिनाव

+४. सुगव

/ सुगव/ सुगव

+५. सठ्ठाक सठ्ठाक +७.

छुरि

+१. कवगयो/७ कलेयो ले देवक /कवियो-कवगयो

+१. प्ररौवि

प्ररौवि

+२. सगड् १-साष्टी

सगड् १-साष्टी

२०. पएले-पएले पौले-पौले

२१. खेवएरौक

२२. खेलेरौक

२३. वगा

२४. होए- हो - होखए

२५. बूमव बूमव

२७.

बूमव (संरौधन अर्थमे)



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मासिक बिदेह *ISSN 2229-547X*

VIDEHA

११. यैह यैह / अयैह / सैह / सयैह

१४. तातिव

१६. अयनाय- अयनाय / अयनाय / एनाय

१००. निन- निन्द

१०१.

बिन बिन

१०२. जाय जाय

१०३.

जाय (in different sense)-last word of sentence

१०४. उत पव अरि जाय

१०५.

ले

१०७. खेवाय (play) - खेवाय

१०९. शिकायत- शिकायत

१०४.

ठप- ठप

१०६

. पठ- पठ

११०. कनिये/ कनिये कनिये

१११. बाकस- बाकस

११२. होय/ होय होय

११३. अडबदा-

अडबदा



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

547X VIDEHA

मानकीकृत संस्कृतम् ISSN 2229-

११४. **बुँमेवहि** (different meaning- got under stand)

११५. **बुँमएवहि/बुँमेवनि/ बुँमयवहि** (under stand himself)

११६. **चनि- चव/ चवि गेव**

११७. **खधाए- खधाय**

११८.

मोन पाडवथिन्ह/ मोन पाडवथिन/ मोन पाववथिन्ह

११९. **कैक- कएक- कएक**

१२०.

वग न ग

१२१. **जबेनाए**

१२२. **जबेनाए जबेनाए- जबेनाए/**

जबेनाए

१२३. **होएत**

१२४.

गबरेवहि/ गबरेवनि गबरेवहि/ गबरेवनि

१२५.

टिखेत- (to test) टिखेत

१२६. **कबएयो (willing to do) करेयो**

१२७. **जेकवा- जकवा**

१२८. **तकवा- तेकवा**

१२९.

बिदेसब स्थानमे/ बिदेसब स्थानमे



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

माथिलि संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA

१३०. कबरैयतहूँ/ कबरैएतहूँ/ कबरैतहूँ कबरैतौ

१३१.

ताकि (उठावण हागवक)

१३२. ओजन रजन आरुसोच/ आरुसोस कागत/
कागच/ कागज

१३३. आधे भाग/ आध-भागे

१३४. पिछा / पिछाय/पिछाए

१३५. नए/ ले

१३६. रैछा नए

(ले) पिछा जाय

१३७. तखन ले (नए) कहेत अछि । कहे/ सुने/ देखे
हुव रुदा कहेत-कहेत/ सुनेत-सुनेत/ देखेत-
देखेत

१३८.

कतेक गोठै/ कताक गोठै

१३९. कमाअ-धमाअ/ कमाअ- धमाअ

१४०

. वग नग

१४१. खेवाअ (f or pl ayi ng)

१४२.

छथिन्ह/ छथिन

१४३.

होअत होअ

१४४. का कियो / केओ

१४५.



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

547X VIDEHA

मानुषिह संस्कृतम् ISSN 2229-

केश (hair)

१४७.

केस (court-case)

१४१

. रैननाथ/ रैननाथ/ रैननाथ

१४४. जलनाथ

१४६. कवनी कर्मी

१४७. चबचा चर्चा

१४८. कर्म कवम

१४९. डूँरौरै/ डूँरौरै/ डूँरौरै डूँरौरै/ डूँरौरै

१५०. एथुनका/

अथुनका

१५१. वध/ विध (राकाक अंतिम गेह)- व२

१५२. कएवक/

केवक

१५३. गवनी गर्मी

१५४

. रवदी रदी

१५५. सुना गेवाह सुना/ सुना२

१५६. एनाथ-गेनाथ

१५७.

तेना न येववहि/ तेना न येववनि

१५८. नथि / ले

१५९.

डरो डरो



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मासिक बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

१७३. कतह/ कतौ कतौ

१७४. डमबिगब-डमेबगब डमबगब

१७५. भविगब

१७६. धोन/धोखन धोएन

१७७. गप/गप्प

१७८.

के के

१७९. दवरँज्जा/ दवरँजा

१८०. ठाय

१८१.

धवि तक

१८२.

घुबि लौष्टि

१८३. खोबरँक

१८४. रँड

१८५. तौ/ तू

१८६. तौहि (पद्यमे त्राह)

१८७. तौही / तौहि

१८८.

कवरँगए कवरँगये

१८९. एकेठा

१९०. कबितथि / कबतथि

१९१.

पहुँचि/ पहुँच

१९२. बाखनहि बखनहि/ बखनि



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,
547X VIDEHA

मानुषिह संस्कृतम् ISSN 2229-

१+३.

वगवहि/ वगवनि नागवहि

१+४.

सुनि (उचावण सुजन)

१+५. अछि (उचावण अगछ)

१+७. एवथि गेवथि

१+९. रिंतउने/ रिंतोने/

रिंतोने

१+१. कवरौवहि/ कवरौवनि/

करेवथिह/ करेवथिन

१+२. कवएवहि/ कवएवनि

१+०.

आकि/ कि

१+१. पहुँचि/

पहुँच

१+२. रँगी जवाय/ जवाए जवा (आगि नगा)

१+३.

मे मे

१+४.

हाँ मे हाँ (हाँमे हाँ रिभक्तिमे लहा कए)

१+५. फेव फेन

१+७. कअव(spaci ous) फेन

१+९. होयतहि/ होएतहि/ होएतनि/हेतनि/ हेतहि

१+१. हाथ मटिआएर/ हाथ मटियारय/हाथ मटियाएर

१+२. फेका फेका



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

माथिलि संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA

२००. देखाए देखा

२०१. देखाएँ

२०२. सतवि सतव

२०३.

साहेरै साहेरै

२०४. गेलैन्ह/ गेलहि/ गेलनि

२०५. हेरौक/ होएरौक

२०६. केनो/ कएनहुँ/ केनो/ केनू

२०७. किछ न किछ/

किछ ले किछ

२०८. घुमेनहुँ/ घुमएनहुँ/ घुमेनो

२०९. एवाक/ अएवाक

२१०. अः/ अह

२११. वय/

वय (अर्थ- परिवर्तन) २१२. कनीक/ कनेक

२१३. सरैलक/ सतक

२१४. मिनाइ/ मिना

२१५. कइ/ क

२१६. जाइ/

जा

२१७. आइ/ आ

२१८. भइ/ भ (फॉन्टिक कमीक आतक)

२१९. निश्चय/ नियम

२२०



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

547X VIDEHA

मानक बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-

लेखक/ लेखिका

२२१. पहिल अक्षर ठ/ रौदक/ रौचक ठ

२२२. तहि/तहि/ तहि/ ते

२२३. कहि/ कही

२२४. तँ/

ते / तँ

२२५. नँ/ नँ/ नहि/ नहि/ले

२२६. ते/ ते / एही/

२२७. छहि/ छै/ छैक / छग

२२८. दृष्टि/ दृष्टि

२२९. आ (come)/ आ (conjunct i on)

२३०.

आ (conjunct i on)/ आ (come)

२३१. कोना/ कोना कोना/केना

२३२. गेलोह- गेलोह- गेलोह

२३३. होराक- होराक

२३४. केनो- केनो-केनो/केनो

२३५. किछ न किछ- किछ न किछ

२३६. केहन- केहन

२३७. आ (come)- आ (conjunct i on-

and)/ आ । आर-आर /आर-आर

२३८. एत-एत

२३९. घुमेन-घुमेन- घुमेन

२४०. एनाक- एनाक



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मानक बिदेह बिदेह ISSN 2229-547X

VIDEHA

२४९. होनि- होअन/ होअहि/

२४९. उ-बाम उ श्यामक रीच (conjunction), उ२
कहक (he said)/ उ

२४९. की रुथ/ कोसी अथवा रुथ/ की है। की रुथ

२४९. दृष्टिअ/ दृष्टियै

२४९.

. गोयिअ/ सामेअ

२४९. तै / तैअ/ तथिअ/ तहि

२४९. जौ

/ जौअ/ जौ

२४९. सभ/ सरै

२४९. सभक/ सरैक

२४९. कहि/ कही

२४९. कनो/ कोनो/ कोनहूँ/

२४९. कावकती भ२ गेव/ भ२ गेव/ भ२ गेव

२४९. कोना/ केना/ कनना/ कना

२४९. अः/ अह

२४९. जने/ जनअ

२४९. गेवनि/

गेवाह (अर्थ परिवर्तन)

२४९. केवहि/ कएवहि/ केवनि/

२४९. वय/ वय/ वयह (अर्थ परिवर्तन)

२४९. कनीक/ कनेक/ कनी-मनी

२४९. पठैवहि पठैवनि/ पठैवअन/ पपठैवहि/

पठैवनि/



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,
547X VIDEHA

मानक बिदेह बिदेह ISSN 2229-
547X VIDEHA

२७५. निश्चय/ नियम

२७६. हेक्स्टेक्व/ हेक्स्टेक्व

२७७. पहिल अक्षर बहल ट/ रीचमे बहल ट

२७८. आकारानुमे रिक्कीक प्रयोग उचित नै/

अपेक्षित प्रयोग फार्मल तकनीकी नूनतक

परिचायक ओकर रीदना अग्रह (रिक्की) क प्रयोग

उचित

२७९. केव (पद्यमे आह) / -क/ क२/ के

२८०. डेहि- डेहि

२८१. नगैए/ नगैए

२८२. हेत/ हेत

२८३. जात/ जात

२८४. आत/ आत/ आउत

२८५

. आत/ आत/ हेत

२८६. पिअरौक/ पिअरौक/पियरौक

२८७. शुक/ शुक

२८८. शुकहे/ शुक

२८९. अतार/अउतार/ एतार/ उतार

२९०. जाहि/ जाग/ जग/ जे

२९१. जात/ जेत/ जगत

२९२. आत/ आत

२९३. केक/ केक

२९४. आयन/ आयन/ आयन

२९५. जात/ जात/ जात (नानति जात नगतीह ।)



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मानक बिदेह बिदेह *ISSN 2229-547X*

VIDEHA

२+२. ब्रकएत/ ब्रकाएव

२+३. कर्तृआएव/ कर्तृआएत

२+४. ताहि/ ते/ तअ

२+५. गायरै/ गाएरै/ गएरै

२+६. सकै/ सकए/ सकय

२+७. सेवा/सवा/ सवाए (भात सवा गेल)

२+८. कठत बही/देखैत बही/ कठत छलौ/ कठ छलौ-
अहिना छलौ/ पटैत

(पटै-पटैत अर्थ कथना काव परिवर्तित) - आव
बुमै/ बुमैत (बुमै/ बुमै छी ऊदा बुमैत-बुमैत)/
सकैत/ सकै। करैत/ करै। दै/ दैत। डैक/
डै। रैचलौ/ रैचलैक। बखरौ/ बखरौक। बिन/
बिन। बातिक/ बातिक बुमै आ बुमैत केव अपन-
अपन जगहपर प्रयोग समीचीन अछि। बुमैत-बुमैत
आरै बुमविष। छमछ बुमै छी।

२+९. दुआए/ द्वाए

२+१०. भैष्ट/ भैष्ट/ भैष्ट

२+११.

खन/ खीन/ खीना (भोव खन/ भोव खीन)

२+१२. तक/ धवि

२+१३. ग२/ गै (meaning different - जनरै ग२)

२+१४. स२/ सँ (ऊदा द२, न२)

२+१५. त्र (तीन अक्षरक मेर रँदना पुनर्बुद्धि एक
आ एकठा दोसबक उपयोग) आदिक रँदना त्र आदि।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मानकीसिंह बरकतुल, ISSN 2229-

547X VIDEHA

महत्त्व/ महत्त्व/ कर्ता/ कर्ता आदिमे त सहाजक कोनो
आरथकता मैथिलीमे नै छि । **रङ्गर**

२९७. रैसी/ रैसी

२९९. रौना/ रौना **रौना**/ रौना (बैरौना)

२९९

. **रावी**/ (रैदलौरानी)

२९९. राता/ राता

३००. **अनुवादिष्ट**/ अनुवादिष्टीय

३०१. **लेमथ**/ लेमथ

३०२. **वमठका** नमठका

३०२. **वागै**/ वागै (

भैठैत/ भैठैत)

३०३. **वागव**/ वागव

३०४. **हरी**/ हरी

३०५. **वायवक**/ वायवक

३०६. **आ** (come)/ **आ** (and)

३०७. **पश्चाताप**/ पश्चाताप

३०८. २ केव रारताव शैलक अनुमे माव, यथार्थर
रीचमे नै ।

३०९. **कठैत**/ कठैत

३१०.

बस (बस)/ **बैठ** (बैठ) (meaning different)

३११. **तागति**/ तागति

३१२. **खवाप**/ खवाप

३१३. **रौगन**/ रौगन/ रौगन



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,

माथिलि संस्कृतम्, ISSN 2229-547X

VIDEHA

३५४. जाति/ जायत

३५५. कागज/ कागज/ कागज

३५६. गिबे (meaning different - swallow)/

गिबे (थस)

३५७. राष्ट्रिय/ राष्ट्रिय

Festivals of Mthila

DATE-LIST (year – 2011-12)

(१४९९ साव)

Marriage Days:

Nov.2011 – 20,21,23,25,27,30

Dec.2011 – 1,5,9

January 2012 – 18,19,20,23,25,27,29

Feb.2012 – 2,3,8,9,10,16,17,19,23,24,29

March 2012 – 1,8,9,12

बि ए रू मिहे Videha बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका Videha 1st Maithili
Fortnightly e Magazine बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०१ म अंक ०१ मार्च



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,
547X VIDEHA

मानुषमिह संस्कृतम् ISSN 2229-

April 2012- 15,16,18,25,26

June 2012- 8,13,24,25,28,29

Upanayana Days:

February 2012- 2,3,24,26

March 2012- 4

April 2012- 1,2,26

June 2012- 22

Dviragaman Din:

November 2011- 27,30

December 2011- 1,2,5,7,9,12

February 2012- 22,23,24,26,27,29

March 2012- 1,2,4,5,9,11,12

April 2012- 23,25,26,29

May 2012- 2,3,4,6,7



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,

माथिलि संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA

Mundan Dīn:

December 2011– 1,5

January 2012 25,26,30

Mar ch 2012– 12

April 2012– 26

May 2012– 23,25,31

June 2012– 8,21,22,29

FESTI VALS OF M TH LA

Mauna Panchami –20 July

Madhushr avani – 2 August

Nag Panchami – 4 August

Raksha Bandhan– 13 Aug

Kr i shnast ami – 21 August



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मानवीय संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

Kushi Amavasya / Somvar i Vr at – 29
August

Hart al i ka Teej – 31 August

Chaut hChandr a-1 Sept ember

Kar ma Dhar ma Ekadashi -8 Sept ember

I ndr a Pooj a Aar ambh- 9 Sept ember

Anant Cat ur dashi – 11 Sep

Agast yar ghadaan- 12 Sep

Pi t ri Paksha begi ns- 13 Sep

Mahal aya Aar ambh- 13 Sept ember

Vi shwak ar ma Pooj a- 17 Sept ember

Ji moot avahan Vr at a/ Ji ti a-20
Sept ember

Mat ri Navami – 21Sept ember

Kal ashst hapan- 28 Sept ember

Mahastami - 4 October

Vi j aya Dashami - 6 Oct ober

Koj agar a- 11 Oct

Dhant er as - 24 Oct ober

Di yabat i , shyama pooj a-26 Oct ober

Annakoot a/ Govar dhana Pooj a-27
October

Bhrat r i dwi t i ya/ Chi t r agupt a Pooj a-
28 Oct ober

Chhat hi -khar na -31 Oct ober

Chhat hi - sayankal i k ar ghya - 1
November



Devot t h an Ekadashi – 17 November

Sama pooj ar ambh – 2 November

Kart i k Poor ni ma/ Sama Bi sar j an – 10
Nov

r avi vr at ar ambh – 27 November

Navanna par van – 29 November

Vi vaha Panch mi – 29 November

Makar a/ Teel a Sankr ant i – 15 Jan

Nar akni var an chat ur dashi – 21
January

Basant Panch ami / Sar aswat i Pooj a –
28 January

Achl a Sapt mi – 30 January

Mahashi var at r i – 20 Febr u ar y

Hol i kadahan – Fagua – 7 Mar ch



Holi -9 Mar

Varuni Yoga-20 Mar ch

Chaiti navaratararambh- 23 Mar ch

Chaiti Chhatihivrat-29 Mar ch

Ram Navami - 1 April

Mesha Sankranti-Satuni -13 April

Jurishital -14 April

Akshaya Tritiya-24 April

Ravi Brat Ant - 29 April

Janaki Navami - 30 April

Vat Savitri-barasait - 20 May

Ganga Dashhar-30 May

Somavati Amavasya Vrat- 18 June

Jagannath Rath Yatra- 21 June

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०१ म अंक ०१ मार्च



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,
547X VIDEHA

मानुषिह संस्कृतम् ISSN 2229-

Hari Sayan Ekadashi – 30 June

Aashadhi Gur u Poorni ma-3 Jul

VI DEHA ARCH VE

१. बिदेह ई-पत्रिकाक सभ्ठा प्रबान अंक ब्रैल,
तिवृता आ देवनागरी कपमे Vi deha e
journal's all old issues in Braille
Tirhuta and Devanagari versions

बिदेह ई-पत्रिकाक पहिल ३.० अंक

बिदेह ई-पत्रिकाक ३.०म सँ आगाँक अंक

२. मैथिली पोथी डाउनलोड Maithili Books
Downl oad

३. मैथिली ऑडियो संकलन Maithili Audi o
Downl oads

४. मैथिली वीडियो संकलन Maithili Vi deos

५. मिथिला चित्रकला/ आधुनिक चित्रकला आ चित्र
Mthila Pai nting/ Mbdern Art and
Phot os



‘बिदेह’क एहि सब सहयोगी विरूपब सेहो एक रैब जाई ।

७.बिदेह मैथिली क्विज :

<http://videhaquiz.blogspot.com/>

१.बिदेह मैथिली जानरूत एक्कीपेठब :

<http://videha-aggregators.blogspot.com/>

४.बिदेह मैथिली साहित्य अंग्रेजीमे अनुदित

<http://madhubani-art.blogspot.com/>

६.बिदेहक पूर-कप “भासबिक गाछ” :

<http://gajendrathakur.blogspot.com/>

१०.बिदेह अडैक :

<http://videha123.blogspot.com/>

११.बिदेह कागज :

बिदेह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०१ म अंक ०१ मार्च



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

547X VIDEHA

मानवसिंह खन्कुआ, ISSN 2229-

<http://videha123.wordpress.com/>

१२. बिदेह: सदेह : पहिन तिवहता (मिथिला-सुब)
जानरुत (बैना-ग)

<http://videha-sadeha.blogspot.com>

१३. बिदेह:बैना: मैथिली बैनामे: पहिन बैना बिदेह
द्वारा

<http://videha-braille.blogspot.com>

१४. VIDEHA 1ST MAITHILI FORTNIGHTLY
EJOURNAL ARCHIVE

<http://videha-archive.blogspot.com>

१५. बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका मैथिली
पौखीक आकगिर

<http://videha-pothi.blogspot.com>

१६. बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका ऑडियो
आकगिर



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

माधुसूदन चन्द्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

<http://videha-audio.blogspot.com/>

११. बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका रीडियो
आकांक्षित

<http://videha-video.blogspot.com/>

१२. बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका मिथिला
चित्रकला, आधुनिक कला आ चित्रकला

[http://videha-paintings-
photos.blogspot.com/](http://videha-paintings-photos.blogspot.com/)

१३. मैथिल आब मिथिला (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय
जागरूक)

<http://maithilaaurmitihala.blogspot.com/>
/

२०. श्रुति प्रकाशिन

<http://www.shrutipublication.com/>

२१. <http://groups.google.com/group/videha>
a

बि एच ए विदेह *Videha* विदेह विदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha Ist Maithili Fortnightly e Magazine* विदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका विदेह १०१ म अंक ०१ मार्च



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,
547X VIDEHA

मानवीय संस्कृतम् ISSN 2229-

Google समूह

VI DEHA केब सदस्यता लिख

ग्रामेत :

एहि समूहपब जाडू

२२. http://groups.yahoo.com/group/VI_DEHA/

Subscribe to VI DEHA

Power ed by [u.s.gr oups.yah oo.com](http://groups.yahoo.com)



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

माथिलि बरखाना ISSN 2229-547X

VIDEHA

२३. गजेन्द्र ठाकुर अडेक


<http://gajendrathakur123.blogspot.com>


२४. नैना भुठका

<http://mangan-khabas.blogspot.com>

२५. बिदेह रेडियो: मैथिली कथा-कविता आदिक पहिल पौडकास्ट साइट

<http://videha123radio.wordpress.com/>

२६.  [Videha Radio](#)

२७.  [Join official Videha facebook group.](#)

२८. बिदेह मैथिली नाट्य उमेर

<http://maithili-drama.blogspot.com>

२९. समदिया

<http://esamad.blogspot.com>



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मानवविज्ञान संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

३०. मैथिली फिल्मस

<http://maithilifilms.blogspot.com>

३१. अनचिन्हाव आखव

<http://anchinharakharakolkata.blogspot.com/>

३२. मैथिली हाङ्कु

<http://maithili-hai.blogspot.com>

३३. मानक मैथिली

<http://manak-maithili.blogspot.com>

महत्त्वपूर्ण सूचना: (१) बिदेह द्वारा धारारहित रूपे
प्रकाशित कएव गेल गजेन्द्र ठाकुरक निरंकर-
प्रबंध-समीक्षा, उपन्यास (महत्त्वपूर्ण), पद्य-संग्रह
(महत्त्वपूर्ण चोपडपव), कथा-गल्प (गल्प-ग्रन्थ),
नाटक(संस्करण), महाकाव्य (ब्रह्मरूप आ अस्मृति मन)
आ बाब-किशोर साहित्य बिदेहमे संपूर्ण प्रकाशित
बाद छिटि कर्ममे । कवचकम्-अनुमनक खंड-१ सँ



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,
VIDEHA

माथिलि बरन्दा, ISSN 2229-547X

१ Combined ISBN No.978-81-907729-7-6
6 रिवर एहि पृष्ठपत्र नीचाँमे आ प्रकाशक साष्ट
<http://www.shrutipublication.com> पब
।

महत्त्वपूर्ण सूचना (२):सूचना: बिदेहक मैथिली-अंग्रेजी
आ अंग्रेजी मैथिली कोष (अष्टबन्धेपत्र पत्रिब रेव
सर्च-डिजिनेबरी) एम.एस. एस.क्यू.एव. सर्व आधारीत -
Based on ms-sql server Maithili -
English and English-Maithili
Dictionary. बिदेहक भाषापक- बचानेखन
सुँभमे ।

ककषेवम् अनुमनक- गजेन्द्र ठाकुर



गजेन्द्र ठाकुरक निरंकर-प्ररंकर-समीक्षा, उपन्यास
(सहस्ररौठनि), पद्य-संग्रह (सहस्ररौठनि टोपडपत्र),
कथा-गल्प (गल्प गुरु), नाटक(सर्करी), महाकाव्य
(ब्रह्मरुद्र आ अमरुति मन) आ रौवरुडली-



किशोवजगत बिदेहमे संपूर्ण अ-प्रकाशनक बौद्ध प्रिंट
कार्यमे। ककषेत्रम् अनुसन्धनक, खन्ड-१ सँ १

1st edition 2009 of Gajendra
Thakur's KuruKshetram-Antarmanak (Vol. I to
VII)- essay-paper-criticism, novel, poems,
story, play, epics and Children-
grown-ups literature in single
binding:

Language:Maithili

३९२ पृष्ठ : मूल्य भा. क. 100/- (for
individual buyers inside india)
(add courier charges Rs.50/-per copy
for Delhi/NCR and Rs.100/- per copy
for outside Delhi)

For Libraries and overseas buyers
\$40 US (including postage)

The book is AVAILABLE FOR PDF
DOWNLOAD AT

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha/>

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका बिदेह १०१ म अंक ०१ मार्च २०१२



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

माथिलि संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA

<http://videha123.wordpress.com/>

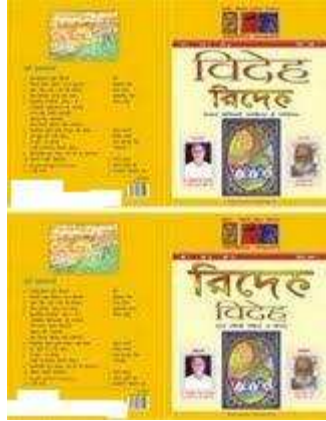
Details for purchase available at
print-version publishers's site

website: <http://www.shrutipublication.com/>

or you may write to

e-mail: [shruti.publication@shruti-publication.com](mailto:shruti.publication@shrutipublication.com)

बिदेह: सदेह : १: २: ३: ४ तिबहुता : देरनागरी
-बिदेह- क, शिष्ट संस्कृत :बिदेह-पत्रिका
(<http://www.videha.co.in/>) क छनव बचना
सम्भित ।





२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,
547X **VIDEHA**

मानकीकृत संस्कृतम् ISSN 2229-

बिदेह:सदेह:१: २: ३: ४

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर ।

Details for purchase available at
print-version publisher's site
<http://www.shruti-publication.com> or
you may write to
[shruti_publication@shruti -
publication.com](mailto:shruti_publication@shruti-publication.com)

२. सन्देश-

[बिदेह ई-पत्रिका, बिदेह:सदेह मिथिलासभ आ देवनागरी
आ गजेन्द्र ठाकुरक सात खण्डक- निरंकर-प्रबन्ध-
समीक्षा,उपन्यास (सहस्ररौतनि), पद्य-संग्रह (सहस्रद्वीक
चौपडसब), कथा-गल्प (गल्प गच्छ), नाटक
(संस्करण), महाकाव्य (ब्रह्मचर्य आ अमृतज्ञाति मन) आ बौद्ध-
मंडली-किशोर् जगत- संग्रह *कुरुक्षेत्रम्*
अतिरिक्त मादें ।]

१. श्री गोरिन्द न्या- बिदेहकेँ तबगजानपव उतावि
बिन्नेभविमे मातृभाषा मैथिलीक लहवि जगाउन, थेद
जे अपनैक एहि महाभियानमे हम एखन धरि संग नहि



দএ সকলহু। স্নেহেত ছী ঐপনেকে স্নযাও ঐ
বচনামে ঐলোচনা প্রয নগেত ঐছি তে কিছ নিখক
মোন ভেত। হমব সহযতা ঐ সহযোগ ঐপনেকে
সদা উপবহু বহত।

২. শ্রী বমানন্দ রেণু- মৈথিলীমে গা-পত্রিকা পাশ্চিক
কপেঁ চলা ক২ জে খপন মাত্ৰভাষাক প্রচাব ক২ বহন
ছী, সে ধন্যবাদ । আগাঁ খপনেক সমস্ত মৈথিলীক
কার্যক হেত্ত হম দ্বদয়সঁ শুব্ধকামনা দ২ বহন ছী ।

২. শ্রী রিড্যানাথ ন্যা "রিদিত"- সঁচাব আ শ্রীছাণ্ডিকীক
এহি প্রতিস্পর্শী গ্লারঁর হাগমে খপন মহিমাময
"রিদেহ"কৌ খপনা দেহমে প্রকষ্ট দেখি জতরৌ প্রসন্নতা
আ সঁতোষ ভেব, তকবা কোনো উপরঙ্ক "মিষ্টব"সঁ নহি
নাপর জা সকেদ্ধ ? ..একব ঐতিহাসিক মূর্যাকন আ
সাংস্কৃতিক প্রতিরুদন এহি শিতাঙ্গীক অঁত ধবি লোকক
নজবিমে আশ্চর্যজনক রূপসঁ প্রকষ্ট হত ।

৪. প্রা. উদয় নাবাষণ সিংহ “নচিকেতা”- জে কাজ
খোঁ কএ বহন ছী তকব চবচা এক দিন মৈথিলী
ভাষাক গতিহাসমে হোএত । আনন্দ ভএ বহন খন্ডি.
ঞ জানি কএ জে এতেক গোষ্ঠ মৈথিল “বিদেহ” ঞ
জৰ্নলকৈ পঠি বহন ছথি । ...বিদেহক চাৰীসম খঁক
পবৰীক নৈল খন্ডিনন্দন ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)
547X VIDEHA

मानकीकृत संस्कृतम् ISSN 2229-

३. डा. गंगेशी गुंजन- एहि बिदेह-कर्ममे लागि बहल
अहाँक सम्वदनशील मन, मैथिलीक प्रति समर्पित
मेहनतिक अमृत बग, अतिहास मे एक ठो रिश्ति
रुबाक अध्याय आरंभ कबत, हमबा रिश्तास अछि ।
अशेष शुभकामना आ रक्षाक सम्व, सम्वह...अहाँक
पौथी *रुक्मिणी* अर्तमनक प्रथम दृष्ट्या रहुत भरा
तथा उपयोगी रूनागछ । मैथिलीमे तँ अपना
सुखक प्रायः ग्रा पहिले एहन भरा अरताक पौथी
थिक । हर्षपूर्ण हमब हार्दिक रक्षाग्रा स्वीकार करी ।

३. श्री वामश्रिय ना "वामवर्ग"(आरंभ सुग्रीव)- "अपना"
मिथिलासँ सर्पित...रिषय रहुसँ अरगत भेलहुँ । ...शेष
सभ रुशेल अछि ।

१. श्री ज्ञानेन्द्र त्रिपाठी- साहित्य अकादमी- अष्टवनेष्ट
पब प्रथम मैथिली पाम्मिक पत्रिका "बिदेह" केव नेन
रक्षाग्रा आ शुभकामना स्वीकार कर ।

+. श्री प्रफुल्लकरमा सिह "मौन"- प्रथम मैथिली
पाम्मिक पत्रिका "बिदेह" क प्रकाशनक समाचार जानि
कनेक चकित ह्रदा रैसी आह्लादित भेलहुँ ।
कारणकेँ पकडि जाहि दूरदृष्टिक परिचय देलहुँ, ओहि
नेन हमब मंगलकामना ।



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मासिक चरित्र ISSN 2229-547X

VIDEHA

६. डा. शिरप्रसाद यादव- ए जानि अपाव हर्ष भए
बहन छि, जे नर सूचना-आन्तिक क्षेत्रमे मैथिली
पत्रकाबितार्के प्रवेश दिखएरौक साहसिक कदम उठाएन
छि । पत्रकाबितामे एहि प्रकारक नर प्रयोगक हम
स्वागत करैत छी, संगहि "बिदेह"क सफलताक
शुभकामना ।

१०. श्री आद्याचरण ना- कोनो पत्र-पत्रिकाक
प्रकाशिन- ताहमे मैथिली पत्रिकाक प्रकाशिनमे के
कतेक सहयोग कबतह- ए तह भरिष कहत । ए
हमर ++ रर्षमे १३. रर्षक अनुभर बहन । एतेक
पेघ महान यज्ञमे हमर श्रेष्ठापूर्ण आहुति प्राप्त
होयत- यारत ठीक-ठाक छी/ बहर ।

११. श्री बिजय ठाकुर- मिशिगन बिस्वविद्यालय- "बिदेह"
पत्रिकाक अंक देखतहुँ, सम्पूर्ण ईष रङ्गाङ्क पात्र
छि । पत्रिकाक मंगल भरिषा हेतु हमर शुभकामना
स्वीकार कएन जाओ ।

१२. श्री सुभाषचन्द्र यादव- ए-पत्रिका "बिदेह" क
रारमे जानि प्रसन्नता भेल । "बिदेह" निबन्ध
पल्लवित-प्रसिद्ध हो आ चतुर्दिक अपन स्वर्ण पसाव
से कामना छि ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मानकीकृत संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

१३. श्री मैथिलीपुत्र प्रदीप- ग्रा-पत्रिका "बिदेह" केव सफलताक भगवतीसँ कामना । हमब पूर्ण सहयोग बहत ।

१४. डा. श्री भीमनाथ मा- "बिदेह" गन्तबनेष्ट पब अछि तै "बिदेह" नाम उचित आव कतेक कर्पे एकब रिरवण भए सकैत अछि । आग-कान्ति मोनमे उद्भव बहत अछि, हुदा शीघ्र पूर्ण सहयोग देर । कृष्णदेव अन्तर्मनक देखि अति प्रसन्नता भेल । मैथिलीक लेल ग्रा घटना छी ।

१५. श्री वामभरोस कापडि "भ्रमर"- जनकप्रबन्धम- "बिदेह" आनरागन देखि बहत छी । मैथिलीकेँ अन्तर्बहिर्मुखी जगतमे पहुँचैतहुँ तकवा लेल हार्दिक रंधाग । मिथिला बने सभक संकलन अपूर्ण । नेपालक सहयोग भेटैत, से रिश्तास कबी ।

१६. श्री बाजनन्दन तारदास- "बिदेह" ग्रा-पत्रिकाक माधामसँ रँड नीक काज कए बहत छी, नातिक अहिठाम देखैतहुँ । एकब वार्षिक अंक जखन प्रिंठ निकारै तँ हमरा पठायर । कलकत्तामे रहूत गोठैकेँ हम सागठक पता लिखाए देने छियहि । मोन तँ होगत अछि जे दिल्ली आरि कए आशीर्वाद दैतहुँ, हुदा उमब आरि रेशी भए गेल । शुभकामना देशी-बिदेशीक मैथिलकेँ जोडबैक लेल । .. उक्तेष्ट प्रकाशिन

(স্পঞ্জীকরণ)- শ্রীমান্‌ অহাঁক সূচনার্থ রিদের দ্বাৰা ঙ-
প্রকাশিত কএন সন্তর্পণ সামগ্রী আকাঙারমে

ideha-pothi / পব রিনা মৃত্যক ডাউনলোড নের
উপনর্ন ঙ্গে আ ভরিশ্যমে সেহো বহতৈক । এহি
আকাগিরকৈ জে কিযো প্রকাশকি খনুমতি নহ কহ প্রিষ্ট
কপমে প্রকাশিত কএনে দুখি আ তকব ও দাম বখনে
দুখি তাহিপব হমব কোনো নির্যব্রা নহি খন্ডি । -
গজেন্দ্র ঠাকুর)... অহাঁক প্রতি অশেষ শ্রভকামনাক
সংগ ।

১৭. ডা. প্রেমশংকর সিং- খনাঁ মেথিলীমে গুণবনেষ্টপব
পহিন পত্রিকা "রিদেহ" প্রকাশিত কএ খপন খদ্ভুত
মাত্ৰভাষানুবাগক পবিচয় দেহ খদ্ভি, খনাঁক নিঃস্বার্থ
মাত্ৰভাষানুবাগসঁ প্রেবিত দ্বী, একব নিমিত্ত জে হমব
সেরাক প্রযোজন হো, তঁ সুচিত কবী। গুণবনেষ্টপব
খাদ্যাপাত পত্রিকা দেখহ, মন প্রফুল্লিত ভহ গেল।

১.শ্রীমতী শৈলাতিকা রমা- বিদেহ ৬-পত্রিকা দেখি
মোন উল্লাসসেঁ ভবি গেল। রিত্তান কতেক প্রগতি ক২



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मानकी बिदेह बिदेह, ISSN 2229-

547X VIDEHA

बहर अछि... अहाँ सब अनन्त आकाशकेँ भेदि दियौ,
समस्त रिश्ताबक बहसकेँ ताब-ताब क२ दियौक... ।
अपनेक अद्भुत प्रसन्न ककम्पेअम् अंतर्मनक
रिश्ताबक दृष्टिसेँ गागबमे सागब अछि । रँधाङ्गा ।

१९. श्री हेतुकब ना, पठना-जाहि समर्पण भारसेँ अपने
मिथिला-मैथिलीक सेराबे तपेब छी से सुब अछि ।
देशीक राजधानीसेँ भय बहर मैथिलीक शिखनाद
मिथिलाक गाम-गाममे मैथिली चेतनाक विकास अरथ
कबत ।

२०. श्री योगानन्द ना, करिअप्रब, नहेबियासबाय-
ककम्पेअम् अंतर्मनक पोथीकेँ निकटसेँ देखबक अरसब
भेठेन अछि आ मैथिली जगतक एकठा उद्धृष्ट ओ
समसामयिक दृष्टिसम्पन्न हस्तशिल्पक कर्मरत्न परिचयसेँ
आह्लादित छी । "बिदेह"क देरनागरी संस्करण पठनामे
क. ८०/- मे उपलब्ध भ२ सकत जे रिश्ताब लेखक
लोकनिक छायाचित्र, परिचय पत्रक ओ बचनारलीक
समक प्रकाशनसेँ ऐतिहासिक कहत जा सकैछ ।

२१. श्री किशोरीकान्त मिश्र- कोतकाता- जय मैथिली,
बिदेहमे रहूत बास करिता, कथा, बिपोर्ष आदिक
सचित्र संग्रह देखि आ आव अधिक प्रसन्नता मिथिलाक
देखि- रँधाङ्गा स्वीकार कएत जाओ ।



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मासिक बिदेह *ISSN 2229-547X*

VIDEHA

२२. श्री जीरकान्त- बिदेहक छद्मिती अंक पठन- अद्भुत मेहनति । चारस-चारस । किछु समालोचना मबथाह..छदा सव ।

२३. श्री भावचन्द्र ना- अपनेक ककश्लेष्टम् अंतर्मनक देखि बुझाएन जेना हम अपने छपनहूँ अछि । एकव रिशारकाय आप्रति अपनेक सरसमारेणितक परिचायक अछि । अपनेक वचना सामर्थ्यमे उन्नततव वृद्धि हो, एहि शुभकामनाक संग हार्दिक रंषाङ्ग ।

२४. श्रीमती डा नीता ना- अहाँक ककश्लेष्टम् अंतर्मनक पठनहूँ । ज्ञातिबन्धन शिष्टारणी, धर्मि मन्त्र शिष्टारणी आ सीत रसन्त आ सन्त कथा, करिता, उपन्यास, रान- किशोर साहित्य सन्त उन्नत छन । मैथिलीक उन्नततव विकासक लक्ष्य दृष्टिगोचर होगत अछि ।

२५. श्री मायानन्द मिश्र- ककश्लेष्टम् अंतर्मनक मे हमव उपन्यास स्तुतिरूप जे विरोध कएन गेल अछि तकव हम विरोध करैत छी । ... ककश्लेष्टम् अंतर्मनक पोथीक लेन शुभकामना । (श्रीमान् समालोचनाकें विरोधक रूपमे नहि लेन जाय । -गजेन्द्र ठाकुर)

२६. श्री महेंद्र हजारी- सम्पादक श्रीमिथिला- ककश्लेष्टम् अंतर्मनक पठि मोन हर्षित भ२ गेल..एखन



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,
547X VIDEHA

मानकीकृत संस्कृतम् ISSN 2229-

पुनः पठयमे रूत समय लागत, झुदा जतेक पठनहू
से आलादित कएतक ।

२१.श्री केदावनाथ चौधरी- ककश्लेष्टम् अंतर्मनिक अद्भुत
लागत, मैथिली साहित्य क्षेत्र आ पोथी एकठा प्रतिमान
रैनत ।

२२.श्री सलानन्द पाठक- बिदेहक हम नियमित पाठक
छी । ओकर स्रकपक प्रशंसक छनहू । एम्हब अहाँक
लिखल - ककश्लेष्टम् अंतर्मनिक देखनहू । मोन
आलादित भऽ उठल । कोनो बचना तवा-उपरी ।

२३.श्रीमती बमा खा-सम्पादक मिथिला दर्पण ।
ककश्लेष्टम् अंतर्मनिक प्रिष्ट फार्म पठि आ एकर
गुणरता देखि मोन प्रसन्न भऽ गेल, अद्भुत शिष्ट
एकरा क्षेत्र प्रशंस कऽ बहल छी । बिदेहक उन्नोन्नत
प्रगतिक शुभकामना ।

२४.श्री नरेन्द्र खा, पठना- बिदेह नियमित देखैत
बैत छी । मैथिली क्षेत्र अद्भुत काज कऽ बहल
छी ।

२५.श्री बामनोचन ठाकुर- कोलकाता- मिथिलास्रव
बिदेह देखि मोन प्रसन्नतासँ भवि उठल, अंकक रिशान
पविदृष्ट आसन्नकारी अछि ।



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मासिक पत्रिका *ISSN 2229-547X*

VIDEHA

३२. श्री तारानन्द रियोगी- बिदेह आ ककश्लेष्टम्
अतर्मनिक देखि चकरिदोब नागि गेल । आश्चर्य ।
शुभकामना आ रैषाङ्ग ।

३३. श्रीमती प्रेमनता मिश्र “प्रेम”- ककश्लेष्टम्
अतर्मनिक पठनहुँ । सब बचना उचकोष्टिक नागन ।
रैषाङ्ग ।

३४. श्री कीर्तिनाथ मिश्र- रैगुसबाय- ककश्लेष्टम्
अतर्मनिक रैष्टु नीक नागन, आगाक सब काज नेन
रैषाङ्ग ।

३५. श्री महाप्रकाश-सहस्र- ककश्लेष्टम् अतर्मनिक नीक
नागन, रिशानकाय संगहि उतमकोष्टिक ।

३६. श्री अग्निप्रसन्न- मिथिलासुख आ देवासुख बिदेह
पठन.. आ प्रथम तँ अष्टि एकबा प्रशंसामे झुदा हम
एकबा दूसाहसिक कहँ । मिथिला टिकनाक सुन्दर
झुदा अगिला अकमे आव रिस्तुत रैनाडु ।

३७. श्री मंजव सुनेमान-दबङ्गा- बिदेहक जेतक
प्रशंसा कएन जेह कम हेत । सब चीज उतम ।

३८. श्रीमती प्राफेसर् रीणा ठाकुर- ककश्लेष्टम् अतर्मनिक
उतम, पठनीय, रिचावनीय । जे का देखेत छथि



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मानक बिदेह बिदेह ISSN 2229-

547X VIDEHA

पौथी प्राप्ति कबरीक उपाय प्रदेत छथि ।

शुभकामना ।

३९.श्री छत्रानन्द सिंह ना- ककश्वेतम् अंतर्मनक पठनहुँ, रँडु नीक सब तबहै ।

४०.श्री तावाकान्त ना- सम्पादक मैथिली दैनिक मिथिला समाद- बिदेह तँ कन्ठेन्ठ प्रागडवक काज क२ बहन छडि । ककश्वेतम् अंतर्मनक अड्डत नागर ।

४१.डा बरीन्द्र कमार चौधरी- ककश्वेतम् अंतर्मनक रँडुत नीक, रँडुत मेहनतिक पबिषाम । रँडाग ।

४२.श्री अमवनाथ- ककश्वेतम् अंतर्मनक आ बिदेह दुनु स्वरणीय घटना छडि, मैथिली साहित्य मध्य ।

४३.श्री पंचानन मिश्र- बिदेहक रैरिषा आ निबन्धबता प्रभावित करैत छडि, शुभकामना ।

४४.श्री केदाव कानन- ककश्वेतम् अंतर्मनक नेन अनेक पन्थराद, शुभकामना आ रँडाग स्वीकार करी । आ नटिकेतक भूमिका पठनहुँ । शुक्रमे तँ नागर जेना कोनो उपन्यास अहाँ द्वारा सृजित भेल छडि मूदा पौथी उनैपौना पब त्रात भेल जे एहिमे तँ सब रिषा समाहित छडि ।



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मासिक चक्रवर्तमान ISSN 2229-547X

VIDEHA

४३. श्री धनाकर ठाकुर- अहाँ नीक काज कइ बहल
छी । होष्टे गौतमीमे छि एहि शिताईक जन्मतिथि
अनुसार बहल तइ नीक ।

४३. श्री आशीष आ- अहाँक प्रस्तुतक सर्पधमे एतरो
निखरो सँ अपना कए नहि बोकि सकलहुँ जे ए
कितारो मात्र कितारो नहि थीक, ए एकठाँ उन्मीद छी
जे मैथिली अहाँ सन प्रत्येक सेरो सँ निरंतर समृद्ध
होगत चिबजोरन कए प्राप्त कबत ।

४१. श्री शिबू कुमार सिंह- रिदेहक तपेवता आ
फियारीनता देखि आल्लादित भइ बहल छी ।
निश्चितकपेण कहल जा सकैछ जे समकालीन मैथिली
पत्रिकाक अतिहासमे रिदेहक नाम स्थापितमे निखर
जाएत । ओहि ककम्पेक घटना सब तँ अठारह
दिनमे खतम भइ गेल बहए ह्रदा अहाँक ककम्पेक
तँ अशेष अछि ।

४५. डा. अजित मिश्र- अपनक प्रयासक कतरौ प्रशंसा
कएल जाय कमे होएतैक । मैथिली साहित्यमे अहाँ
द्वारा कएल गेल काज हाग-हागानुब पबि पूजनीय
बहल ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

547X VIDEHA

मानकीय संख्या ISSN 2229-

४६. श्री रीरेन्द्र मल्लिक- अहाँक ककश्वेदम् अन्तर्मनक
आ रिदेहःसदेह पठि अति प्रसन्नता भेल । अहाँक
स्नाह्य ठीक बहए आ उमोह रैनन बहए से कामना ।

४७. श्री क्रमाव बापावमण- अहाँक दिशा-निर्देशिमे रिदेह
पहिन मैथिली ग-जर्नन देखि अति प्रसन्नता भेल ।
हमब शुभकामना ।

४८. श्री कुलचन्द्र ना प्ररी- रिदेहःसदेह पठने बही
झुदा ककश्वेदम् अन्तर्मनक देखि रैद १३ देरौ जेन
रौपा भ२ गेलहुँ । आरि रिग्रास भ२ गेल जे मैथिली
नहि मबत । अशेष शुभकामना ।

४९. श्री रिभूति आनन्द- रिदेहःसदेह देखि, ओकर
रिस्तार देखि अति प्रसन्नता भेल ।

५०. श्री मानेश्वर मनुज- ककश्वेदम् अन्तर्मनक एकब
भरता देखि अति प्रसन्नता भेल, एतेक रिशीन त्रुण
मैथिलीमे आग धवि नहि देखने बही । एहिना
भरिषामे काज करैत बही, शुभकामना ।

५१. श्री रिद्यानन्द ना- आग.आग.एम.कोतकाता-
ककश्वेदम् अन्तर्मनक रिस्तार, दुपाङ्कक सर्ग गुणरता
देखि अति प्रसन्नता भेल । अहाँक अनेक धन्यवाद,
कतेक रैबखस हम नेयारैत छुनहुँ जे सभ पैघ



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मासिक बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

शिवबेमे मैथिली नागब्रैवीक स्थापना होअए, अहाँ ओकरा
रेखैपब क२ बहल छी, अनेक धन्यवाद ।

३.३.श्री अवरिन्द ठाकुर- *कुकुल्लेदम् अन्तर्मुख* मैथिली
साहित्यमे कएल गेल एहि तबहक पहिल प्रयोग अछि,
शुभकामना ।

३.३.श्री कुमार परन- *कुकुल्लेदम् अन्तर्मुख* पठि बहल
छी । किछ नम्रकथा पठल अछि, रूत मार्मिक छल ।

३.१. श्री प्रदीप रिहायी- *कुकुल्लेदम् अन्तर्मुख* देखल,
रूपाङ्गा ।

३.४.डा मणिकान्त ठाकुर-कैलिफोर्निया- अपन विरक्त
नियमित सेरासँ हमरा लोकनिक हृदयमे बिदेह सदेह
भ२ गेल अछि ।

३.६.श्री धीरेन्द्र प्रेमर्षि- अहाँक समस्त प्रयास
सबान्वीय । दूध होअत अछि जखन अहाँक प्रयासमे
अपेक्षित सहयोग नहि क२ परैत छी ।

३०.श्री देवशेखर नरैन- बिदेहक निबन्धनता आ रिशाल
स्वरूप- रिशाल पाठक रक्षा, एकटा ऐतिहासिक रैनरैत
अछि ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मानकीकृत संस्कृतम् ISSN 2229-

547X VIDEHA

३१. श्री मोहन भावद्वारा- अर्थात् समस्त कार्य देखन, रूत नीक । एहन किछ परेशानीमे छी, झुदा शीघ्र सहयोग देरै ।

३२. श्री बजरब बहमान हाशेमी- ककम्पेदम् अन्तर्मुख मे एतेक मेहनतक लेन अहाँ साधुवादक अधिकारी छी ।

३३. श्री नरेश्वर ना "सागव"- मैथिलीमे चमकोविक कर्पे अर्थात् प्रवेशे आह्लादकारी अछि । ..अर्थात् एहन आव..दुव..रूत दुवधवि जेरौक अछि । स्वस्थ आ प्रसन्न बही ।

३४. श्री जगदीश प्रसाद मंडल- ककम्पेदम् अन्तर्मुख पठनहुँ । कथा सभ आ उपन्यास सहस्ररौठनि पूर्णकपे पठि गेल छी । गाम-घबक भौगोलिक विवरणक जे सूक्ष्म वर्णन सहस्ररौठनिमे अछि, से चकित कएलक, एहि संग्रहक कथा-उपन्यास मैथिली लेखनमे विविधता अनलक अछि । समालोचना शास्त्रमे अर्थात् दृष्टि, वैयक्तिक नहि रबन् सामाजिक आ कल्याणकारी अछि, से प्रशंसनीय ।

३५. श्री अशोक ना-अध्यात्म मिथिला विकास परिषद- ककम्पेदम् अन्तर्मुख लेन रंभागा आ आगाँ लेन शुभकामना ।



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

३३.श्री ठाकुर प्रसाद झा- अद्भुत प्रयास । धन्यवादक
संग प्रार्थना जे अपन माँ-पानिके ध्यानमे बाथि
अंकक समायोजन कएल जाए । नर अंक धरि प्रयास
सबान्नीय । बिदेहकेँ रूत-रूत धन्यवाद जे एहेन
सुन्दर-सुन्दर सचर (आलेख) रगा बहल छथि ।
सन्तुष्टी ग्रहणीय- पठनीय ।

३१.बुद्धिनाथ मिश्र- प्रिय गजेन्द्र जी,अहाँक सम्पादन
मे प्रकाशित 'बिदेह'आ 'रुक्मिणी' अंतर्मनक
रिक्मिणी पत्रिका आ रिक्मिणी पोथी । की नहि अछि
अहाँक सम्पादनमे ? एहि प्रयत्न सँ मैथिली क विकास
होयत,निश्चयमे ।

३५.श्री रूथेनी चन्द्र नाथ- गजेन्द्रजी, अपनके पुस्तक
रुक्मिणी अंतर्मनक पठि मोन गदगद भय गेल ,
हृदयसँ अनुगृहीत छी । हार्दिक शुभकामना ।

३६.श्री पद्मेश्वर कापडि - श्री गजेन्द्र जी ।
रुक्मिणी अंतर्मनक पठि गदगद आ नेहा भेलहूँ ।

१०.श्री वरीन्द्रनाथ ठाकुर- बिदेह पढैत बहल छी ।
धीरेन्द्र प्रेमर्षिक मैथिली गजपत्र आलेख पढलहूँ ।
मैथिली गजपत्र कबहुँ सँ कबहुँ चलि गेलैक आ ओ
अपन आलेखमे मात्र अपन ज्ञान-पहिचान लोकक
चर्च कएने छथि । जेना मैथिलीमे मठक परम्परा



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

547X VIDEHA

मानुषीह संस्कृतम् ISSN 2229-

बहन अछि । (स्पर्शकवण- श्रीमान्, प्रेमर्षि जी ओहि
आनेथमे ई स्पर्श निखने छथि जे किनको नाम जे
छट्टि गेल छन्हि तँ से मात्र आनेथक लेखकक
जानकारी नहि बहराक द्वारे, एहिमे आन कोनो कावण
नहि देखल जाय । अहाँसँ एहि रिषयपर रिस्तृत
आनेथ सादर आमन्त्रित अछि । -सम्पादक)

११. श्री मन्त्रेश्वर ना- बिदेह पठन आ सर्गहि अहाँक
मैगनम ओपस *रुक्मिणीम् अर्तमनिक* सेहो, अति
उत्तम । मैथिलीक लेख कएल जा बहन अहाँक समस्त
कार्य अतुलनीय अछि ।

१२. श्री हरेप्रसाद ना- *रुक्मिणीम् अर्तमनिक* मैथिलीमे
अपन तबहक एकमात्र ग्रन्थ अछि, एहिमे लेखक
समग्र दृष्टि आ बचना कौशल देखराँमे आएल जे
लेखकक हार्डवर्कसँ जुडल बहराक कावसँ अछि ।

१३. श्री सुकान्त सोम- *रुक्मिणीम् अर्तमनिक* मे
समाजक अतिहास आ रतिमानसँ अहाँक जुड़ १२ रँड
नीक लागल, अहाँ एहि स्केचमे आव आगाँ काज कवर
से आशी अछि ।

१४. प्राफेसर मदन मिश्र- *रुक्मिणीम् अर्तमनिक* सन
कितार मैथिलीमे पहिले अछि आ एतेक रिशाल



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मासिक बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

संग्रहपत्र शोध कएत जा सकैत अछि । भविष्यक लेल
शुभकामना ।

१३. प्राप्ति कएत जा सकैत अछि- मैथिलीमे *रुक्मिणी*
अतिसुन्दर सन पोथी आरए जे ग्रन्थ आ कप दुनूमे
निम्न होअए, से रचित दिनसँ आकाङ्क्षा छल, ओ आर
जा क२ पूर्ण भेल । पोथी एक हाथसँ दोसर हाथ
घुमि बहल अछि, एहिना आगाँ सेहो अहाँसँ आशा
अछि ।

१३. श्री उदय चन्द्र ना "रिनोद": गजेन्द्रजी, अहाँ
जतेक काज कएतहुँ अछि से मैथिलीमे आग धरि
कियो नहि कएने छल । शुभकामना । अहाँकै एखन
रचित काज आव कबराक अछि ।

११. श्री कृष्ण कुमार कश्यप: गजेन्द्र ठाकुरजी, अहाँसँ
भेटै एकठ्ठा स्वीकृत्य स्फूर्ति रनि गेल । अहाँ जतेक
काज एहि रसमे क२ गेल छी ताहिसें हजार ग्रन्थ
आव रैशीक आशा अछि ।

१४. श्री मणिकान्त दास: अहाँक मैथिलीक कार्यक प्रशंसा
लेल शिष्ट, नहि भेटैत अछि । अहाँक *रुक्मिणी*
अतिसुन्दर सम्पूर्ण कए पठि गेलहुँ । ब्रह्मचर्य रहु
नीक लागल ।



२०१२ (वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१,
547X VIDEHA

मानकीकृत संस्कृतम् ISSN 2229-

१६. श्री हीरेन्द्र कुमार सा- बिदेह ई-पत्रिकाक
सब अंक ई-पत्रसँ भेटैत बढत अछि । मैथिलीक
ई-पत्रिका छेक एहि रीतक गरि होगत अछि । अहाँ
आ अहाँक सब सहयोगीकेँ हार्दिक शुभकामना ।

बिदेह



मैथिली साहित् आन्दोलन

(c)२००४-१२. संपादिकाव लेखकाधीन आ जतए लेखकक
नाम नहि अछि ततए संपादकाधीन । बिदेह- प्रथम
मैथिली पार्षिक ई-पत्रिका । ISSN 2229-547X
VI DEHA संपादक: गजेन्द्र ठाकुर । सह-संपादक:
उमेश मंडल । सहायक संपादक: शिर कुमार सा आ
मृगजती (मनोज कुमार कर्ण) । भाषा-संपादन:
नागेन्द्र कुमार सा आ पञ्जीकाव रिद्वानन्द सा ।
कला-संपादन: रनीता कुमारी आ बन्नि बेरा सिन्हा ।
संपादक-शोध-अनुसंधान: डा. जया रम्या आ डा. बाजरीर



(वर्ष ५ मास ५१ अंक १०१)

मासिक बिदेह *ISSN 2229-547X*

VIDEHA

क्याव बर्या । सम्पादक- नाटक-बर्गमच-चवचित्र-
रेचन ठाकुर । सम्पादक- सूचना-सम्पर्क-समाद- पुनम
मडव आ प्रियका मा । सम्पादक- अनुवाद रिभाग-
रिनीत डपेव ।

बचनाकाव अपन मौलिक आ अप्रकाशित बचना (जकर
मौलिकताक संपूर्ण उद्भवदायिन्न लेखक गणक मध्य छन्हि)
ggaj_endra@videha.com केँ मेर अटैचमेण्टक
कपमे .doc, .docx, .rtf आ .txt फॉर्मेटमे
पठा सकैत छथि । बचनाक संग बचनाकाव अपन
संक्षिप्त परिचय आ अपन स्कैन कएल गेल फोटो
पठेताह, से आशिा करैत छी । बचनाक अंतमे
ठागप बहय, जे आ बचना मौलिक अछि, आ पहिल
प्रकाशिनक हेतु बिदेह (पाश्चिक) आ पत्रिकाकेँ देल
जा बहल अछि । मेर प्राप्त होयराक बाद यथासंभव
शीघ्र (सात दिनक भीतर) एकव प्रकाशिनक अंकक
सूचना देल जायत । 'बिदेह' प्रथम मैथिली पाश्चिक
आ पत्रिका अछि आ एहिमे मैथिली, संस्कृत आ
अंग्रेजीमे मिथिला आ मैथिलीसँ संबंधित बचना
प्रकाशित कएल जायत अछि । एहि आ पत्रिकाकेँ
शीमति नक्का ठाकुर द्वारा मासक ०१ आ १३ तिथिकेँ
आ प्रकाशित कएल जायत अछि ।



(c) 2004-12 सराधिकार स्वस्मित । बिदेहमे
प्रकाशित सभ्ठा वचना आ आकाशिक सराधिकार
वचनाकार आ संग्रहकर्ताक लगमे छन्हि । वचनाक
खनुराद आ पुनः प्रकाशिन किंरा आकाशिक उपयोगक
अधिकार किनराक हेतु
ggajendra@videha.co.in पर संपर्क करू ।
एहि सागठकेँ प्रति न्या ठाकुर, मधुनिका चौधरी आ
बन्नि प्रिया द्वारा डिजाइन कएल गेल ।



सिंहबन्धु

